वैशाख - २

# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष ३२, अङ्क २ | २०८० वैशाख १६-३१ | पूर्णाङ्क ७४०

प्रकाशक

## सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७१२, ४२००७२९, ४२००७५०, Ext.२२६९ (सम्पादक), २२७० (सम्पादन शाखा), २१७० (छापाखाना), २२७४ (बिक्री)

टोल फ्री : १६६०-०१-३३३५५, फ्याक्स: ४२००७४९, पो.ब.नं.२०४३८

Email: info@supremecourt.gov.np, admin@supremecourt.gov.np / Web: www.supremecourt.gov.np

**सम्पादन तथा प्रकाशन समिति**

| | |
|---|---|
| **माननीय न्यायाधीश श्री टंकबहादुर मोक्तान, सर्वोच्च अदालत** | **- अध्यक्ष** |
| **माननीय न्यायाधीश श्री हरिप्रसाद फुयाल, सर्वोच्च अदालत** | **- सदस्य** |
| **मुख्य रजिस्ट्रार श्री लालबहादुर कुँवर, सर्वोच्च अदालत** | **- सदस्य** |
| **नायब महान्यायाधिवक्ता श्री पदमप्रसाद पाण्डेय, प्रतिनिधि, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय** | **- सदस्य** |
| **रजिस्ट्रार श्री निर्मला पौडेल, सर्वोच्च अदालत** | **- सदस्य** |
| **अधिवक्ता श्री सुरज खत्री, उपाध्यक्ष, नेपाल बार एसोसिएसन** | **- सदस्य** |
| **वरिष्ठ अधिवक्ता श्री हरिशंकर निरौला, अध्यक्ष, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन** | **- सदस्य** |
| **डा.कृष्णप्रसाद बस्याल, डिन, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय** | **- सदस्य** |
| **सहरजिस्ट्रार श्री हरिराज कार्की, सर्वोच्च अदालत** | **- सदस्य सचिव** |

**सम्पादक :** श्री नगेन्द्रकेशरी पोखरेल

**सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत् कर्मचारीहरू**

शाखा अधिकृत श्री दिपक पोखरेल
शाखा अधिकृत श्री योमा मुलपती
शाखा अधिकृत श्री नरेश कार्की
नायब सुब्बा श्री सन्तोष घिमिरे
नायब सुब्बा श्री रेखा दाहाल
सिनियर प्रुफरिडर श्री रेशम शर्मा
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी
कम्प्युटर अपरेटर श्री मञ्जु खडका
कार्यालय सहयोगी श्री अच्युत दाहाल

**भाषाविद् :** श्री रामचन्द्र फुयाल

**बिक्री शाखा**

नायब सुब्बा श्री पुष्पा पराजुली

**मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू**

मुद्रण अधिकृत श्री कान्छा श्रेष्ठ
मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी
सिनियर कम्पोजिटर श्री श्यामकृष्ण प्रजापति
सिनियर प्रेसम्यान श्री सविता पोखरेल
सिनियर प्लेटमेकर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने
सिनियर बुकबाइन्डर श्री तारा वाग्ले
सिनियर कार्टोग्राफर श्री विपिन अधिकारी
बुकबाइन्डर श्री सरिता चक्रधर
बुकबाइन्डर श्री सुमन राजथला
बुकबाइन्डर श्री मदन तिमिल्सिना
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी
कार्यालय सहयोगी श्री धनमाया नगरकोटी

**विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू**

| | | | |
|---|---|---|---|
| पूर्ण इजलास | २ | इजलास नं. ८ | २ |
| इजलास नं. १ | १३ | इजलास नं. १० | ८ |
| इजलास नं. २ | ६ | इजलास नं. ११ | ३ |
| इजलास नं. ४ | १५ | इजलास नं. १२ | १ |
| इजलास नं. ५ | १० | एकल इजलास | ५ |
| इजलास नं. ६ | ४ | | |
| **जम्मा** | **५०** | **जम्मा** | **१९** |

**कूल जम्मा ५० + १९ = ६९**

# नेपाल कानून पत्रिकामा

प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि हालसम्म)

हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

# www.nkp.gov.np

मा जानुहोला ।

**खोज्ने तरिका**

सर्वप्रथम **www.nkp.gov.np** लगइन गरेपश्चात् देखिने पृष्ठमा **शब्दबाट** भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गरी हरियो बटनमा रहेको खोज्नुहोस् भन्ने बटनलाई थिची खोजी गर्न सक्नुहुनेछ । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा मुद्दाको किसिम, मुद्दाको नाम एवं निर्णय नं. तथा ने.का.प. विवरणमा रहेका विविध शीर्षकबाट आफूले चाहेअनुसार फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त **नेकाप प्रत्येक वर्ष** र **हाम्रो बारेमा** समेतबाट हेर्न सक्नुहुनेछ ।

**यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्ने छः**

**सअ बुलेटिन, २०८..., ... .... – १ वा २, पृष्ठ ....**

**(साल) (महिना)**

**उदाहरणार्थः सअ बुलेटिन, २०८०, वैशाख – २, पृष्ठ १**

**का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०**

# सूचना

**"<u>नेपाल कानून पत्रिका र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन</u>"** को **"<u>वार्षिक ग्राहक</u>"** बन्न चाहनेका लागि **<u>२०७६ वैशाख अङ्क</u>**देखि वार्षिक ग्राहक बन्न पाउने गरी सम्पादन तथा प्रकाशन समितिले निर्णय गरेको हुँदा सम्बन्धित सबैको जानकारीका लागि यो सूचना प्रकाशन गरिएको छ।

समितिको निर्णयानुसार मूल्य समायोजन भई **<u>नेपाल कानून पत्रिका रू.७५</u>** र **<u>सर्वोच्च अदालत बुलेटिन प्रति अङ्क रू.४०</u>** कायम गरिएकोसमेत सबैलाई जानकारी गराइन्छ।

---

**मूल्य रू.४०।–**

**मुद्रकः सर्वोच्च अदालत, छापाखाना**

# विषयसूची


| क्र.सं. | विषय | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| **पूर्ण इजलास** | | | **१ - ३** |
| १. | जबरजस्ती करणी | रमेश न्यौपाने वि. नेपाल सरकार | १ |
| २. | लागु औषध (ब्राउन सुगर) | रमेश गोलेसमेत वि. नेपाल सरकार | १ |
| **इजलास नं.१** | | | **३ - १३** |
| ३. | जबरजस्ती करणी | पदमनाथ दाहाल वि. नेपाल सरकार | ३ |
| ४. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. सोमान सिं गुरूङ | ४ |
| ५. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. राजेन्द्र लामा मोक्तान | ५ |
| ६. | लेनदेन | लालबहादुर वली वि. चित्रबहादुर खत्री | ६ |
| ७. | सन्धि सर्पन दर्ता गरी खिचौला मेटाई चलन चलाइपाऊँ | बलबहादुर बस्नेत वि. पदमबहादुर कटुवाल | ७ |
| ८. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. अर्जुन परियार | ८ |
| ९. | जबरजस्ती करणी उद्योग | नेपाल सरकार वि. बुद्धिलाल मोक्तान | ८ |
| १०. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. प्रितम तितुङ्ग | ९ |
| ११. | नामसारी निर्णय राजीनामा, लिखत बदर गरी जग दिवाल भत्काई खिचोला मेटाई चलन चलाइपाऊँ | धनिराम नाउँसमेत वि. रामकिसुन यादव | ९ |
| १२. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. लेखनाथ भण्डारी | १० |
| १३. | खोटाचलन | नेपाल सरकार वि. राहुल राय थारूसमेत | ११ |
| १४. | लागु औषध | नेपाल सरकार वि. केशु ढुंगाना | १२ |
| १५. | उत्प्रेषण | बैद्यनाथ ठाकुर वि. निजामती किताबखाना, हरिहरभवन, काठमाडौंसमेत | १३ |
| **इजलास नं. २** | | | **१३ – १९** |
| १६. | फैसला बदर | सुरेश महाजुसमेत वि. जगदिश महाजुसमेत | १३ |
| १७. | घर भत्काई | शुरेश सिंह वि. राम चरित्तर महतो | १४ |
| १८. | अंशसहित सम्बन्ध विच्छेद | भास्कर सिंह कार्की वि. प्राची रायमाझी कार्की | १४ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १९. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. अलिराज मिया पवरियासमेत | १५ |
| २०. | मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार | शोभा सापकोटा अधिकारी वि. नेपाल सरकार | १६ |
| २१. | करारको यथावत परिपालना गराइपाऊँ | सिर्जना श्रेष्ठ (भण्डारी) वि. रेश्मा श्रेष्ठ | १८ |
| **इजलास नं. ४** | | | १९ – ३८ |
| २२. | घर जग्गा खिचोला चलन | दुर्वल तिवारसमेत वि. रामचन्द्र साह तेली | १९ |
| २३. | ज्यान मार्ने उद्योग | नेपाल सरकार वि. बलबहादुर शाही | २१ |
| २४. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | गुरू भन्ने सन्तोष कटुवाल वि. मोरङ जिल्ला अदालतसमेत | २१ |
| २५. | कर्तव्य ज्यान | बज्रसिंह लामा तामाङसमेत वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. कुमार लामा | २३ |
| २६. | निर्णय बदर दर्ता कायम हक कायम | ईन्द्रबहादुर गुरूङ वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत | २५ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| २७. | उत्प्रेषण, परमादेशसमेत | रक्षाराम हरिजन (चमार) वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत | २६ |
| २८. | अंश अपुताली | रामकृष्ण चौधरी वि. सरिता कुमारी चौधरी | २७ |
| २९. | लागु औषध | मुक्ति शाही भन्ने मुक्तिबहादुर शाही वि. नेपाल सरकार | २८ |
| ३०. | जालसाज | चिन्कनुवा भन्ने चनकलाल डगौरा थारू वि. ज्ञानुलाल डगौरासमेत | ३१ |
| ३१. | सार्वजनिक जग्गाबाट घर उठाई जग्गा सार्वजनिक राखिपाऊँ | गौरी नारायण सिंहसमेत वि. चन्द्र नारायण सिंह | ३१ |
| ३२. | लुटपिट | सुबदार महतो कहार वि. शर्मानन्द प्रसाद यादवसमेत | ३२ |
| ३३. | कर्तव्य ज्यान | रामबहादुर भण्डारी वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. रामबहादुर भण्डारी | ३३ |
| ३४. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | श्रवण चौधरीको हकमा विष्णु कुमारी चौधरी वि. उच्च अदालत दिपायल डोटी | ३५ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३५. | भ्रष्टाचार (रिसवत / घुस) | लेखनाथ पौडेल वि. नेपाल सरकार | ३६ |
| ३६. | भ्रष्टाचार (रिसवत / घुस) | नेपाल सरकार वि. मोहन सुवेदीसमेत, हर्कबहादुर राई वि. नेपाल सरकार | ३७ |
| **इजलास नं. ५** | | | **३८ – ४६** |
| ३७. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | लालबहादुर बि. सी. को हकमा सुदिप ढकाल वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय, चितवनसमेत | ३८ |
| ३८. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | हरिशरण महतको हकमा कुस्मी विष्ट वि. काठमाडौं जिल्ला अदालतसमेत | ३९ |
| ३९. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेशको आदेश जारी गरिपाऊँ | उमेशप्रसाद साहसमेत वि. अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोगसमेत | ४० |
| ४०. | जबरजस्ती करणी | गुरूप्रसाद आचार्य वि. नेपाल सरकार | ४० |
| ४१. | वैदेशिक रोजगार ठगी | नेपाल सरकार वि. राजेश लामासमेत | ४१ |
| ४२. | कर्तव्य ज्यान / चोरी | सञ्जय थापा वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. शुभम दमाई | ४२ |
| ४३. | ठगी | नेपाल सरकार वि. सुरज दाहालसमेत | ४३ |
| ४४. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | भोलानाथ पौडेलसमेत वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय, बबरमहलसमेत | ४३ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४५. | घर भत्काई जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाइपाऊँ | डोलेन्द्रराज शर्मा वि. भुमिराज शर्मा | ४४ |
| ४६. | लागु औषध (ब्राउन सुगर) | नेपाल सरकार वि. कमल घिमिरेसमेत | ४५ |
| **इजलास नं.६** | | | **४६ – ५०** |
| ४७. | उत्प्रेषण | रूकमिणी बर्तौला वि. नेपाल सरकार, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार, काठमाडौं | ४६ |
| ४८. | घुस रिसवत | नेपाल सरकार वि. अशोककुमार सिंह | ४७ |
| ४९. | घुस भ्रष्टाचार | नेपाल सरकार वि. श्यामकिशोर भगत | ४८ |
| ५०. | घुस रिसवत | नेपाल सरकार वि. प्रभु गिरीसमेत | ४९ |
| **इजलास नं.८** | | | **५० – ५३** |
| ५१. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | कविता लुइटेल वि. गोरखा जिल्ला अदालतसमेत | ५० |
| ५२. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | लक्ष्मण पौडेल वि. जिल्ला बागलुङ, नगरपालिकाको कार्यालय, बागलुङसमेत | ५१ |
| **इजलास नं.१०** | | | **५३ – ६२** |
| ५३. | उत्प्रेषणसमेत | मोहन चन्द्र सिंहसमेत वि. नेपाल सरकार, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत | ५३ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५४. | वन्यजन्तु चितुवाको (छाला) र कस्तुरीको बिना (ओखेटोपहार) ओसारपसार | नेपाल सरकार वि. देवे बोहरा | ५३ |
| ५५. | कुटपिट, अङ्गभङ्ग | रिजवान रजानूरीसमेत वि. नेपाल सरकार | ५४ |
| ५६. | ठगी | नेपाल सरकार वि. नन्दकिशोर कलवार | ५६ |
| ५७. | मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार | नेपाल सरकार वि. लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठसमेत | ५७ |
| ५८. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | कल्पना माझी चौधरीको हकमा मनोजकुमार चौधरी वि. शान्ता निरौलासमेत | ५९ |
| ५९. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसमेत | टंकलाल कायस्थ वि. महानगरीय प्रहरी वृत्त, अपराध अनुसन्धान तथा कारबाही शाखा महाराजगञ्ज, काठमाडौं | ६० |
| ६०. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | उदितकुमार ठाकुरसमेत वि. लोकसेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालय, अनामनगर, काठमाडौंसमेत | ६० |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **इजलास नं.११** | | | ६२ – ६३ |
| ६१. | उत्प्रेषण | पवनकुमार श्रेष्ठ वि. सशस्त्र प्रहरी बल प्रधान कार्यालय, स्वयम्भु हलचोक, काठमाडौंसमेत | ६२ |
| ६२. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | अम्बिका थापा वि. महानगरीय प्रहरी वृत्त, कालिमाटी, काठमाडौंसमेत | ६२ |
| ६३. | अंश चलन | हरिकुमार राई वि. सरस्वती राई | ६३ |
| **इजलास नं.१२** | | | ६३ – ६४ |
| ६४. | निर्णय दर्ता बदर दर्ता | सुभाषसिं तामाङ वि. रूपादेवी श्रेष्ठ | ६३ |
| **एकल इजलास** | | | ६४ – ६८ |
| ६५. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | डम्बरबहादुर पाल वि. दार्चुला जिल्ला अदालतसमेत | ६४ |
| ६६. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | विजयशंकरप्रसाद साहसमेत वि. उच्च अदालत पाटनसमेत | ६५ |
| ६७. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | Cuojiezhuoma को हकमा सविना तुलाधार वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत | ६६ |
| ६८. | परमादेश | उमेश बानिया वि. न्याय परिषद्समेत | ६७ |
| ६९. | उत्प्रेषण / परमादेश | रामसेवक महतो सुडी वि. उच्च अदालत जनकपुरसमेत | ६७ |

## पूर्ण इजलास

**१**

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७७-CF-०००२, जबरजस्ती करणी, रमेश न्यौपाने वि. नेपाल सरकार*

फौजदारी मुद्दामा अभियुक्तउपरको आरोपित कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादी पक्षको हुने भन्ने कानूनी व्यवस्था प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा रहेको छ । उक्त कानूनी व्यवस्थाअनुसार वादी पक्षले अभियुक्तउपरको कसुर शंकारहित तवरबाट पुष्टि गर्नुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा जाहेरवाली पी मायाले यी प्रतिवादीले आफूलाई जबरजस्ती करणी गरेको भनी किटानी जाहेरी दिई सो अनुरूप अदालतमा आई बकपत्र गरेकोसम्म देखिए पनि सोबाहेक मिसिल संलग्न अन्य कुनै पनि कागज प्रमाणबाट प्रतिवादीउपरको आरोपित कसुर वस्तुनिष्ठरूपले समर्थित हुन आएको देखिँदैन । पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा Hymen Torn-Old Healed (No Recent Injuries) भनी उल्लेख भएको देखिएको र शरीरमा अन्य कुनै घाउचोट रहे भएको देखिँदैन । यसरी प्रतिवादीले वारदात भएको भनिएको मितिमा आफू अन्यत्र रहेको भनी लिएको जिकिर प्रमाणित गराउन सकेको नदेखिए पनि निजले आरोपित कसुरमा इन्कारी बयान गरेको, जबरजस्ती करणी भएको भनिएको मितिभन्दा ४ दिनपछि भएको पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा Hymen Torn-Old Healed (No Recent Injuries) भनी उल्लेख भएको र पीडितको शरीरमा कुनै चोट पटक लागेको वा सङ्घर्षका चिह्नहरू रहे भएको नदेखिएको अवस्थामा केवल जाहेरी दरखास्त र जाहेरवालीले अदालतमा गरेको बकपत्रलाई मात्र कसुर प्रमाणित गर्ने यथेष्ठ प्रमाणको रूपमा लिन सकिने अवस्था हुँदैन । जाहेरी दरखास्तका साथै अन्य स्वतन्त्र प्रमाणहरूबाट समेत प्रतिवादीउपरको आरोप तथ्यपरक ढङ्गले पुष्टि भएको हुनुपर्नेमा वादी पक्षबाट प्रतिवादीउपरको आरोपित कसुर तथ्यपरक र वस्तुनिष्ठ रूपमा प्रमाणित हुन सकेको नदेखिँदा केवल पीडित जाहेरवालीको कथनलाई मात्र आधार मानी प्रतिवादीलाई कसुरदार ठहऱ्याउनु न्यायोचित हुने नदेखिने ।

तसर्थ, प्रतिवादीउपरको कसुर तथ्यपरक रूपमा प्रमाणित हुन नसकेको अवस्थामा पुनरावेदक/प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिनुपर्नेमा कसुरदार ठहऱ्याई जबरजस्ती करणीको ३(३) नं. बमोजिम ८ वर्ष कैद हुने र पीडितले प्रतिवादीबाट रू. १,००,०००।- क्षतिपूर्तिसमेत भराइपाउने गरी भएको सुरू सुनसरी जिल्ला अदालतको मिति २०७३/२/१३ को फैसला केही उल्टी गरी निज प्रतिवादीलाई ऐजन महलको ३(४) नं. बमोजिम ६ वर्ष कैद हुने तथा पीडितले प्रतिवादीबाट रू.२५,०००।- क्षतिपूर्ति भराइपाउने ठहऱ्याएको उच्च अदालत विराटनगरको मिति २०७३।९।३ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई पुनरावेदक प्रतिवादी रमेश न्यौपानेले अभियोग मागदाबीबाट सफाइ पाउने ठहर गरेको यस अदालतको संयुक्त इजलासका माननीय न्यायाधीश श्री दीपक कुमार कार्कीको राय कानूनसम्मत मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ र प्रतिवादी रमेश न्यौपानेले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद खनाल

इति संवत् २०७९ साल असार ९ गते रोज ५ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७७-CF-०००६, लागु औषध (ब्राउन सुगर), रमेश गोलेसमेत वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादीमध्येका रमेश गोलेको साथबाट

निजले ल्याएको ३५ ग्राम लागु औषध बरामद भएको तर यी प्रतिवादी विष्णुगोपाल श्रेष्ठसँग वा निजको घर वा कारोबार स्थलबाट कुनै प्रकारको लागु औषध बरामद भएको पनि देखिँदैन । प्रतिवादी रमेश गोलेले विष्णुगोपाल श्रेष्ठलाई बिक्री गर्ने भनी मौकामा बयान गर्दा खुलाएको र निज विष्णुगोपाल श्रेष्ठसम्म नपुग्दैबिच बाटोबाटै पक्राउ परेको देखिँदा प्रतिवादी विष्णुगोपाल श्रेष्ठलाई कुनै पनि परिमाण बिक्री गरिसकेको अवस्था देखिँदैन । "आ-आफूले बोकेकोअर्थात् आफूबाट बरामद भएको लागु औषधसम्मको दायित्व बहन गर्नुपर्ने । सबैबाट बरामद भएको परिमाणलाई एकै ठाउँमा गाभेर सजाय गर्नु न्यायोचित र कानूनको मर्मअनुरूप हुँदैन । तसर्थ जो जसबाट जति बरामद भएको हो सोही परिमाणको आधारमा सजाय हुने" भनी ने.का.प. २०६८, अङ्क १२, नि. नं. ८७४३ मा सिद्धान्त प्रतिपादन भइरहेको सन्दर्भमा निज प्रतिवादीको सँगसाथबाट लागु औषध बरामद नभएको र सह-अभियुक्तको पोललाई समर्थन गर्ने अन्य स्वतन्त्र प्रमाणको अभावमा त्यस्तो पोलको आधारमा मात्र समान स्तरको कसुरदार ठहर गर्नु फौजदारी न्यायको सिद्धान्तको दृष्टिकोणबाट समेत मिल्ने देखिँदैन । रमेश गोलेको साथबाट बरामद भएको उक्त ३५ ग्राम लागु औषध खरिद गर्ने, ओसारपसार गर्ने, सञ्चय गर्ने, बिक्री गर्नेलगायतका कार्यमा यी प्रतिवादी विष्णुगोपाल श्रेष्ठको प्रत्यक्ष संलग्नता रहेको भन्ने अभियोग दाबी पुष्टि हुन आएको नदेखिने ।

अर्का प्रतिवादी रमेश गोलेले प्रतिवादी विष्णुगोपाल श्रेष्ठलाई लागु औषध बिक्री गर्ने भनी बयान गरेको भए पनि निजले लागु औषध खरिद वा कारोबार गरेको पुष्टि हुन सकेको देखिँदैन । खरिद बिक्री वा कारोबार नै गरेको नभएपनि यी दुईबिचको सम्बन्धलाई पनि विश्लेषण गर्नु आवश्यक छ । अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष सह-अभियुक्त रमेश गोलेले प्रतिवादी विष्णुगोपाल श्रेष्ठलाई बिक्री गर्ने भनी बयान गरेको र निज प्रतिवादीहरूका बिचमा पटक पटक फोन संवाद भएकोसमेत देखिन्छ । लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १७ मा "यस ऐनअन्तर्गत सजाय हुने अपराध गर्ने, षड्यन्त्र वा उद्योग गर्ने, त्यस्तो अपराध गर्न अरूलाई दुरूत्साहन गर्ने वा त्यस्तो अपराध गर्नमा मतियार हुने व्यक्तिलाई सोही अपराध गरेबापत हुने सजायको आधी सजाय हुने छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ । उक्त कानूनी व्यवस्थाअनुसार अपराध गर्न षड्यन्त्र गर्ने वा त्यस्तो अपराध गर्न अरूलाई दुरुत्साहन गर्ने वा त्यस्तो अपराध गर्नमा मतियार हुने व्यक्तिलाई अपराध गर्ने व्यक्तिलाई हुने सजायको आधा सजाय हुने अवस्था देखिन्छ । कानूनमा व्यवस्था भएबमोजिम प्रमाणबाट जुन प्रकृतिको कसुर गरेको पुष्टि हुन्छ सोही कसुरअनुसारको सजाय दिनु न्यायोचित हुन्छ । मिति २०७२।११।१९ देखि मिति २०७२।१२।१९ सम्ममा प्रतिवादी रमेश गोलेबाट लागु औषध बरामद हुनुसम्ममा यी दुई प्रतिवादीबिच १४५ पटक मोवाइलमा कुराकानी भएको कल डिटेल प्रतिवेदनबाट देखिएको छ । यस प्रकृतिको सम्पर्कलाई यी प्रतिवादी विष्णुगोपाल श्रेष्ठले सामान्य चिनजानको रूपमा बयानमा प्रस्तुत गरेको देखिएको छ । लागु औषध बरामद हुनुअघि यस प्रकृतिबाट अस्वाभाविक सम्पर्कमा रहनुको कारण र औचित्य यी प्रतिवादी विष्णुगोपालले पुष्टि गर्न सकेको देखिएन । यसबाट यी प्रतिवादी विष्णुगोपाल श्रेष्ठलाई प्रतिवादी रमेश गोलेले गर्न लागेको लागु औषधको कारोबारबारे जानकारी रही मतियारको भूमिका निर्वाह गरेको पुष्टि हुन आयो । यसरी प्रतिवादी विष्णुगोपाल श्रेष्ठको साथबाट लागु औषध बरामद भएको नदेखिए पनि सहअभियुक्त रमेश गोलेले निजलाई बिक्री गर्ने भनी पोल गरेको, वारदातको तत्काल अगाडिको अवस्थामा निजहरूका बिच उपर्युक्तबमोजिमको फोन संवादहरू भएको देखिएको र रमेश गोलेले लागु औषध खरिद गरी ल्याएको भन्ने थाहा हुँदाहुँदै कहीँकतै उजुर वा सूचना नगरी समर्थन जनाई रमेश गोलेलाई उल्लिखित कसुर

गर्न सहयोग र दुरूत्साहनसम्म गरेको देखिँदा निजले लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १७ बमोजिमको कसुर गरेको देखिन आउने।

तसर्थ प्रतिवादी रमेश गोलेलाई १० वर्ष कैद तथा रू.७५,०००।- जरिवाना हुने ठहर गरेको उच्च अदालत पाटन, हेटौडा इजलासको फैसला सदर हुने र अर्का प्रतिवादी विष्णुगोपाल श्रेष्ठको हकमा उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासबाट मिति २०७४।२।३० मा भएको फैसला केही उल्टी भई निज विष्णुगोपाल श्रेष्ठलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १७ बमोजिमको कसुरमा ५ (पाँच) वर्ष कैद सजाय हुने ठहर गरेको संयुक्त इजलासका माननीय न्यायाधीश श्री पुरूषोत्तम भण्डारीको राय मनासिब देखिएकोले सोही अनुसार निज विष्णुगोपाल श्रेष्ठलाई ५ (पाँच) वर्ष कैद हुने।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद खनाल

इति संवत् २०७९ साल असार ९ गते रोज ५ शुभम्।

## इजलास नं. १

### ३

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७६-CR-०३८२, जबरजस्ती करणी, पदमनाथ दाहाल वि. नेपाल सरकार*

जाहेरवालीको जाहेरी दरखास्त, निज र निजको छोराको अदालतको बकपत्र र स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनसमेतका आधारमा जबरजस्ती करणीको वारदात भएको तथ्य स्थापित भएको छैन। शंकारहित तवरबाट दाबी प्रमाणित गर्ने भार वादीको हो, शंकाको सुविधा अभियुक्तले पाउँछ भन्ने न्यायको मान्य सिद्धान्तको अनुशरण नगरी भएको फैसला मिलेको छैन भन्ने पुनरावेदक / प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर रहेको देखिन्छ। सो सम्बन्धमा विचार गर्दा, प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ ले "फौजदारी मुद्दामा आफ्नो अभियुक्तको कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादीको हुने छ" भन्नेकानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी र पीडित परिवारबिच लेनदेनको विषयलाई लिएर विवाद भई सोही विवादसमेतका कारण जाहेरवालीसमेतको परिवार एक आपसमा मिली जाहेरी दिन लगाइएको र पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा समेत जबरजस्ती करणी भएको कुनै लक्षण, चिह्न सङ्केतसमेत देखिँदैन। अभियोजन पक्ष वादी नेपाल सरकारले स्पष्ट र अकाट्य प्रमाणहरूको सङ्कलन र प्रस्तुत गरी आफ्नो दाबी पुष्टि गर्ने सम्बन्धमा बलियो वस्तुनिष्ठ प्रमाण अदालतमा पेस गर्नुपर्दछ। तर आफ्नो दाबी पुष्टि हुन सक्ने बलियो प्रमाण अभियोजन पक्षबाट पेस हुन सकेको देखिँदैन। फौजदारी कसुरमा अभियोजन पक्षले लगाएका प्रमाणहरू शंकास्पद छन् वा शंकारहित तवरले अपराध प्रमाणित हुन (Guilty beyond a reasonable doubt) सक्दैन भने शंकाको सुविधा अभियुक्तले पाउछ। न्याय निरूपण गर्ने निकायबाट परीक्षण गरिएका प्रमाणहरूबाट वारदातमा प्रतिवादीको संलग्नता पुष्टि नभएको स्थितिमा शंकाको आधारमा मात्रै कसैलाई दोषी करार गर्नु हाम्रो फौजदारी न्याय व्यवस्थाको प्रतिकूल हुन जान्छ। कुनै पनि फौजदारी मुद्दामा प्रचलित कानूनबमोजिम अनुसन्धान पक्षले वस्तुनिष्ठ रूपमा कसुर वा वारदातको विषयमा अनुसन्धान गरी सङ्कलित प्रमाणका आधारमा कसैका उपर कुनै अभियोग लगाउने र त्यस्तो मुद्दा हेर्ने अधिकारप्राप्त अदालत वा निकायले पनि पेस भएका प्रमाणहरूको शंकारहित तवरले परीक्षण गरी मूल्याङ्कन गरी ठहरेबमोजिमको निर्णय गर्नुपर्दछ। यसै सन्दर्भमा यस अदालतबाट पुनरावेदक/ वादी नेपाल सरकार प्रतिवादी यज्ञबहादुर थापासमेत भएको कर्तव्य ज्यान मुद्दामा *"कुनै पनि फौजदारी कसुरलाई शंकारहित तवरले पुष्टि गर्नुपर्ने दायित्व अभियोजन पक्षको हुने, अदालतले प्राप्त प्रमाणहरूको*

*परीक्षण एवम् मूल्याङ्कन गरी ती प्रमाणहरूले ठहरेबमोजिम मात्र न्याय निरूपण गर्नुपर्ने भन्ने नै हुन्छ । साथै सङ्कलित भएका प्रमाणहरूबाट कसैउपरको अभियोग पुष्टि हुने अवस्था छैन अथवा त्यस्तो अभियोग शंकारहित देखिँदैन भने अदालतले वादी वा अभियोजन पक्षको हैसियत ग्रहण गरी विना आधार कसैलाई दोषी करार गर्न पनि सक्तैन । त्यसैले कुनै फौजदारी कसुर शंकारहित रूपमा पुष्टि हुन नसकेको स्थितिमा आरोपित व्यक्तिले शंकाको सुविधा पाउने र अभियोगबाट उन्मुक्ति पाउने"* (ने.का.प.२०६९, अङ्क २, नि.नं.८७६४) भनी सिद्धान्त प्रतिपादन भएको छ । पुनरावेदक/प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी गरेको भनी वादी नेपाल सरकारले लगाएको आरोप शंकारहित तवरले पुष्टि हुन नसकेको, पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण गर्दा जबरजस्ती करणी भएको कुनै लक्षण नदेखिएको, पीडित परिवारसँग प्रतिवादीको लेनदेन कारोबार देखिएको समेतका तथ्य एवम् मिसिल संलग्न प्रमाण कागजातहरूबाट उक्त कार्यमा यी प्रतिवादीको संलग्नता रहेको नदेखिएकोले शंकाको सुविधा प्रतिवादीले पाउने नै देखिँदा अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासबाट मिति २०७५।०८।२६ मा भएको फैसला मिलेको देखिएन । तसर्थ, अभियोग दाबीबमोजिम उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासबाट प्रतिवादी पदमनाथ दाहाललाई जबरजस्ती करणीको महलको १ र ३(५) नं. को कसुरमा सोही महलको ३(५) नं. बमोजिम कैद वर्ष ५ हुने तथा ऐ. १० नं. बमोजिम प्रतिवादीबाट पीडितलाई रू. २०, ०००/- क्षतिपूर्ति भराइदिनेसमेत गरी भएको फैसला सदर हुनुपर्छ भनी वादी नेपाल सरकारका तर्फबाट उपस्थित विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताले गर्नु भएको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादी पदमबहादुर भन्ने पदमनाथ दाहाललाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १, ३ (५) नं. को कसुरमा सोही महलको ३(५) नं. बमोजिम कैद वर्ष ५(पाँच) हुने तथा सोही महलको १० नं. बमोजिम प्रतिवादीबाट पीडितलाई रू.२०,०००।– (बिसहजार) क्षतिपूर्ति भराइदिने गरी सुरू संखुवासभा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।०३।२७ मा भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत विराटनगर, धनकुटा इजलासबाट मिति २०७५।०८।२६ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिएकोले उल्टी भई पुनरावेदक/प्रतिवादी पदमबहादुर भन्ने पदमनाथ दाहालले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ।

इजलास अधिकृत (उपसचिव):- कोशलेश्वर ज्ञवाली

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा(सुस्मिता)

इति संवत् २०७७ साल मार्ग २५ गते रोज ५ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७५-CR-१९६७, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. सोमान सिं गुरूङ*

प्रतिवादी सोमान सिं गुरूङले वर्ष १५ की विवाहित नाबालिगलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. अनुसारको कसुर अपराधमा सोही महलको ३(६) नं. अनुसार जबरजस्ती करणी गरेको देखिन्छ । उक्त महलको १ नं. मा *"कसैले कुनै महिलालाई निजको मन्जुरी नलिई करणी गरेमा वा सोह्र वर्षभन्दा कम उमेरकी बालिकालाई निजको मन्जुरी लिई वा नलिई करणी गरेमा र डर, त्रास, धाक देखाई वा करकाप, अनुचित प्रभाव, झुक्यानमा वा जोरजुलुम गरी वा अपहरण गरी वा शरीर बन्धक राखी करणी गरेमासमेत जबरजस्ती करणी गरेको ठहर्छ"* भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ । निज प्रतिवादीलाई सोही महलको ३(६) नं. अनुसार आफ्नै पत्नीलाई जबरजस्ती करणी गरेको ठहरेको अवस्थामा निज प्रतिवादीलाई के कति सजाय हुने भन्ने सम्बन्धमा विचार गर्दा, साबिक मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको ३ नं. मा जबरजस्ती करणी गर्नेलाई हुने सजायको

बारेमा उल्लेख गरिएको छ । जस अनुसार उक्त ३ नं. को देहाय (६) मा *". . लोग्नेले स्वास्नीलाई जबरजस्ती करणी गरेमा तीन वर्षदेखि पाँच वर्षसम्म कैद सजाय हुने छ"* भन्ने व्यवस्था गरेको छ । यी पीडितको जन्ममिति २०५८।११।०६ मा भएको भन्ने निजको जन्मदर्ता प्रमाणपत्रमा उल्लेख भएको देखिँदा निज पीडितको उमेर १५ वर्ष २ महिना रहेको देखियो। प्रतिवादी सोमान सिं गुरूङलाई सोहीबमोजिम सजाय निर्धारण गरिनुपर्ने देखिन्छ । विद्यमान कानूनी व्यवस्था र घटनाको समग्र परिस्थितिसमेतलाई विचार गरी हेर्दा, प्रतिवादीले उमेर नपुगेकी नाबालिक पत्नीलाई निजको सहमति लिई करणी गरेपनि सो कार्य आपराधिक कार्य नै देखियो। निजलाई कानूनले निर्धारण गरेको न्यूनतम सजाय गरेमा न्यायको उद्देश्य पूरा हुने भएकाले मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३ नं. को देहाय (६) बमोजिम ४ वर्ष कैदको सजाय गर्न मनासिब नै देखिँदा उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासबाट भएको फैसलामा कुनै परिवर्तन गर्नुपर्ने नदेखिँदा मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३ नं. को देहाय (३) नं. बमोजिम सजाय गरी पीडितलाई क्षतिपूर्ति दिलाई भराइपाउँ भन्ने वादी/नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर र यस अदालतबाट मिति २०७६।०९।२४ मा भएको झगडिया झिकाउने आदेशसँग सहमत हुन नसकिने।

उल्लिखित विवेचित आधार, कारण र प्रमाणसमेतबाट प्रतिवादी सोमान सिं गुरूङले वर्ष १५ की नाम परिवर्तित ०४९–३४ (०७३/०७४) लाई जबरजस्ती करणी गरेको हुँदा निजलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(३) नं. बमोजिम ६(छ) वर्ष कैद सजाय र सोही महलको १० नं. बमोजिम प्रतिवादीबाट पीडितलाई रू. २५, ०००।– क्षतिपूर्ति भराइदिने ठहऱ्याई सुरू चितवन जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।०२।०२ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई निज प्रतिवादी सोमान सिं गुरूङले आफ्नै नाबालिग श्रीमतीलाई जबरजस्ती करणी गरेको देखिँदा निजलाई सोही महलको ३ नं. को देहाय ६ बमोजिम ४ (चार) वर्ष कैद सजाय हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासबाट मिति २०७५।०९।२४ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत (उपसचिव):- कोशलेश्वर ज्ञवाली
कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)
इति संवत् २०७७ साल मार्ग २५ गते रोज ५ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७६-CR-१५९७, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. राजेन्द्र लामा मोक्तान*

प्रतिवादीले पीडितलाई मिति २०७५।०३।०६ गते जबरजस्ती करणी गरेको भनी मिति २०७५।०३।२७ मा जाहेरी दिएको पाइन्छ । वारदात हुँदाको अवस्थामा प्रचलित मुलुकी ऐन, २०२०, को जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. को कसुरमा ३(३) नं. बमोजिम सजाय हुन तथा १० र १०ग नं. बमोजिम प्रतिवादीबाट मनासिबबमोजिमको क्षतिपूर्ति भराइदिन माग गर्दै मिति २०७५।०४।२१ मा मकवानपुर जिल्ला अदालतसमक्ष अभियोगपत्र दायर भएको देखिन्छ । साबिक मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३ नं. मा जबरजस्ती करणी गर्नेलाई हुने सजायको बारेमा उल्लेख गरिएको छ। जस अनुसार उक्त ३ नं. को देहाय ३ मा *". . चौध वर्ष वा सोभन्दा बढी सोह्र वर्षभन्दा कम उमेरकी बालिका भए छ देखि दश वर्षसम्म कैदको सजाय हुने"* व्यवस्था गरेको छ। निज पीडितको उमेर १५ वर्ष रहेको देखिन्छ । मकवानपुर जिल्ला अदालतबाट अभियोग दाबीबमोजिम नै उल्लिखित महलको ३(३) नं. बमोजिम तजबिजी ६ वर्ष कैद हुने तथा १०ग नं. अनुसार रू. २०, ०००।– क्षतिपूर्ति भराइदिने गरी फैसला भएकोमा उक्त फैसला उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासबाट सदर भएको

देखिन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा वारदात हुँदा र अभियोग दायर हुँदाको अवस्थामा साबिक मुलुकी ऐन नै कायम भएको देखिन्छ ।उक्त समयमा मुलुकी अपराध संहिता तथा कार्यविधि संहिता लागु नभएको र सो अभियोग मागदाबीपश्चात् मिति २०७५।५।१ देखि लागु भएको देखिन्छ । प्रतिवादीले अन्य मुद्दामा कसुर गरेको भए सो कुरा अभियोगदाबीमा उल्लेख गरी पटके कसुर गरेको भनी मागदाबी लिनुपर्नेमा सो माग गरेको पनि देखिँदैन । अदालतले वादी पक्षको मागदाबीभन्दा बाहिर गएर फैसला गर्न मिल्दैन । हाम्रो न्याय प्रणालीले न्याय सम्पादन गर्ने विषयमा अपनाएका न्यायका सर्वमान्य सिद्धान्तमध्येको एउटा सिद्धान्त अदालत जहिले पनि वादी दाबीमा सीमित रहने सिद्धान्त पनि हो । यसको अर्थ अदालतले न्याय प्रदान गर्दा वादी वा अभियोजन पक्षले मागदाबी गरेको कुरामा मात्र सीमित रहेर इन्साफ गर्नु पर्छ भन्ने हो । यसै सन्दर्भमा पुनरावेदक/वादी ज्ञानमान डंगोल विरूद्ध बाबुकाजी महर्जनसमेत भएको मोहियानी हक मुद्दामा यस अदालतबाट *"वादीले जे जति कुरामा दाबी लिएको छ, त्यतिसम्म कुरामा अदालतले इन्साफ गर्नुपर्ने, उजुरी भई दाबी नलिएको कुरामा पछि उठाएको वादविवादलाई लिएर इन्साफ ठहर गर्न नमिल्ने"* (ने.का.प. २०३१, अङ्क ३ नि.नं.८०७) भनी, त्यसैगरी पुनरावेदक/वादी प्रभु दयाल लोहिया विरूद्ध जुट विकास तथा व्यापार संस्था, विराटनगर भएको मध्यस्थता गराइपाउँ भन्ने मुद्दामा *"दाबी परिवर्तन गर्न अदालतले नपाउने, व्यवस्थापिकाले अन्य व्यवस्था नगरेसम्म प्रकृतिलाई परिवर्तन गर्न सकिदैन"* (ने.का.प. २०३९, अङ्क ४, निर्णय नम्बर १५५०) भनी सिद्धान्त प्रतिपादन भएको छ । कानूनमा निर्धारित सजायको दायराभित्र रही अभियोग दाबीअनुरूप नै तजबिजी सजाय गर्ने र क्षतिपूर्ति भराउने गरी मकवानपुर जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर हुने गरी उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासबाट भएको फैसला मिलेकै देखिँदा उक्त फैसला केही उल्टी गरी कैद सजाय तथा क्षतिपूर्तिको रकम बढाइयोस् भन्ने पुनरावेदक/वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर एवम् विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादी बक्सर भन्ने राजिव भन्ने राजेन्द्र लामा मोक्तानले पीडित जाहेरवाला नाम परिवर्तित ३१(०७४-०७५-७१) लाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. अनुसारको कसुर अपराध गरेकोले निजलाई सोही महलको ३(३) नं. अनुसार ६ (छ) वर्ष कैद तथा सोही महलको १० नं. बमोजिम पीडितलाई क्षतिपूर्ति रू. २०, ०००।– (बिस हजार) भराइदिने गरी सुरू मकवानपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।१२।१४ मा भएको फैसला सदर हुने ठहऱ्याई उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासबाट मिति २०७६।०५।१० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा यस अदालतबाट मिति २०७६।११।०१ मा प्रदान गरिएको निस्सासँग सहमत हुन सकिएन । उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासबाट मिति २०७६।०५।१० मा भएको फैसला सदर हुने ।

इजलास अधिकृत (उपसचिव):- कोशलेश्वर ज्ञवाली

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा(सुस्मिता)

इति संवत् २०७७ साल मार्ग २५ गते रोज ५ शुभम् ।

६

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०६८-CI-१०५६, लेनदेन, लालबहादुर वली वि. चित्रबहादुर खत्री*

वादी दाबीको लिखतलाई किर्ते ठहर गरी पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरबाट वादीलाई लिखतमा उल्लेख भएको बिगोको आधा रू.२,२७,७५०।- जरिवाना हुने गरी फैसला भएको देखिन्छ । यस सम्बन्धमा हेर्दा वादी र प्रतिवादीबिच लेनदेन करोबार हुँदा खडा गरिएको लिखतमा भएको प्रतिवादी चित्रबहादुर खत्रीको हस्ताक्षर निजको नमुना

हस्ताक्षरसँग परीक्षण हुन सकेको छैन । लिखतमा भएको ल्याप्चे सही र प्रतिवादीले दिएको अधिकृत वारेसनामामा रहेको ल्याप्चे सहीछापहरू तुलना गर्न नसकिएको भनी राष्ट्रिय विधि विज्ञान प्रयोगशालाबाट परीक्षण प्रतिवेदन प्राप्त भएको देखिन्छ। उक्त लिखतमा भएका ल्याप्चे तथा हस्ताक्षर सहीहरूबाट यकिन निश्कर्ष आउन नसकेको हुँदा र प्रतिवादीले वादीबाट रकम रू.१,५५,०००।- लिएको भनी प्रतिवादीको अनुमतिवाला करूणा चौधरीले खुलाइदिएको हुँदा लेनदेन भएको लिखतलाई किर्ते भन्न सक्ने देखिएन। वादी प्रतिवादीबिच रकम रू.१,५५,०००।- सम्म लेनदेन भएको भन्ने देखिएको र लेनदेनको लिखत किर्ते गरेको भनी प्रमाणित हुन नसकेको हुँदा वादी दाबीबाट प्रतिवादीले फुर्सद पाउने र लिखत किर्ते गरेको भनी वादीलाई बिगोको आधा जरिवाना हुने गरी भएको पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरको फैसला मिलेको नदेखिने।

वादीले प्रतिवादीबाट सावाँ ब्याज भराइपाउने गरी भएको सुरु फैसला केही उल्टी गरी वादी दाबीबाट प्रतिवादीले फुर्सद पाउने र वादी दाबीको लिखत किर्ते ठहरेकोले वादीलाई तमसुकमा उल्लेख भएको बिगोको आधा जरिवाना हुने गरी पुनरावेदन अदालत तुलसीपुरबाट मिति २०६७।१२।१५ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई वादीलाई जरिवाना नहुने र वादीले प्रतिवादीबाट रू.१,५५,०००।- सावाँ र उक्त रकमको लिखत भएको मितिदेखि भरिभराउ हुने मितिसम्मको कानूनबमोजिमको ब्याजसमेत भराई लिन पाउने ठहर्ने।

इजलास अधिकृत (उपसचिव): महेन्द्रप्रसाद पौड्याल
कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा
इति संवत् २०७७ साल पुस १० गते रोज ६ शुभम्।

७

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७१-CI-१३९३, सन्धि सर्पन दर्ता गरी खिचौला मेटाई चलन चलाइपाऊँ, बलबहादुर बस्नेत वि. पदमबहादुर कटुवाल*

पुनरावेदक प्रतिवादी बलबहादुर बस्नेत आफू वादी भई धनमान बस्नेत क्षेत्रीउपर दायर गरेको सन्धिसर्पन मुद्दामा न. नं. ३५ र ३६ को जग्गालाई सन्धिसर्पन ठहऱ्याएको सुरू ओखलढुङ्गा जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गर्ने गरी सर्वोच्च अदालतबाट मिति २०२५।१०।२१ मा भएको फैसलामा उल्लेख भएको जग्गा अर्कै हो भनी आफ्नो प्रतिउत्तर पत्रमासमेत खण्डन गर्न नसकेको अवस्थामा दाबीको कि.नं. १५ को जग्गा सार्वजनिक सन्धिसर्पनको कायम गरी प्रतिवादीले गरेको खिचोला मेटाई सार्वजनिक रूपमा उपभोग गर्ने गरी चलन चलाई दिनु पर्नेमा वादीको फिराद दाबी नपुग्ने ठहऱ्याएको सुरू ओखलढुङ्गा जिल्ला अदालतको फैसलालाई उल्टी गरी फिराद दाबीको कि.नं. १५ को १३-०-२-० जग्गा सार्वजनिक सन्धिसर्पन कायम गरी प्रतिवादीहरूले गरेको खिचोला मेटाई सार्वजनिक रूपमा सबैले उपभोग गर्ने गरी चलनसमेत चलाइदिने गरी भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न सकिने अवस्था नरहेबाट सो जग्गाको अदालतबाट स्थलगत नक्सा सर्जमिन गरी सर्वोच्च अदालतबाट भएको मिति २०२५।१०।२१ को फैसलाको चार किल्लाभित्रको जग्गा हो होइन ? छुट्याई पुनरावेदन अदालत राजविराजको फैसला बदर गरी सुरू ओखलढुङ्गा जिल्ला अदालतको फैसला यथास्थानमा सदर गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादी बलबहादुर बस्नेतको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

ओखलढुङ्गा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।३।२६ मा कि.नं. १५ को जग्गामा वादी दाबी नपुग्ने गरी गरेको फैसला उल्टी भई उक्त जग्गा सार्वजनिक सन्धिसर्पन कायम गरी प्रतिवादीहरूले गरेको खिचोला मेटाई सार्वजनिक रूपमा सबैले उपभोग गर्ने गरी चलनसमेत चलाइदिने गरी पुनरावेदन अदालत

राजविराजले मिति २०७१।५।३० मा गरेको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: नवराज जोशी

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)

इति संवत् २०७६ साल फाल्गुण १८ गते रोज १ शुभम्।

८

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०७५-CR-०७८७, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. अर्जुन परियार*

जाहेरवाली ६४ छिन्चु (१०)को भेजिनल स्वाबमा वीर्य नपाइएको भन्ने उल्लेख छ । वारदात हुँदा निजको उमेर १५ वर्ष १० महिना पुगेको देखिन्छ । सो उमेरमा पीडितको कन्याजाली च्यातिएको भन्ने उल्लेख भए पनि प्रतिवादीले करणी गरेको कारणबाट नै कन्याजाली च्यातिएको हो भन्ने कुरा प्रमाणित भएको अवस्था नहुँदा कन्याजाली च्यातिएको कारणबाट मात्र प्रतिवादी अर्जुन परियारले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्न नमिल्ने हुँदा पुनरावेदकको पुनरावेदन जिकिर तथ्यसङ्गत नदेखिने।

प्रतिवादी कसुरमा इन्कार रहेको, पीडित र प्रतिवादीको स्वास्थ्य जाँचबाट दुवै जनाको स्वास्थ्य अवस्था सामान्य देखिएको, पीडितले अदालतमा बकपत्र गर्दा करणी भएको होइन । फोन गरी रहेकोले प्रतिवादीहरूलाई चेतावनी दिन जाहेरी दिएको हुँ भनी जाहेरीको बेहोरा झुट्ठा हुनुपर्ने कारणसमेत उल्लेख गरेको देखिन्छ यस अवस्थामा प्रतिवादी अर्जुन परियारले जाहेरवाली ६४ छिन्चु (१०) लाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्न मिल्ने देखिएन । यस अवस्थामा प्रतिवादी अर्जुन परियारलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिनेगरी उच्च अदालत सुर्खेतबाट भएको फैसलालाई अन्यथा मान्न मिलेन । प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर र विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रतिवादी अर्जुन परियारलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने ठहराएको सुरू सुर्खेत जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने गरी उच्च अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७४।१२।१८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृति : राजकुमार दाहाल

कम्प्युटर - रमला पराजुली

इति संवत् २०७७ साल असार २ गते रोज ३ शुभम्।

९

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०७२-CR-१३६२, जबरजस्ती करणी उद्योग, नेपाल सरकार वि. बुद्धिलाल मोक्तान*

प्रतिवादी सार्की भन्ने बुद्धिलाल मोक्तानले मिति २०७०।४।१७ गते बिहान ३:०० बजेको समयमा सुतेको कोठाको झ्यालबाट प्रवेश गरी वर्ष १३ की परिवर्तित नाम (ए) लाई जबरजस्ती करणी गर्ने उद्देश्यले जबरजस्ती शरीरमा समाती हातले स्तन मोल्ने, सुरूवाल खोल्ने जस्ता कार्य गरी पीडितले हार गुहार गरी कराएपछि प्रतिवादी भागी गएको देखिन्छ । निजले परिवर्तित नाम (ए) को मन्जुरीविना निजको सम्वेदनशील अंग छुने वा छुने प्रयास गरेको र निजसँग यस्तै अन्य कुनै किसिमले अस्वाभाविक व्यवहार गरेको वा निजलाई करणीका आशयले समातेको समेत अवस्थालाई जबरजस्ती करणीको उद्योग नभई यौन दुर्व्यवहार गरेको मानिन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी सार्की भन्ने बुद्धिलाल मोक्तानको उक्त कार्य मुलुकी ऐन, आशय करणीको महलको १ नं. अनुसारको कसुर देखिन्छ। प्रतिवादी सार्की भन्ने बुद्धिलाल मोक्तानलाई जबर्जस्ती करणीको उद्योगबाट सफाइ हुने तर आशय करणीतर्फ परिणत हुने गरी भएको पुनरावेदन अदालत हेटौंडाको फैसला अन्यथा मान्न मिलेन। प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर र बिद्वान्

उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रतिवादी सार्की भन्ने बुद्धिलाल मोक्तानलाई जबरजस्ती करणी उद्योगतर्फको अभियोगमा सफाइ दिई पीडित पक्षले यी प्रतिवादीउपर मुलुकी ऐन, आशय करणीको महलको १ नं. अनुसारको कसुर कायम गरी कारबाही गरिपाउँ भनी मुद्दा सकार गरी निवेदन दिन आएमा यी प्रतिवादीलाई झिकाई मुद्दाको बाँकी काम कारबाही यसै मिसिलबाट गर्ने गरी सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ अनुसार प्रस्तुत मुद्दा आशय करणीमा परिणत गर्ने गरी सुरू मकवानपुर जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर हुनेगरी पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०७१।८।१७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने। फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत (उपसचिव) - राजकुमार दाहाल
कम्प्युटर - रमला पराजुली
इति संवत् २०७७ साल असार २ गते रोज ३ शुभम्।

१०

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०७३-CR-०५८०, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. प्रितम तितुङ्ग*

सर्वोच्च अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको आधारबाट अदालतमा बयान गर्दा प्रतिवादी कसुरमा इन्कार रहेको, पीडित र प्रतिवादीको स्वास्थ्य जाँचबाट दुवै जनाको स्वास्थ्य अवस्था सामान्य देखिएको, जबरजस्ती करणीका लक्षणहरू देखिएका थिएनन् भनी डाक्टरले बकपत्र गरिदिएको समेत अवस्थामा प्रतिवादी प्रितम तितुङ्गले परिवर्तित नाम ३१(क-५३) लाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्न मिलेन। प्रतिवादी प्रितम तितुङ्गले परिवर्तित नाम ३१(क-५३) लाई जबरजस्ती करणी गरेको नदेखिए पनि असहज तथा अमर्यादित तवरले जङ्गलमा बोलेको हो भन्नेसम्म देखिन्छ। वारदातको प्रकृति तथा मिसिल संलग्न कागजातबाट परिवर्तित नाम ३१(क-५३) लाई यौन आशयले कुराकानी गरेको देखिँदा प्रस्तुत मुद्दा सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम आशय करणीमा परिणत हुने देखियो। वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर र विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

प्रितम तितुङ्गलाई सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम आशय करणीमा परिणत गरी अभियोग मागदाबीबाट सफाइ दिने गरी मकवानपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।०३।०९ मा भएको फैसला सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०७२।०९।०६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत - श्रद्धा विष्ट
कम्प्युटर - रमला पराजुली
इति संवत् २०७७ साल असार २ गते रोज ३ शुभम्।

११

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०७०-CI-०५२४, नामसारी निर्णय राजीनामा, लिखत बदर गरी जग दिवाल भत्काई खिचोला मेटाई चलन चलाइपाऊँ, धनिराम नाउँसमेत वि. रामकिसुन यादव*

पुनरावेदक प्रतिवादीले पुनरावेदन जिकिरमा विवादित जग्गामा के कस्ता निर्माण संरचना रही को कसको भोग बसोबास रहेको छ, नाप नक्सा गाउँ सर्जमिनलगायत अन्य जे जो बुझ्नुपर्दछ बुझिएको छैन भनी जिकिर लिएकोतर्फ विचार गर्दा, कसैले कानून विपरीत लिखत पारित गरी हक भोग गर्दैमा निजहरूको स्वामित्व रहन सक्ने देखिँदैन। यसै सम्बन्धमा ने.का.प. २०५५ अङ्क १, नि. नं. ६४९९ मा *"कानूनबमोजिम पारित लिखतबेगर कसैलाई अचल*

*सम्पत्तिको हक स्वामित्व प्राप्त हुन नसक्ने स्पष्ट छ । कसैले कसैको अचल सम्पत्ति कुनै प्रकारले वर्षौंसम्म आफ्नो भोग कब्जामा लिइराखेको हुन सक्छ वा अर्को अर्थमा लिन सक्ने भएको हुन सक्छ तर त्यस्तो भोग कब्जाबाट उसलाई स्वतः सो सम्पत्तिको हक स्वामित्व नै प्राप्त हुन्छ भन्न नमिल्ने"* भनी सिद्धान्त प्रतिपादित भएको देखिन्छ । स्रोत नै दुषित भइसकेको अवस्थामा दुषित स्रेस्ताबाट प्राप्त जग्गामा यी प्रतिवादीहरूले पुनरावेदनमा जिकिर लिए जस्तो हकभोगलाई मान्यता दिन सकिएन । पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट वादीलाई असर पर्ने हदसम्म मिति २०६५।७।५ को नामसारी निर्णय, तत्पश्चात् पारित लिखत, दर्तासमेतका काम कारबाही बदर भई उक्त कि नं. १५७ को ०-२-३ जग्गामा प्रतिवादीहरूले गरेको खिचोला मेटाई, सो जग्गामा लगाएको जग दिवाल समेतका निर्माण संरचना भत्काई वादीलाई चलनसमेत चलाइदिने गरी भएको फैसला अन्यथा मान्न सकिएन । तसर्थ, प्रतिवादीको पुनरावेदन तथा निजतर्फका विद्वान् वरिष्ठ अधिवक्ताको बहस जिकिर साथै यस अदालतबाट प्रत्यर्थी झिकाउँदा लिइएका आधार र कारणहरूसँग समेत सहमत हुन नसकिने ।

वादी दाबी पुग्न नसक्ने भनी सुरु रूपन्देही जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई वादीलाई असर पर्ने हदसम्म मिति २०६५।७।५ को नामसारी निर्णय, तत्पश्चात् पारित लिखत, दर्तासमेतका काम कारबाही बदर भई उक्त मैनहिया गा. वि. स. वडा नं. ५ कि नं. १५७ को ०-२-३ जग्गामा प्रतिवादीहरूले गरेको खिचोला मेटाई, सो जग्गामा लगाएको जग दिवालसमेतका निर्माण संरचना भत्काई वादीलाई चलनसमेत चलाइदिने भन्नेसमेत बेहोराको पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०६९।८।१० मा भएको फैसला सदर हुने ।

इजलास अधिकृत:- नबिन आचार्य

इति संवत् २०७६ साल फागुन १३ गते रोज ३ शुभम् ।

- *यसै लगाउको ०७०-CI-०६२०, लिलाम डाँक सकार मुचुल्का बदर, धनिराम नाउँ वि. रामकिसुन यादव भएको मुद्दामा पनि यसैबमोजिम फैसला भएको छ ।*

१२

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०७४-CR-०२५३, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. लेखनाथ भण्डारी*

पीडित बुटवल २१ नाबालिग हुन् भनी लिइएको नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर सम्बन्धमा विचार गर्दा, निज पीडित अध्ययन गर्ने साधना महिला विद्यालयको भर्ना फारामबाट निजको जन्ममिति २०५७।७।२५ भनी उल्लेख भएको देखिन्छ भने निज पीडित जन्मेको गाउँ भुवनपोखरी गाउँ विकास समिति, पाल्पाबाट प्राप्त पीडितको जन्म दर्ता प्रमाणपत्रमा जन्ममिति २०५२।७।१५ भनी उल्लेख भएको देखिन्छ । त्यस्तै पीडितको उमेर जाँच परीक्षण गर्न गठित बरिष्ठ डेन्टल सर्जनसमेत ३ जनाको बोर्डले गरेको परीक्षणबाट निजको डेन्टल उमेर १६ देखि १८ वर्ष हो भनी उल्लेख भएको देखिन्छ । वैज्ञानिक प्रमाणको विश्वसनीयता सो प्रमाणको परीक्षण विधि र विशेषज्ञको अनुभव र योग्यताका आधारमा दिएको रायलाई अदालतले प्रमाणको रूपमा ग्रहण गर्नुपर्ने हुन्छ । वैज्ञानिक तथा विशेषज्ञद्वारा गरेको रायलाई अदालतले प्रमाणको रूपमा ग्रहण गर्न प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २३(१) को कानूनी व्यवस्थाले समेत मिल्ने देखिन्छ । त्यस्तै निज पीडित बुटवल २१ ले अदालतमा बकपत्र गर्दा आफू १८ वर्षकी भएँ, जन्ममिति २०५२।७।१५ हो भनी उल्लेख गरेकी छन् भने निजको बुवाले अदालतसमक्ष बकपत्र गर्दा छोरीको जन्ममिति २०५२।७।१५ हो भनी लेखाइदिएको देखिन्छ । यस अवस्थामा पीडितको उमेर के कति थियो भनी निर्धारण गर्ने मूलभूत प्रमाण भनेकै राज्यको साधिकार निकाय (स्थानीय निकाय) बाट

जारी भएको जन्मदर्ता प्रमाणपत्र र सोही सम्बन्धमा गरिएको वैज्ञानिक तथा विशेषज्ञद्वारा दिइएको रायलाई नै आधिकारिकता मान्नुपर्ने हुन्छ । सो नभएमा मात्र निजको स्कुल भर्ना हुँदा लेखाएको जन्ममिति वा उमेरलाई मान्नुपर्ने हुन्छ । मिसिल संलग्न पीडितको जन्मदर्ता प्रमाणपत्रलाई सम्बन्धित विशेषज्ञले दिएको राय, निज पीडितको बुवाको अदालतसमक्षको बकपत्र, निज पीडितले अदालतमा गरेको बकपत्रसमेतबाट पुष्टि भइराखेको अवस्था देखिन्छ। उक्त प्रमाणहरूबाट निज पीडित बुटवल २१ को उमेर १६ वर्षभन्दा माथिको अर्थात बालिग नै रहेको पुष्टि हुन्छ। यसरी उमेर पुगेका महिला र पुरूष दुबैको मन्जुरीबाट आपसी सहमतिमा कुनै महिला र पुरूषबिच करणी लिनुदिनु गरेको कार्यलाई कानूनले कसुर मानेको छैन। यसरी प्रचलित कानूनले नै कसुर स्वीकार नगरेको कार्यलाई अभियोग दाबीबमोजिम कानून विपरीतको कार्य मान्न नसकिने।

पीडित बुटवल २१ को अदालतको बकपत्र, निजको बुबा परिवर्तित नाम रामबहादुर कुमालको अदालतको बकपत्र, शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदन, प्रतिवादी लेखनाथ भण्डारीको अदालतको इन्कारी बयान तथा निज पीडितको उमेर सम्बन्धमा निज स्वयं र निजको बुबाको अदालतको बकपत्र, गाउँ विकास समितिको कार्यालयबाट प्राप्त जन्मदर्ता प्रमाणपत्र तथा उमेर जाँच गर्ने विशेषज्ञको प्रतिवेदनसमेतबाट अभियोग दाबीबमोजिम निज बुटवल २१ नाबालिग रहेकोले निजलाई प्रतिवादी लेखनाथ भण्डारीले डर, त्रास, धाक देखाई वा करकापमा अनुचित प्रभाव झुक्यानमा पारी वा जोरजुलुम गरी करणी गरेका हुँदा कारबाही गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदन जिकिर साथै विद्वान् उप-न्यायाधिवक्ताको बहस जिकिर एवम् यस अदालतबाट मुद्दा दोहोऱ्याई पाउने अनुमति प्रदान गर्दा लिइएका आधार र कारणहरूसँग समेत सहमत हुन सकिएन।

प्रतिवादी लेखनाथ भण्डारीले अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको भन्ने वादी दाबी पुग्न नसकेकाले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने भनी सुरू कपिलवस्तु जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गर्ने गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट मिति २०७३।१।२७ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत:- नबिन आचार्य

कम्प्युटर : रमला पराजुली

इति संवत् २०७७ साल पुस १२ गते रोज १ शुभम्।

१३

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०७६-CR-०६८६, खोटाचलन, नेपाल सरकार वि. राहुल राय थारूसमेत*

कुनै पनि अपराध हुनको लागि अपराध घटित गर्ने मनसाय, सोको तयारी, कार्य गरेको र परिणाम पनि आएको हुनुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी राहुल राय थारूले मेरो आमाको खेतमा हराएको रूपैयाँ पानीले भिजेको अवस्थामा भेटाएकोमा सो पैसा अब चल्दैन बरू यसलाई घाममा सुकाएर राष्ट्र बैंक वीरगन्जमा लगी साट्न भनी गाउँलेले सल्लाह दिएकोले उक्त नोटहरू राष्ट्र बैंक वीरगन्जमा साट्न ल्याएको हो भनी बयानमा लेखाइदिएको देखिन्छ । यसरी आमाको हराएको पैसा नै खेतमा भेटिएको उक्त पैसा हो भन्ने तथ्यको भ्रममा परी यी प्रतिवादीहरू सो नोट साट्न राष्ट्र बैंकमा गएको देखिन्छ । नोट साँट्न जाँदा बैंक कर्मचारीले नोट नक्कली हो भन्दा निजहरूमा कुनै प्रकारको भय नभई उल्टै उक्त नोटहरू सक्कली हो भनी जिकिर लिएको कुरा बैँक कर्मचारीले नै लेखाइदिएको देखिँदा यी प्रतिवादीहरूले जानाजान नक्कली नोटको कारोबार गरेको कुरा विश्वासयोग्य छैन।

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ मा फौजदारी मुद्दामा कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादीको हुने छ भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेकोमा प्रस्तुत मुद्दामा यी प्रतिवादीहरूबाट बरामद भएका नक्कली नोटबाहेकका

निजहरूले अपराध गरेको पुष्टि हुने अन्य कुनै प्रमाण मिसिल संलग्न रहेको देखिएन। यस अवस्थामा खोटा चलनको जस्तो गम्भीर फौजदारी अपराधमा शंका र अनुमानको भरमा कसुरदार ठहर गर्न मिल्ने नदेखिँदा प्रतिवादीहरूलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्नेसमेत बेहोराको वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदनपत्र र उपस्थित विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

सुरू पर्सा जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादी राहुल राय थारूलाई मुलुकी ऐन, खोटा चलनको महलको १नं. र ४(१) नं. को कसुरको उद्योगमा सोही महलको ४(१) नं. बमोजिम ५(पाँच) वर्ष कैद र बिगोबमोजिम जरिवाना गरी निजको साथबाट बरामद भएको नोट र मोवाइलसमेत जफत हुने र अर्का प्रतिवादी सन्तोष बसेललाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी मिति २०७५।८।१७ मा गरेको फैसला उल्टी गरी दुबै प्रतिवादीलाई आरोपित कसुरमा सफाइ दिने गरी उच्च अदालत, जनकपुर अस्थायी इजलास वीरगन्जबाट मिति २०७६।३।६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : नवराज जोशी

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)

इति संवत् २०७७ साल जेष्ठ ३२ गते रोज १ शुभम्।

१४

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०७६-CR-०४८३, लागु औषध, नेपाल सरकार वि. केशु ढुंगाना*

प्रतिवादी केशु ढुंगानालाई पटके कायम गरी सोही ऐनको दफा १६ बमोजिम थप सजाय गरेकोतर्फ विचार गर्दा, सो दफा १६ मा *"यस ऐनअन्तर्गत एक पटक सजाय पाइसकेको व्यक्तिले पुनः यसै ऐनअन्तर्गत अपराध गरेमा निजलाई त्यस्तो पछिल्लो प्रत्येक पटकको निमित्त तोकिएको सजायमा थप पाँच वर्षसम्म कैद र एक लाख रूपैयाँसम्म जरिवाना हुने छ"* भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ । यसरी पटकको निमित्त थप सजाय गर्दा ५ वर्षसम्म कैद र एक लाख रूपैयाँसम्म जरिवाना गर्न सक्ने गरी न्यायाधीशलाई न्यायिक मनको प्रयोग गरी स्वविवेकले सजाय निर्धारण गर्ने अधिकार विधायिकाले दिएको पाइन्छ । उक्त विवेकको प्रयोग गर्दा न्यायलाई जीवन्त बनाउन अपराधको प्रकृति, सोको गाम्भीर्य, कसुरदारको उमेर र परिस्थितिलगायतका विषयलाई मध्येनजर गरी सजायको मात्रा यकिन गर्नुपर्ने देखिन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा आरोपित प्रतिवादीको अपराध घटित हुँदाको अवस्थामा २३ वर्षको रहेको, बरामद भएको लागु औषध न्युन मात्रामा रहेको, सङ्गठित रूपमा लागु औषधको कारोबार पनि नगरेको अवस्था रहेको हुँदा पर्सा जिल्ला अदालतबाट यी प्रतिवादीलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४ को खण्ड (घ) (ङ) र (च) र १६ बमोजिमको कसुर ठहर गरी सोही ऐनको दफा १४(१) (झ) बमोजिम २ वर्ष ६ महिना कैद र दुई लाख रूपैयाँ जरिवाना तथा दफा १६ बमोजिम १ वर्ष कैद र एकलाख रूपैयाँ जरिवाना थप हुने गरी गरेको फैसलामा केही उल्टी गरी सोही ऐनको दफा १४(१) (झ) बमोजिम २ वर्ष कैद, रू. १, ००, ०००। जरिवाना तथा दफा १६ बमोजिम ६ महिना कैद र रू. ५, ०००। जरिवाना गर्ने गरी भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिलेन । यस अवस्थामा प्रतिवादीलाई अभियोग मागदाबीबमोजिम थप सजाय गरिपाउँ भन्नेसमेत बेहोराको वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदनपत्र र उपस्थित विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

सुरू पर्सा जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादी केशु ढुंगानालाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४ (घ) (ङ) र (च) तथा दफा १६ को कसुरमा सोही ऐनको दफा १४(१) (झ) बमोजिम २ वर्ष ६ महिना कैद र दुई लाख रूपैयाँ जरिवाना तथा दफा १६ बमोजिम १ वर्ष कैद र एक लाख रूपैयाँ

जरिवाना थप हुने गरी गरेको फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादीलाई सोही ऐनको दफा १४(१) (झ) बमोजिम २(दुई) वर्ष कैद, एक लाख रूपैयाँ जरिवाना तथा दफा १६ बमोजिम ६(छ) महिना कैद र पाँच हजार रूपैयाँ जरिवाना गर्ने गरी उच्च अदालत, जनकपुर अस्थायी इजलास वीरगन्जबाट मिति २०७६।१।२४ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत (उपसचिव): नवराज जोशी

कम्प्युटर : कृष्णमाया खतिवडा (सुस्मिता)

इति संवत् २०७७ साल जेठ ३२ गते रोज १ शुभम्।

१५

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०७४-WO-०२४०, उत्प्रेषण, बैद्यनाथ ठाकुर वि. निजामती किताबखाना, हरिहरभवन, काठमाडौंसमेत*

विपक्षी निजामती किताबखानाले निवेदकलाई समयमै अवकाशको सूचना नदिएको सेवा गराइरहेको अवस्थामा निवेदकले बढी अवधि सेवा गरेबापत प्राप्त गरेको तलब, भत्तालगायतको सुविधाको रकम निवेदकबाट सरकारी कोषमा दाखिला गराउने गरी विपक्षी निजामती किताबखानाबाट भएको मिति २०७४।०४।२५ को निर्णय सो हदसम्म श्रमसम्बन्धी विधिशास्त्रीय र कानूनी मान्यतासमेतका आधारमा न्यायोचित र विवेकसम्मत नदेखिने।

यसै सम्बन्धमा सर्वोच्च अदालत, पूर्ण इजलासबाट (०७४-WF-००२६), मुद्दा उत्प्रेषण परमादेशमा विपक्षी *"निजामती किताबखानालाई निजामती कर्मचारीको अभिलेख अध्यावधिक गरी अब आइन्दा निजामती सेवा ऐन र नियमावलीले निर्धारण गरेको समयभित्र अनिवार्य अवकाश पाउने कर्मचारीलाई समयमा नै सूचना/जानकारी दिने व्यवस्था मिलाउनु र सम्बन्धित निजामती कर्मचारीलाई अवकाश हुने कुराको जानकारी नदिई अवकाश हुने मितिभन्दा पछिसम्म बहाल रहेमा बहाल रहेको मितिपश्चात् को निवृत्तिभरण अधिकारपत्र बनाउने र अधिक अवधि बहालमा रही प्राप्त गरेको रकम सम्बन्धितबाट फिर्ता नगर्नु, नगराउनु"* भनी निर्देशनात्मक आदेशसमेत जारी भइसकेको अवस्था देखिने।

विपक्षी निजामती किताबखानाले निवेदकलाई मिति २०७१।०९।१५ पश्चात अधिक अवधि सेवा गरी सोबापत प्राप्त गरेको आर्थिक सुविधा फिर्ता गर्नु भनी मिति २०७४।०४।२५ मा गरेको निर्णय सो हदसम्म र सो निर्णयका आधारमा गरिएका आर्थिक सुविधा फिर्ता गर्नु भन्ने बेहोराका पत्राचार एवम् अन्य सम्पूर्ण कार्यहरू उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिदिएको छ। अब निवेदकले मिति २०७१।०९।१५ पश्चात् प्राप्त गरेको अधिक अवधिको पारिश्रमिकलगायतका काम गरेबापतका कानूनबमोजिमका आर्थिक सुविधाहरू निवेदकबाट फिर्ता नगराई नियमानुसार निवृत्तिभरण अधिकारपत्र बनाइदिनु भनी विपक्षी निजामती किताबखाना हरिहरभवन, ललितपुरको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृत:-प्रकाश सुवेदी

कम्प्युटर - कृष्णमाया खतिवडा

इति संवत् २०७७ साल मंसिर ३० गते रोज ३ शुभम्।

## इजलास नं.२

१६

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल,** ०६८-CI-१४४०, फैसला बदर, सुरेश महाजुसमेत वि. जगदिश महाजुसमेत

दुई पक्षबिच विवाद परी अदालतबाट तहतह हुँदै फैसला भई अन्तिम तहबाट पनि निक्र्यौल भइसकेपछि सो विवाद निश्चित रूपले अन्त हुनुपर्दछ। हरेक प्रकृतिको कानूनी विवाद कानूनी प्रक्रियाको अनुसरणद्वारा समाप्त हुने गर्दछ। यही प्रक्रियालाई नै विवाद अन्तको सुनिश्चितताको

प्रत्याभूति भनिन्छ । प्रस्तुत फैसला बदर मुद्दामा वादी पुनरावेदकहरूले उठाएका हरेक कानूनी प्रश्न वादीहरूका पिता नै प्रतिवादी भएको अंश चलन मुद्दामा विस्तृत विवेचनासहित अन्तिम भइसकेको र वादीले आफ्नो अंश हक प्रतिवादी जगदिश महाजुले पाउने अंशबाट नै पाउने भएकोले वादी दाबीको फैसलाहरूबाट वादीहरूको हकमा असर पर्न गएको भन्ने पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने ।

अतः माथि विवेचित आधार कारणसमेतबाट वादी दाबी अनुसार काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०४६।९।१० मा, पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०५२।१०।५ मा र सर्वोच्च अदालतबाट मिति २०५८।०९।११ मा भएका फैसलाहरू बदर नहुने ठहराएको सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०६४।०८।०६ को फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०६७।१०।०२ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: फणेश्वरी घिमिरे

कम्प्युटर - समी नेपाली

इति संवत् २०७६ साल कार्तिक ५ गते रोज ३ शुभम् ।

१७

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री पुरूषोत्तम भण्डारी,** *०७२-CI-०७१२, घर भत्काई, शुरेश सिंह वि. राम चरित्तर महतो*

मिति २०७१।१०।१९ को नक्सा मुचुल्कामा न. नं. ४ को ०-३-९-१३/४ क्षेत्रफल जग्गा वादी दाबीको कि.नं. २६० को जग्गामध्येको जग्गा भएको र सो जग्गामा उत्तर तर्फ केराको बोटहरू, दक्षिणतर्फ बाँस झ्याङ्ग रहेको भन्ने उल्लेख भएको देखियो । उक्त न.नं. ४ समेत वन क्षेत्रभित्र पारी काठको पोल गाडी तारबार लगाएको भन्ने तथ्य यी पुनरावेदक प्रतिवादी सागरनाथ वन विकास परियोजनाको कार्यालयले स्वीकार नै गरेको देखिने ।

राजमार्ग दक्षिणको सागरनाथ वन क्षेत्र नेपाल सरकार (तत्कालीन श्री ५ को सरकार) ले सागरनाथ वन विकास परियोजनालाई हस्तान्तरण गरेको तथ्य मिति २०३५।४।११ मा राजपत्रमा प्रकाशित वन मन्त्रालयको सूचनाबाट देखिए पनि वादी दाबीको उक्त न. नं. ४ को जग्गा यी पुनरावेदकमा हक हस्तान्तरण भएको कुनै लिखत प्रमाण पेस गर्न सकेको अवस्था समेत देखिँदैन । यस अवस्थामा व्यक्ति विशेषको स्वामित्वमा रहेको जग्गामा पुनरावेदक परियोजनाको वनक्षेत्रसँग सीमा जोडिएको आधारमा मात्र सो जग्गासमेत वन परियोजनाको जग्गाभित्र पारी काठको पिलर राखी तारबार लगाइ अनधिकृतरूपमा कब्जा गर्नु कानूनसँगत नदेखिँदा यी पुनरावेदक सागरनाथ वन परियोजनाले वादी दाबीको न. नं. ४ मा खिचोला गरेको ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत जनकपुरको मिति २०७१।१२।२४ को फैसला मनासिब नै देखिने ।

अतः विवादित कि.नं. २६० को ०-४-० क्षेत्रफल जग्गा वादीको नाउँमा दर्ता स्रेस्ता कायम रहेकोमा मिति २०७१।१०।१९ मा भएको नक्सा अनुसार न. नं. ४ मा बाँसको झ्याङ्ग, केराको बोट रहेको र सो जग्गासमेतमा सागरनाथ वन विकास परियोजना, सर्लाहीको कार्यालयले तारबार गरेको देखिँदा सुरू सर्लाही जिल्ला अदालतको मिति २०६९।१२।२० को फैसला केही उल्टी गरी न. नं. ४ को जग्गाको हदसम्म वादीको जग्गामा प्रतिवादीमध्ये सागरनाथ वन विकास परियोजना, सर्लाहीबाट खिचोला गरेको ठहऱ्याई पुनरावेदन अदालत जनकपुरबाट मिति २०७१ १२।२४ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : भगवती शर्मा ढुंगाना

कम्प्युटर : हर्क माया राई

इति संवत् २०७७ साल माघ १८ गते रोज १ शुभम् ।

१८

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री पुरूषोत्तम भण्डारी,** *०७४-CR-१३९५, अंशसहित सम्बन्ध*

*विच्छेद, भास्कर सिंह कार्की वि. प्राची रायमाझी कार्की*

पुनरावेदक प्रतिवादीले पेस गरेको प्रतिउत्तरमा प्रत्यर्थी वादीले बजार मूल्य करिब ४० लाख पर्ने महँगो किया कम्पनीको कार किन्न म प्रतिवादीसँग पटकपटक रकम माग गरेको र म प्रतिवादीले हाल त्यति महँगो कारको आवश्यकता नभएको, एउटा कार घरमै रहेको हुँदा यदि अर्को कार नै चाहिने हो भने कम मूल्यको कार लिनको लागि सुझाउँदा निजले मेरो कुरा नसुनी एकाएक बैंकलाई कर्जा तिर्न सक्षम छु भनी विश्वस्त तुल्याई निजकै नाममा बैंकबाट ऋण लिई उल्लिखित कार खरिद गरेको भनी स्पष्टरूपमा उल्लेख गरेको देखिँदा प्रत्यर्थी वादीका नाममा रहेको वा. ९च. ५६८५ नं. को सवारी साधन वादीले निजी रूपमा बैंकबाट ऋण लिएर खरिद गरेको कुरालाई स्वीकार गरेको देखिन्छ । निजको यस प्रतिउत्तर जिकिरबाट उक्त सवारी साधन सगोलको रकमबाट खरिद नभएको कुरा निज पुनरावेदक प्रतिवादी स्वयंले स्वीकारेको देखिने।

तत्कालीन मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको महलको १८ नं. मा कुनै अंशियारले आफ्नो ज्ञान वा सिप वा प्रयासबाट निजी आर्जन गरेको सम्पत्ति आफूखुसी गर्न पाउँछ, बन्डा गर्न कर लाग्दैन भनी निजी आर्जनको सम्पत्ति अंशियारहरूका बिच बन्डा नलाग्ने भनी स्पष्ट व्यवस्था गरेको पाइन्छ। प्रत्यर्थी वादी प्राची रायमाझी कार्कीले वा. ९च. ५६८५ नं. को सवारी साधन सगोलमै रहँदा आफ्नै प्रयासमा आफ्नै नामबाट बैंकबाट ऋण लिई खरिद गरेको देखिन आयो। उक्त सवारी साधन सगोलको ऋणबाट वा सगोलको सम्पत्तिबाट खरिद गरेको नदेखिई निजले आफूले बैंकबाट व्यक्तिगत ऋण लिई खरिद गरेको निजी स्वआर्जनको सम्पत्ति देखिएबाट उक्त वा. ९च. ५६८५ नं. को सवारी साधन तत्कालीन मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको महलको १८ नं. अनुसार वादी प्रतिवादीबिच बन्डा लाग्ने देखिन नआउने।

अतः सगोलको सम्पत्ति खर्च गरी उक्त सवारी साधन खरिद गरेको भनी पुनरावेदक प्रतिवादीले लिएको जिकिर निजले प्रमाणित गर्न नसकेको र वादी प्रतिवादीको तायदातीमा उल्लेख नै नगरेको बा ९च. ५६८५ नं. को सवारी साधन बन्डा लाग्नुपर्छ भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने।

तसर्थ, उच्च अदालत पाटनको मिति २०७४।१०।१४ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृतः ध्रुवबहादुर कुँवर

कम्प्युटर - हर्कमाया राई

इति संवत् २०७६ साल फागुन २ गते रोज ६ शुभम्।

१९

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७२-CR-१४४०, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. अलिराज मिया पवरियासमेत*

मृतकको Autospy Report (शव परीक्षण प्रतिवेदन) मा The cause of death is due to shock or a result massive haemorrhage from lever by stab injury. (मृतकको मृत्यु धारिलो हतियारको चोट कलेजोमा लागी अत्याधिक रक्तस्रावसमेतबाट भएको) भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ । त्यस्तै मृतकको लास रहेको स्थानको घटनास्थल लास प्रकृति मुचुल्का हेर्दा मृतकको लासको पेटमा १० इन्च लम्बाइ, ४ इन्च चौडाइ धारिलो हतियारको चोट परी आन्द्रा, भुँडी, मुटु, कलेजो बाहिर निस्केको र अन्य पाँच ठाउँमा आधा इन्च गोलाइको धारिलो हतियारको चोट रहेको भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ। यस्तो अवस्थामा मृतकको मृत्यु स्वाभाविक रूपमा भएको नभई कर्तव्यबाट भएको देखिन आउने।

मौकामा पक्राउ परेका प्रतिवादीहरूले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष कसुरमा साबित रही बयान गरेको लगायतका पुनरावेदन जिकिरका

सम्बन्धमा विचार गर्दा मौकामा गरेको प्रतिवादीहरूको साबिती बयानलाई वादी नेपाल सरकारले शंकारहित तवरले अन्य स्वतन्त्र ठोस सबुद प्रमाणहरूबाट पुष्टि गराउनुपर्ने हुन्छ । अनुसन्धानका क्रममा कागज गर्ने चश्मदिद भनिएका व्यक्ति तथा वादीका अन्य साक्षीहरूसमेतले अभियोग दाबीलाई खण्डित हुने गरी अदालतसमक्ष बकपत्र गरिदिएबाट मौकामा भएको प्रतिवादीको साबिती बयान वादीको कुनै पनि प्रमाण एवम् साक्षीबाट समर्थन हुन सकेको देखिएन । अभियोगमा दसीका रूपमा देखाइएका घडी, कपडा, चप्पलमध्ये कुनै पनि समान मेरो होइन भनी मौकामा पक्राउ परेका प्रतिवादीहरू अलिराज मिया पवरिया र सुल्तान मिया पवरियाले अदालत समक्षको बयानमा लेखाएको देखिन्छ । यसरी बरामद भएको भनिएका सामानहरू मौकामा पक्राउ परेका प्रतिवादीहरू कै हो भन्ने ठोस सबुत प्रमाण वादी पक्षले पेस गरी प्रतिवादीहरूउपरको दाबी पुष्टि गर्न सकेको पनि पाइँदैन । त्यसैगरी घटनास्थलबाट बरामद भएको रगत लागेको गम्छा परीक्षण हुँदा Human blood पाइएको भनी परीक्षण प्रतिवेदन आए पनि उक्त रगत मृतकको नै हो होइन भन्ने सम्बन्धमा परीक्षण भई यकिन भएको देखिँदैन । वादी पक्षका साक्षीहरूले अदालतसमक्ष अनुसन्धानको क्रममा आ-आफूले गरेको बेहोरा कागजको विपरीत हुने गरी बकपत्र गरेको मिसिलबाट देखिन्छ । प्रतिवादीहरूउपर लगाइएको अभियोग शंकारहित एवम् वस्तुनिष्ठ प्रमाणद्वारा पुष्टि नभएसम्म त्यस्ता अनुसन्धानका क्रममा खडा गरिएका प्रमाणका आधारमा मात्र कसैलाई कसुरदार कायम गर्न मिल्ने हुँदैन । प्रतिवादीहरू अनुसन्धानका क्रममा साबित भए तापनि अदालतमा बयान गर्दा कसुरमा पूर्ण इन्कार रहेको तथा निजहरूको मौकाको साबिती अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट समर्थन नभएको अवस्थामा कर्तव्य ज्यान जस्तो गम्भीर फौजदारी मुद्दामा अभियुक्तको अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष भएको साबिती बयानलाई मात्र आधार बनाई कसुरदार ठहर गर्नु फौजदारी न्यायको सिद्धान्तले समेत मिलेन । प्रतिवादीका साक्षीहरूले समेत प्रतिवादीहरू कसुरदार नभएको भनी तथा वादी पक्षका साक्षीहरूले समेत प्रतिवादीहरू निर्दोष रहेको भनी प्रतिवादीहरूको अदालतसमक्षको इन्कारी बयानलाई समर्थन हुने गरी बकपत्र गरेको अवस्थामा प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुर गरेको भनी अभियोग दाबीअनुसार सजाय गर्न मिल्ने नदेखिने । अन्य स्वतन्त्र प्रमाणद्वारा प्रतिवादीहरूउपरको अभियोग दाबी प्रमाणित नभएको अवस्थामा केवल अनुसन्धानका क्रममा भएको प्रतिवादीहरूको साबिती बयानकै आधारमा मात्रै प्रतिवादीहरूलाई कसुरदार ठहर गर्नु न्यायोचित नहुने हुँदा वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी सुरू पर्सा जिल्ला अदालतबाट मिति २०६७।०३।२७ र २०६७।०९।२८ मा भएको फैसला सदर गर्ने गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०७०।०९।०७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : सुदिप कुमार भट्टराई

कम्प्युटर : समी नेपाली

इति संवत् २०७७ साल पौष ६ गते रोज २ शुभम् ।

२०

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७४-CR-०९६५, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, शोभा सापकोटा अधिकारी वि. नेपाल सरकार*

मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐनअन्तर्गतको कसुर गरेको अभियोग लागेको प्रतिवादीले तथ्ययुक्त एवम् वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट आफ्नो निर्दोषिता प्रमाणित गराउन

सक्नुपर्नेमा यी प्रतिवादीले आफू निर्दोष रहेको तथ्य वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट पुष्टि गर्न सकेको देखिएन। ऐनको उक्त व्यवस्थाबमोजिम जाहेरवालाको किटानी जाहेरी दरखास्त, पीडित एवम् जाहेरवालाको जाहेरी बेहोरा पुष्टि गर्दै अदालतमा आई गरेको बकपत्र र पीडितलाई काममा लगाइदिने भनी आफूले नेपालबाट भारतमा लगी त्यही छोडी आएको तथ्य स्वीकारी अदालतमा समेत बयान गरेको अवस्थामा केवल मैले बिक्री वितरण गर्न लगेको होइन भनी लिएको जिकिरको आधारमा मात्र यी प्रतिवादी शोभा सापकोटा अधिकारीलाई निर्दोष मान्न सकिने अवस्था नदेखिने।

जाहेरी दरखास्तलाई पीडितको प्रमाणित बकपत्र, प्रतिवादीको बयान तथा जाहेरवालाको बकपत्रले पुष्टि गरेको छ । प्रतिवादीले पीडितले नै जागिर खोजिदेउ भनेकाले जागिर लगाइदिन भारतमा लगेकी भनी जिकिर लिए पनि प्रतिवादीले सो कुराको पुष्टि गर्न सकेको देखिँदैन । मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ अन्तर्गतको अपराधमा प्रमाणको भार सम्बन्धमा विशेष किसिमको व्यवस्था गरेको देखिन्छ। कुनै पनि व्यक्तिउपर कसुरको आरोप लागेपछि सो कसुर आफूले गरेको होइन भन्ने कुराको प्रमाण निजले नै पुऱ्याउनुपर्ने हुन्छ। प्रतिवादीले पीडितलाई बिक्री गरेको होइन, पीडितबाट आफूले कुनै पनि लाभ लिएकी छैन भनी जिकिर लिए पनि कुनै प्रकारको फाइदा लिई वा नलिई वेश्यावृत्तिमा लगाएमा पनि मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार गरेको मानिने भनी उक्त ऐनको दफा ४(१)(ख) मा उल्लेख भएको अवस्था र प्रतिवादीले आफूले कसुर गरेको होइन भनी तथ्ययुक्त प्रमाणले सो जिकिर प्रमाणित गर्न नसकेको हुँदा प्रतिवादीले पीडितलाई विदेश भारतमा लगि वेश्यावृत्तिमा लगाएको भन्नेसमेत देखिन आउने।

प्रतिवादीले कम्पनीमा काममा लगाइदिन्छु भनी भारतमा लगी व्यक्तिको घरमा छोडी काममा नलगाई यौन धन्दामा लगाएको भन्ने कुरा पीडितको बयान बकपत्रबाट पुष्टि भइरहेको, प्रतिवादीले पीडितलाई छोडी नेपाल आएको भन्ने मिसिल कागजातबाट देखिएको, पीडितले अदालतमा आएर बकपत्र गरिसकेको अवस्थामा पीडितको बकपत्रले नै प्रामाणिक महत्त्व राख्ने हुँदा पीडितको बयान प्रमाणित गराएको कार्यलाई अन्यथा भन्न मिल्दैन । आपराधिक कार्यबाट अपराध गर्ने मनसाय प्रतिबिम्बित हुन्छ । पीडितलाई प्रतिवादीले काममा लगाइदिन्छु भनी भारतमा लगेको, यो यति तलबमा यो काम गर्न काममा लगाइदिएकी हुँ भनी प्रतिवादीले बयानमा भन्न नसकेकी, जाहेरवाला र पीडितको बकपत्रबाट प्रतिवादीले बिक्री गरेको र यौनधन्दामा लगाएको भन्ने देखिएको अवस्थामा प्रतिवादीको कसुर गर्ने मनसाय थिएन भन्न मिल्ने नहुने।

जाहेरवालाको किटानी जाहेरी दरखास्त, जाहेरवाला र पीडितले अदालतमा आएर जाहेरी बेहोरालाई समर्थन गरी बकेको बकपत्र, प्रतिवादीको मौका र अदालतसमक्षको बयान, मौकामा बुझिएका मानिसका बकपत्रसमेतका मिसिल संलग्न प्रमाणबाट प्रतिवादी शोभा सापकोटा अधिकारीले अभियोग दाबीबमोजिम कसुर गरेको देखिन आएको र उल्लिखित प्रमाणलाई खण्डित हुने गरी आफूले कसुर गरेकी होइन भनी प्रतिवादीले प्रमाणको भार पुऱ्याउन सकेको अवस्था मिसिलबाट नदेखिँदा अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउँ भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रण ऐन, २०६४ को दफा ३ मा कसैले पनि मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार गर्न हुँदैन भनी ऐनले निषेध गरेको छ भने सोही ऐनको ४(१) (ख) मा फाइदा लिई वा नलिई वेश्यावृत्तिमा लगाउने भन्ने ४(२) (ख) मा वेश्यावृत्तिमा लगाउने उद्देश्यले नेपालभित्रको एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा वा विदेशमा लैजान वा अरू कसैलाई दिने कार्य गरेमा मानव ओसारपसार गरेको मानिन्छ भन्ने कानूनी

व्यवस्था भएको देखिन्छ। प्रतिवादी शोभा सापकोटा अधिकारीले जाहेरवालाको छोरी नाम परिवर्तित ०४९-१३(०७३/०७४) लाई रोजगारीमा लगाइदिन्छु भनी प्रलोभनमा पारी नेपालबाट भारतको देहरादुन हुँदै चण्डीगढसम्म पुऱ्याई यौनधन्दामा लगाई अभियोग दाबीबमोजिम मानव बेचबिखन ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ३(१) र ४(१) को खण्ड (क) र (ख) ले निषेधित कार्य गरेको पुष्टि हुन आएको हुँदा निज प्रतिवादीलाई सोही ऐनको सोही ऐनको दफा १५ (१) को खण्ड (क) बमोजिम २० (बिस) वर्ष कैद र रू. २, ००, ०००।- (दुई लाख रूपैयाँ) जरिवाना हुने र पीडितले क्षतिपूर्तिसमेत भराइपाउने ठहऱ्याएको सुरू चितवन जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने।

अतः प्रतिवादी शोभा सापकोटा अधिकारीलाई मानब बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ३(१) र ४(१) को खण्ड (क) र (ख) ले निषेधित कार्य गरेको पुष्टि हुन आएको हुँदा निज प्रतिवादीलाई सोही ऐनको दफा १५(१) को खण्ड (क) बमोजिम २० (बिस) वर्ष कैद र रू. २, ००, ०००।- (दुई लाख) जरिवाना हुने र अनुसन्धानका क्रममा बुझी पेस भएको प्रतिवेदनबाट प्रतिवादीको आर्थिक हैसियत कमजोर रहेको भन्ने खुल्न आएको हुँदा पीडित नाम परिवर्तित ०४९-१३(०७३/०७४) ले सोही ऐनको दफा १७(१)(क) बमोजिम रू. १, ००, ०००।- (एक लाख) क्षतिपूर्ति दफा १४ बमोजिमको पुन:स्थापना कोषबाट भराइपाउने ठहर गरेको उच्च अदालत पाटन, हेटौंडा इजलासको मिति २०७४।७।७ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। पुनरावेदक प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत : ध्रुवबहादुर कुँवर

कम्प्युटर : समी नेपाली

इति संवत् २०७६ कार्तिक २४ गते रोज १ शुभम्।

२१

**मा.न्या.श्री मीरा खडका र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०६७-CI-०१८६, करारको यथावत परिपालना गराइपाऊँ, सिर्जना श्रेष्ठ (भण्डारी) वि. रेश्मा श्रेष्ठ*

पुनरावेदकका पति भेषराज श्रेष्ठ र प्रत्यर्थी प्रतिवादी रेश्मा श्रेष्ठबिच दाबीको कि.नं. ४ को जग्गा रू. तिस लाख लिई रजिस्ट्रेसन गरिदिएको, १४ प्रतिशतले हुने रकम ब्याज बुझाउने तथा रजिस्ट्रेसन पास भएको मितिले ५ वर्षभित्र रकम फिर्ता बुझाएमा प्रथमपक्षको नाममा पारित भएको उक्त घरजग्गा द्वितीय पक्षका नाममा फिर्ता रजिस्ट्रेसन पास गरिदिनुपर्ने सर्त राखी मिति २०६३।०३।०२ मा करारनामाको कागज भएको देखिन्छ। उक्त करारनामा कागज सम्बन्धित निकायबाट रजिस्ट्रेसन पारित भएको देखिँदैन। करार ऐन, २०५६ को दफा ८८ मा *"प्रचलित कानूनले कुनै खास प्रकारको करार गर्न कुनै खास कार्यविधि पूरा गर्नुपर्ने व्यवस्था गरेको वा कुनै सरकारी कार्यालयमा रजिस्ट्रेसन गर्नुपर्ने व्यवस्था गरेको रहेछ भने त्यस्तो रीत पूरा नगरी भएको करार मान्य हुने छैन"* भनी उल्लेख भएको पाइन्छ। मुलुकी ऐन, रजिस्ट्रेसनको महलको १ नं. मा *"अचल सम्पत्ति भएकाको मानु छुट्टिएको वा मानु जोरिएको लिखत र अरू गैह्र अचल सम्पत्तिको देहायमा लेखिएबमोजिमको लिखत गर्दा गराउँदा रजिस्ट्रेसन गराउनुपर्दछ"* भनी देहाय १ मा *"बिक्री गरी वा अरू कुनै किसिमले हक छाडी दिएको लिखत"* भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ। यसरी करार ऐन, २०५६ को दफा ८८ र मुलुकी ऐन, रजिस्ट्रेसनको महलको १ नं. मा भएको उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाहरू एकआपसमा अन्तर सम्बन्धित रहेको देखियो। उक्त कानूनी व्यवस्थाहरूले अचल सम्पत्तिको सम्बन्धमा सामान्य प्रक्रियाबाट पक्षहरूले आपसी सम्झौता गरी सम्पन्न भएको करारीय सम्झौताले सम्बन्धित सरकारी कार्यालयबाट रजिस्ट्रेसन पारित भएपछि मात्र रीत पुगी पूर्णता प्राप्त

गरी करारको रूपमा मान्य हुन सक्ने देखिन आयो । करार गर्ने पक्षहरूले कानूनले तोकेबमोजिमको प्रक्रिया पूरा गरी अचल सम्पत्तिको करारीय लिखतलाई रजिस्ट्रेसन गरी वैधानिकता प्रदान नगरेको अवस्थामा अदालतले त्यस्तो लिखतलाई कार्यान्वयनयोग्य करार हो भनी मान्न मिल्ने देखिएन । तसर्थ पुनरावेदक/वादी रेश्मा श्रेष्ठ र प्रत्यर्थी/प्रतिवादी सिर्जना श्रेष्ठ(भण्डारी) का पति भेषराज श्रेष्ठबिच मिति २०६३ ।०३ ।०२ मा भएको करारीय लिखत रजिस्ट्रेसन पास भएको नदेखिँदा उक्त करारजन्य लिखतले वैधानिकता प्राप्त गर्न सक्ने अवस्था देखिन आएन । यसै सन्दर्भमा यस अदालतबाट पुनरावेदक/वादी तुलारत्न बज्राचार्य प्रत्यर्थी/प्रतिवादी चेतसुन्दरको मु. स. गर्ने तारा श्रेष्ठ पात्रवंश भएको ०६६-DF-००१९ को करार बमोजिम दायित्व पूरा गराइपाउँ मुद्दामा बृहत पूर्ण इजलासबाट " *अचल सम्पत्तिको सम्बन्धमा भएको करारले करार ऐन, २०५६ को दफा ८८ तथा मुलुकी ऐन, रजिस्ट्रेसनको महलको १ नं. को व्यवस्थाअनुसार रजिस्ट्रेसन नभएको अवस्थामा वैधानिकता (मान्यता) प्राप्त गर्न र कार्यान्वयन हुन सक्ने अवस्था नहुने भनी कानूनी सिद्धान्त स्थापित भएकोले प्रस्तुत व्याख्या एवम् सिद्धान्तसँग सामञ्जस्यता नराख्ने तथा करार ऐन, २०५६ को दफा ८८ तथा मुलुकी ऐन, रजिस्ट्रेसनको महलको १ नं. को कानूनी व्यवस्थाबमोजिम रजिस्ट्रेसन नभएको बैनाबट्टाको लिखतबाट अचल सम्पत्तिको हक हस्तान्तरण हुन सक्ने गरी यस अदालतबाट यसअघि प्रतिपादित भएका सम्पूर्ण सिद्धान्त (ने.का.प. २०६५ नि. नं. ७९१५ समेत) एवम् नजिरहरू आजैका मितिबाट कायम नरहने गरी अमान्य र निष्प्रभावी (Overrule) हुने ठहर्छ* " भनी मिति २०७६ ।०३ ।२९ मा फैसला भएको देखिन्छ । यस अदालतको उक्त फैसलासमेतका आधारमा पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अत: तत्कालीन मुलुकी ऐन, अ.बं. ७३ नं., करार ऐन, २०५६ को दफा ८८, तत्कालीन मुलुकी ऐन, रजिस्ट्रेसनको महलको १ नं. समेतका आधार प्रमाणबाट तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६६ ।११ ।१७ मा वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहऱ्याई भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत : सुदिपकुमार भट्टराई

कम्प्युटर: हर्क माया राई

इति संवत् २०७७ साल माघ २६ गते रोज २ शुभम् ।

## इजलास नं.४

२२

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.,** *०७१-CI-०५७८, घर जग्गा खिचोला चलन, दुर्वल तिवारसमेत वि. रामचन्द्र साह तेली*

दाबीको कि.नं. ४० को जग्गा ऐलानी भई वादीको पिताले घर बसोबास गरी आएको भन्नेसम्म फिल्डबुकबाट देखिन्छ । भोग बसोबासलाई सम्म उक्त उल्लेखनले पुष्टि गरेको छ । यीनै फिल्डबुकमा उल्लिखित जोताहा भनी जनिएका वादीका पिता बद्री तिवारीले सो कि.नं. ४० को पश्चिमतर्फ मिति २०२२।११।२५ र २०२२।१२।१५ मा ०-०-१० धुर जग्गा प्रतिवादी रामचन्द्र तेलिलाइ घरसारमा बिक्री गरेको र सो लिखतमा ऋणी वादीसँग बस्ने हकवाला भाइ दरबारी तिवारीसमेत साक्षी बसेको देखिन्छ । वादीले प्रतिवादीबाट पेस गरेको उक्त घरसारको लिखतलाई सद्दे होइन किर्ते हो भनी मिति २०६४।९।२६ मा बयान गरेको देखिने ।

उक्त लिखतहरू मिति २०२२।११।२५ र २०२२।१२।१५ मा भएको समयमा लागु रहेको मुलुकी ऐन, २०२० को रजिस्ट्रेसनको २ नं. मा यसै महलको

१ नम्बरबमोजिम रजिस्ट्रेसन गराउन पर्ने लिखत भए पनि बढीमा एक सय रूपैयाँसम्मको बन्धकी, राजिनामा र जतिसुकै रूपैयाँको भए पनि कपाली तमसुक रजिस्ट्रेसन नगरी घरसारमा गरे पनि सदर हुन्छ भन्ने तत्कालीन कानूनी व्यवस्था रहेको।

रजिस्ट्रेसनको महलको २ नं. मा भएको व्यवस्था मुलुकी ऐन, (सातौ संशोधन) २०३४ मिति २०३४।९।२७ मा लालमोहर र प्रकाशन भई सो मितिबाट खारेज भएको अवस्था देखिन्छ । सो विवादित लिखतहरू रजिस्ट्रेसनको महलको २ नं. लागु रहेको अवस्था अर्थात २०३४।९।२७ अघिनै भए गरेको देखिँदा सो लिखतहरूलाई कानूनबमोजिम भएको लिखत भनी मान्नुपर्ने।

तत्कालीन पुनरावेदन अदालतबाट सो लिखतहरू बिशेषज्ञबाट जाँच गर्न पठाएको रहेछ । राष्ट्रिय विधि विज्ञान प्रयोगशालाबाट मिति २०६८।११।१२ को पत्रसाथ प्राप्त परीक्षण प्रतिवेदन हेर्दा लिखतमा ऋणी भएका बद्री तिवारीको सहीछापहरू सोही कि.नं. ४० को फिल्डबुकमा बद्री तिवारीले गरेको दस्तखतसँग मिलेको छ । साथै निज बद्री तिवारीले २०३२।६।१३ मा भूमि प्रशासन कार्यालय रौतहटमा र. नं. ७८८ को राजीनामामा भएको ल्याप्चेसँग उक्त लिखतमा भएको ल्याप्चे मिल्दछ भनी राय व्यक्त भएको छ। सो रायलाई समर्थन गरी विशेषज्ञ बासुदेव के.सी. ले यस अदालतमा आई बकपत्रसमेत गरेको देखिँदा उक्त रायलाई अब प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १८ बमोजिम प्रमाणमा ग्रहण गर्न मिल्ने।

विवादित २०२२।११।२५ र २०२२।१२।१५ गतेको घरसारका रू. ९९।- को लिखतहरूमा भएको कारणीको ल्याप्चे र दस्तखत कारणीको नमुनाको लागि पठाइएको ल्याप्चे र दस्तखतहरूसमेत मिलेभिडेको अवस्थामा त्यस्तो लिखतहरूलाई सद्दे साँचो लिखत नै मान्नुपर्ने।

यसै मुद्दाको लगाउमा रहेको ०६६-CI-०११४ को मुद्दामा मिति २०६३।८।१८ मा भएको नक्सा मुचुल्कामा पनि यो विवादित घरजग्गा उसैबखत प्रतिवादीको भोगचलनमा रहेको भन्ने देखिन आएको छ । प्रस्तुत मुद्दामा मिति २०६५।५।२१ मा भएको नक्सा मुचुल्कामा पनि न.नं. २ मा प्रतिवादी रामचन्द्रको घर भोग बसोबास रहेको भनी जनिएको छ। सो न. नं. २ मा ०-०-१० जग्गा निज प्रतिवादीले भोग गरेको देखिन्छ। निजले ०-०-१० धुर जग्गासम्म भोग गर्न पाउने उक्त घरसारको लिखतबाट देखिन्छ। यस अवस्थामा धुर अर्थात् ०-०-०. ७५ जग्गा बढी निज प्रतिवादीले भोग गरेको देखिने।

प्रतिवादीले पेस गरेको मिति २०२२।११।२५ र २०२२।१२।१५ को फार्छा राजीनामा लिखतहरू सद्दे साँचो देखिई सो लिखतहरू कानूनबमोजिम नै भएको देखिन्छ। सो फार्छा राजीनामा लिखतहरूबाट पुनराबेदक वादिको स्व. बाबु बद्री तिवारीबाट कि.नं. ४० को पश्चिमतर्फबाट घरसहितको ०-०-१० (दस धुर) जग्गा प्रतिवादीमध्येका रामचन्द्र साह तेलीले लिएको देखिएको छ। विवादित न. नं. २ प्रतिवादीको घर बसोबासको जग्गा सो कि.नं. ४० को पश्चिमतर्फ नै रहेको देखिएबाट विवादित न.नं. २ को ०-०-१० मध्येको घर र घरले चर्चेको दश धुर जग्गासम्म प्रतिवादी रामचन्द्र साह तेलीको भोग स्वामित्वभित्रको देखिन आई प्रतिवादीहरूको भोग कायम हुन सक्ने।

कि.नं. ४० को जग्गा ०२२/०२३ को सर्भेमा बद्री तिवारीको नाउँमा मोही महलमा लेखिएको भन्ने कुरा छ। उक्त कि.नं. ४० को जग्गा जग्गाधनी प्रमाणपत्र प्राप्त जग्गा नभई घरबासको ऐलानी जग्गा भएको र सम्पूर्ण जग्गा बद्री तिवारीले हस्तान्तरण गरेको नभई ०-०-१० सम्म उक्त मिति २०२२।११।२५ र २०२२।१२।१५ को लिखतद्वारा हस्तान्तरण गरेकोबाट ऐलानी जग्गा भोग बसोबास गर्ने प्रयोजनको लागि घरसारको लिखतबाट हस्तान्तरण भएको प्रमाणबाट पुष्टि हुन आएको।

नक्सा मुचुल्कामा अङ्कित न. नं. २ को सम्पूर्ण जग्गामा घर बनाई खिचोला गरेको ठहर गरेको सुरू रौतहट जिल्ला अदालतको मिति २०६६।८।१६ को फैसला केही उल्टी गरी न. नं. २ को घरदेखिबाहेकको ०-०-०. ७५ जग्गासम्ममा प्रतिवादीले खिचोला गरेको ठहरी वादीले चलनसमेत चलाइपाउने गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत हेटौंडाबाट मिति २०६९।०३।२५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृतः सरोजनिधि वाग्ले

कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा (देबिना)

इति संवत् २०७६ साल असोज ६ गते रोज २ शुभम् ।

यसै प्रकृतिका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०७०-CI-००८३, घर जग्गा खिचोला चलन, शान्तिदेवी वि. दुर्वल तिवारीसमेत ।
- ०६९-CI-०३३६, निषेधाज्ञा, दुर्वल तिवारीसमेत वि. रामचन्द्र साह तेलीसमेत ।
- ०६६-CI-०११४, जग्गा खिचोला घर उठाई चलान, विष्णु तिवारी भन्ने विष्णुकुमारी बाहुनीसमेत वि. दुर्वल तिवारीसमेत ।

२३

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७६-CR-०४१३, ज्यान मार्ने उद्योग, नेपाल सरकार वि. बलबहादुर शाही*

कुटपिटको वारदातमा प्रतिवादीसँग चोट पुर्‍याउने उद्देश्य निहित रहे तापनि निजमा सो चोटबाट आउने परिणामको पूर्वजानकारी रहेको हुँदैन भने मूलतः ज्यान मार्ने उद्योगमा प्रतिवादीले पूर्वतयारीका साथ मार्ने मनसाय राखी पीडितउपर कार्य गरेको हुने ।

प्रस्तुत मुद्दामा वादी पक्षबाट प्रतिवादी बलबहादुर शाहीले पीडितहरू भद्रु शाही तथा पानसरी शाहीउपर ज्यान मार्ने उद्योगको कसुर गरेको देखिने कुनै पनि वस्तुगत प्रमाण पेस हुन सकेको पाइँदैन । यस अवस्थामा शंकाको सुविधा अभियुक्तले पाउने नै हुन्छ । तसर्थ, वारदातको प्रकृति, पीडितको घाउ चोटको अवस्थासमेतबाट प्रस्तुत वारदात ज्यान मार्ने उद्योगअन्तर्गत पर्ने नभई कुटपिटअन्तर्गत पर्ने हुँदा मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा ४२ बमोजिम प्रस्तुत मुद्दा कुटपिटमा परिणत हुने ठहर गरी उच्च अदालत सुर्खेतबाट भएको फैसला मनासिब देखिँदा प्रतिवादी बलबहादुर शाहीलाई ज्यान मार्ने उद्योगमा कारबाही गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः उल्लिखित आधार कारणबाट, प्रतिवादी बलबहादुर शाहीले पीडितहरू भद्रु शाही तथा पानसरी शाहीउपर ज्यान मार्ने उद्योगको कसुर गरेको तथ्य मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकी प्रतिवादी र पीडितहरूका बिचमा कुटपिटसम्म भएको हो कि भन्ने कुरा विचारणीय रहेको देखिँदा, निज प्रतिवादीलाई ज्यान मार्ने उद्योगको कसुरमा ५ वर्ष कैद हुने ठहर्‍याई सुरू जाजरकोट जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।१०।२४ मा भएको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादी बलबहादुर शाहीले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने तथा प्रस्तुत मुद्दा कुटपिटमा परिणत हुने ठहर गरी उच्च अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७६।३।८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: वसन्तप्रसाद मैनाली

कम्प्युटर: राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०७७ साल आषाढ ५ गते रोज ६ शुभम् ।

२४

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७७-WH-००७५, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, गुरू भन्ने सन्तोष कटुवाल वि. मोरङ जिल्ला अदालतसमेत*

प्रस्तुत निवेदकले कर्तव्य ज्यान कसुर गरेकोमा मोरङ जिल्लामा मिति २०७०।०९।०९ को वारदात घटनाको सम्बन्धमा मिति २०७०।१२।११

मा अभियोग दाबी रही सो वारदातपश्चात् निज निवेदक फरार रहेको भन्ने तथ्य मिसिलबाट देखिन्छ । निज निवेदक मोरङ जिल्लामा कसुर गरी फरार रहेको अवस्थामा काठमाडौं जिल्लामा रहजनी चोरी कसुर गरेकोमा मिति २०७१।१२।१८ मा पक्राउ परेको देखिन्छ। एक स्थानमा कसुर गरी फरार रही भागिरहेको अवस्थामा सोही कसुरदारले अन्यत्र गई अर्को कसुर गरेको हुनाले त्यस्ता पटके कसुरदारलाई थप कैदको सजाय हुने उक्त दण्ड सजायको महलको ४१ नं. को अन्तिम वाक्यांशको मनसाय रहेको देखिन्छ । यसरी निवेदक प्रतिवादी भई काठमाडौं जिल्ला अदालतमा चलेको रहजनी चोरी मुद्दा र मोरङ जिल्ला अदालतमा चलेको कर्तव्य ज्यान मुद्दा मूलत: फरक फरक अस्तित्वको देखिन्छ । यी दुई मुद्दामा अलग वारदात भई छुट्टाछुट्टै मुद्दा चलेको हुनाले यी दुई पृथक् मुद्दामा निज प्रतिवादी निवेदकलाई हुने सजायसमेत अलग नै हुने।

यस्तो अवस्थामा साबिक मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको ४१ नं. को अन्तिम वाक्यांश तथा सर्वोच्च अदालतबाट प्रतिपादित उल्लिखित सिद्धान्तहरूसमेतका आधारमा निवेदकलाई काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट कारबाही भई फैसला भएको रहजनी चोरी मुद्दामा भुक्तान गरेको कैद सजायमा निवेदकको मागबमोजिम मोरङ जिल्ला अदालतबाट पछि भएको फैसलाले लागेको कैद सजायसँग मिलान हुनसक्ने अवस्था विद्यमान रहेको नदेखिने।

कुनै व्यक्तिलाई संविधानद्वारा प्रदत्त वैयक्तिक स्वतन्त्रतामा अङ्कुश लाग्ने गरी गैरकानूनी रूपले थुनामा राखेको वा कुनै निकायको गैरकानूनी क्रियाकलाप वा निर्णयका आधारमा बदनियतपूर्वक थुनामा राखेको भन्ने स्थिति देखिन आएमा अदालतबाट बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी भई त्यस्तो व्यक्तिको वैयक्तिक स्वतन्त्रताको संरक्षण हुने हो। प्रस्तुत रिट निवेदकलाई मोरङ जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलाबमोजिमको कैदी पुर्जी दिई हाल थुनामा राखिएको अवस्था छ । फरक फरक स्थानमा कसुर गरी भागिरहेको अवस्थामा निवेदक पक्राउ परेको भन्ने निजउपर विभिन्न अदालतमा चलेका भिन्न-भिन्न मुद्दाहरूमा निजलाई सजाय ठहर भएको तथ्यबाट पुष्टि हुने।

सर्वोच्च अदालतबाट संजिव लामा विरूद्ध कारागार कार्यालय डिल्लीबजारसमेत भएको बन्दीप्रत्यक्षीकरण) ने.का.प. २०६९, अङ्क ५, नि.नं.८८३५ (मुद्दामा "बेग्ला–बेग्लै वारदात भई चलेका बेग्ला–बेग्लै मुद्दामा अघिल्लो मुद्दामा पुर्पक्षका लागि थुनामा बसेको अवधिलाई पछिल्लो मुद्दामा लागेको कैद, जरिवाना असुल गर्ने प्रयोजनका लागि गणना गर्न नमिल्ने । म्याद थपको क्रममा वा अभियोगपत्रसाथ पेस गरिएको अवस्थामा बाहेक अन्य अवस्थामा अदालतमा उपस्थित भई बयान गरेपछि मात्र निजउपर लागेको मुद्दामा निजको उपस्थिति रहेको मान्नुपर्ने।" भनी न्यायिक व्याख्यासमेत भएको पाइन्छ। प्रस्तुत रिट निवेदनमा निज निवेदक विरूद्ध काठमाडौ जिल्ला अदालतमा चलेको रहजनी चोरी मुद्दा र मोरङ जिल्ला अदालतमा चलेको कर्तव्य ज्यान मुद्दा बेग्ला बेग्लै वारदात भई चलेको मुद्दा भएको कारण काठमाडौं जिल्ला अदालतमा चलेको मुद्दामा थुनामा बसेको अवधिलाई मोरङ जिल्ला अदालतबाट लागेको कैद असुल गर्ने प्रयोजनको लागि गणना गर्न मिल्ने नदेखिने।

निवेदक मोरङ जिल्लामा मिति २०७०।९।९ को वारदातमा भएको ज्यानसम्बन्धी मुद्दामा कसुर गरी भागी फरार रही मोरङ जिल्ला अदालतबाट निजको नाममा जारी भएको मिति २०७०।१२।११ को वारेन्ट म्याद पुर्जीभित्रको म्यादमा अदालतमा उपस्थित भएको देखिँदैन। निज प्रतिवादीलाई सो कसुरमा बयान गर्न मिति २०७२।१०।५ मा कारागार मार्फत उपस्थित गराई थुनामा राख्ने गरी थुनछेकको आदेश भएको

हुँदा सोही अदालतमा बयान गर्न उपस्थित भएको मिति २०७२।१०।५ लाई मोरङ जिल्ला अन्तर्गतको ज्यानसम्बन्धी कसुरमा हाजिर भएको मिति कायम गरी सोही मितिबाट दण्ड सजायको महलको ४१ नं. बमोजिम थप कैद गर्नुपर्ने हुन आउँछ । साथै, यसरी बेग्ला बेग्लै ठाउँमा कसुर अपराध गर्ने प्रतिवादीको हकमा सो अदालतमा निज उपस्थित भई बयान गरेको मितिबाट नै थुनामा बसेको अवधी कायम हुने हुँदा सोही आधारमा कैदकट्टा हुने गरी भएको कामकारबाहीमा त्रुटि देखिन नआउने ।

मोरङ जिल्ला अदालतबाट निज निवेदक मिति २०७२।१०।०५ मा बयानको लागि उपस्थित भई सोही मितिदेखि पुर्पक्षको लागि थुनामा रहेको हुनाले उक्त मितिबाट नै निजलाई ठहर भएको ५ वर्ष कैद सजायको कैदकट्टा हुने भनी भएको फैसलाबमोजिमको निवेदकलाई दिइएको कैदी पुर्जी तथा सो कैदी पुर्जीबमोजिम निवेदकलाई थुनामा राखेको कार्यसमेत गैरकानूनी र त्रुटिपूर्ण देखिन आएन। रिट निवेदक अदालतको फैसलाबमोजिम जारी भएको कानूनबमोजिमको कैदी पुर्जीअनुसार नै थुनामा रहेको देखिएकाले निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिने ।

रिट निवेदकलाई मोरङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०७३।०३।१९ मा भएको फैसलाबमोजिम लागेको कैद सजाय भुक्तान गर्न सो अदालतको च. नं. १८०९६ मिति २०७३ ।११ ।०९ को कैदी पुर्जी अनुसार थुनामा राखेको देखिँदा निवेदकको थुना गैरकानूनी नभएकाले बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरी निजलाई थुनामुक्त गर्नुपर्ने अवस्था विद्यमान नरहेकोले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृतः मनिता गुरूङ

कम्प्युटर: राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०७७ साल असोज २९ गते रोज ५ शुभम्।

२५

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७५-CR-२३२८, ०७५-CR-२३७६, कर्तव्य ज्यान, बज्रसिंह लामा तामाङसमेत वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. कुमार लामा*

प्रतिवादीहरूले अनुसन्धान अधिकृत तथा अदालतसमक्ष बयान गर्दा वारदातमा निजहरूको उपस्थिति रही मृतकलाई हातपात तथा प्रहार गरेको तथ्यलाई स्वीकार गरेको देखिन्छ । साथै, निज प्रतिवादीहरूले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष मृतकको हात खुट्टा समाई निजको मुख घाँटी च्यापी सास फेर्न नदिई शरीरको विभिन्न भागमा लात्ती मुक्काले प्रहार गरी मारेका हौं भनी बयान गरेका छन् । मृतकको शरीरमा निलडामलगायतका घा खतहरू रहेको भन्ने लासजाँच मुचुल्का तथा स्वास फेर्न अवरोध गरी निसास्सिएर (Smothering) मृत्यु भएको भन्ने शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट देखिन आएको हुँदा निज प्रतिवादीहरूले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको बयान उक्त प्रमाणहरूबाट समर्थित भएको पाइन्छ । अदालतमा समेत मृतकसँग झैझगडा वादविवाद भएको, एक/एक थप्पड प्रहार गरेको भनी वारदात भएको तथ्य प्रतिवादीहरूले स्वीकार गरेका छन् । एक थप्पड प्रहार गरेको कारण मृतकको मृत्यु हुन सक्ने हुँदैन । मृतकको मुख थुन्ने कार्य गर्दा सबै प्रतिवादीहरूको संलग्नतामा हात खुट्टा समात्ने क्रिया हुनु स्वाभाविक नै हुँदा निज प्रतिवादीहरूले मृतकलाई कुटपिट गरी नाक, मुख थिची मार्ने कार्यमा संलग्नता रहेकै पुष्टि हुन आउँछ । अतः यिनै प्रतिवादीहरूको कर्तव्यबाट मृतकको मृत्यु भएको तथ्य पुष्टि हुन आउने ।

मृतक पुष्करराज कार्कीले प्रतिवादीहरूलाई विभिन्न अपमानजनक शब्द प्रयोग गरी गालीगलौज गरेको कारण जनाई प्रतिवादीहरूले चार जनाको समूह भई निज मृतकलाई मार्ने सल्लाह गरी मृतकको

हातखुट्टा थिची, चल्न चटपटाउन नदिई, नाक मुख दबाई सास फेर्न नसक्ने बनाई कर्तव्य गरी मारी साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिमको कसुर गरेको पुष्टि हुन आएको छ । यस्तो अवस्थामा प्रतिवादीहरू बज्रसिंह लामा, रामबहादुर लामा, मानबहादुर लामा र बमबहादुर योञ्जनलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर गरी भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला केही उल्टी गरी निज प्रतिवादीहरूलाई जन्मकैदको मात्र सजाय हुने ठहराएको उच्च अदालत पाटनको फैसला न्यायको रोहमा अन्यथा गरिरहनु नपर्ने ।

प्रतिवादीहरूले मृतकको खल्तीबाट नगद रू. २,०००/- मात्र फेला पारेको र सो रकम निकाली लगेको भनी अनुसन्धान अधिकृत तथा अदालतसमक्ष आफ्नो बयानमा खुलाएका छन् । साथै अनुसन्धानको क्रममा प्रतिवादी रामबहादुर लामाको साथबाट रू.२,०००/- बरामद भएको भन्ने बरामदी मुचुल्का रहेको छ । मिसिल संलग्न कागजातबाट प्रतिवादीहरूले रू.२०००/- बाहेक अन्य धनमाल लिएर गएको भन्ने तथ्य कहीँकतैबाट खुल्न आउँदैन । यसप्रकार प्रतिवादीहरूको सँगसाथबाट केवल रू. २०००/- बरामद भएको र सोबाहेकको धनमाल मृतकबाट प्रतिवादीहरूले लिएको तथ्य पुष्टि भएको अवस्था छैन । यस्तो अवस्थामा सो बाहेकका अन्य धनमालहरू पनि निज प्रतिवादीहरूले मृतकको साथबाट लिएका हुन् भनी मान्न फौजदारी न्यायको मान्य सिद्धान्तसमेतबाट नमिल्ने हुँदा पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर प्रमाणित हुन नहुने ।

प्रतिवादी कुमार लामा स्वयंले गरेको मौकाको बयान तथा अदालतसमक्षको बयानमा समेत निजले वारदात घटाउनमा आफ्नो कुनै प्रकारको संलग्नता वा षड्यन्त्र नभएको भनी कसुरप्रति इन्कार रहेको देखिन्छ । त्यसैगरी, अन्य चार प्रतिवादीहरूसमेतले अनुसन्धान अधिकारीसमक्षको बयान तथा अदालतसमक्ष गरेको बयानमा पनि प्रतिवादी कुमार लामाको कुनै संलग्नता भएको वा निजहरूलाई यसो यसो गर्नु भनी निज कुमार लामाले कुनै निर्देशन दिएको अथवा कुनै षड्यन्त्र रचेको भनी कहीँकतै उल्लेख गरेको समेत पाइँदैन । मिसिल संलग्न किटानी जाहेरी, प्रतिवादीहरूको बयान, बुझिएका व्यक्तिहरूले लेखाएको बेहोरा तथा अभियोगपत्रसमेतबाट यी प्रतिवादी कुमार लामाले वारदात घटाउन षड्यन्त्र गरेका हुन भनी विश्वास दिलाउने प्रमाणहरू पेस गरी वादीपक्षले सो दाबी पुष्टि गर्न सकेको पनि देखिँदैन । यसरी मिसिल संलग्न तथ्य, प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी कुमार लामाउपर लिइएको अभियोग दाबी वस्तुनिष्ट तवरबाट स्थापित नै नभएको अवस्थामा निजलाई अभियोग दाबीबमोजिम दोषी ठहर गर्नु फौजदारी न्यायका मान्य सिद्धान्तविपरीत हुन जाने ।

प्रतिवादी कुमार लामा वारदात हुनुपूर्व अन्य मुख्य प्रतिवादीहरूको साथमा रही मृतकसँग वादविवादसमेत गरेको र अन्य प्रतिवादीहरूले वारदात घटाएपछि भोलिपल्ट सो वारदातको जानकारी प्रतिवादी कुमार लामाले पाएपश्चात् पनि वारदातको बारेमा कसैलाई खबर जानकारी नगराई भागेको हुँदा निजले साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. बमोजिमको कसुर गरेको पुष्टि हुन आएको छ । यस्तो अवस्थामा निज प्रतिवादी कुमार लामालाई ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. बमोजिम दुई वर्ष कैदको सजाय हुने ठहर गरी सुरू भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदरै हुने गरी भएको उच्च अदालत पाटनको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम प्रतिवादीहरू बज्रसिंह लामा, मानबहादुर लामा, रामबहादुर लामा र बमबहादुर/ युवराज भन्ने बमबहादुर योञ्जनलाई जन्मकैद हुने

ठहर गरेको उच्च अदालत पाटनको फैसला सदर हुने ठहरी फैसला भए तापनि यी प्रतिवादीहरूले अदालतमा आई मृतकलाई ४ जना नै प्रतिवादीहरूले १/१ थप्पडसम्म लगाएको भनी बयान गरेको अवस्था छ । निज प्रतिवादीहरूको मृतकलाई मार्नुपर्ने पूर्वरिसइवी रहे भएको देखिन आउँदैन । स्वयं मृतकले मादक पदार्थ सेवन गरी प्रतिवादीहरूलाई अपमानजनक शब्द प्रयोग गरी गाली गलौज गरेको भन्ने खुल्न आएको छ । यसका अतिरिक्त प्रतिवादीहरूको उमेर, मृतकलाई कुटपिट गरेका हौँ भनी अदालतमा समेत गरेको स्वीकारोक्ति तथा वारदात हुँदाको परिस्थितिसमेतलाई विचार गर्दा यी प्रतिवादीहरूलाई दाबीबमोजिम जन्मकैदको सजाय गर्दा चर्को पर्ने भएकोले प्रतिवादी कुमार लामाबाहेक अन्य प्रतिवादीहरूको हकमा साबिक मुलुकी ऐन, अ. बं. १८८ नं. बमोजिम १० (दश) वर्ष कैद सजाय हुने गरी उच्च अदालत पाटनबाट व्यक्त भएको रायसमेत मनासिब नै देखिने ।

प्रतिवादीहरू बज्रसिंह लामा, मानबहादुर लामा, रामबहादुर लामा र बमबहादुर/युवराज भन्ने बमबहादुर योञ्जनलाई साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद तथा प्रतिवादी कुमार लामालाई सोही ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. बमोजिम २ (दुई) वर्ष कैद गर्ने ठहर भएको सुरू भक्तपुर जिल्ला अदालतको फैसलामा प्रतिवादी कुमार लामाको हकमा सुरू सदर र अन्य प्रतिवादीहरूको हकमा सर्वस्वको हदसम्म केही उल्टी भई जन्मकैद मात्र सजाय गर्ने ठहराएको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७५।१०।७ को फैसला एवम् साबिक मुलुकी ऐन, अ. बं. १८८ नं. बमोजिम निज प्रतिवादीहरूलाई १० (दश) वर्ष मात्र कैद सजाय हुने भन्ने भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट व्यक्त भएको राय सदर हुने गरी उच्च अदालत पाटनबाट जाहेर भएको रायसमेत सदर हुने ठहर्ने ।

इजलास अधिकृतः कल्याण खड्का / मनिता गुरूङ
कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा (देबिना)
इति संवत् २०७७ साल असार १४ गते रोज १ शुभम् ।

२६

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७२-CI-१९९६, निर्णय बदर दर्ता कायम हक कायम, ईन्द्रबहादुर गुरूङ वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत*

विवादित कि.नं. ६३० र ६४९ को जग्गा दिदिङ गा. वि. स. अन्तर्गत पर्ने भन्ने देखिन्छ । साथै मिति २०३९।०२।२७ मा ईन्द्रबहादुर गुरूङले आफैले जिम्मावालको हैसियतबाट जग्गाको तिरो बुझेको भनी रसिद पेस गरेका छन् । ७ नं. फाँटवारी भरिएकोमा उल्लिखित बेहोराको जग्गाको साबिक जिम्मुवाल दर्ता रहेको जग्गाको मूल स्रोत पेस गरेको देखिँदैन । ७ नं. फाँटवारीका पाख्रिबास गाउँ पञ्चायतअन्तर्गत र दिदिङ गाउँ पञ्चायतअन्तर्गतका जग्गाहरू भनी उल्लेख छ । तर प्रस्तुत कि.नं. ६३० र ६४९ को जग्गा दिदिङ वडा नं. ६ मा रहेको भन्ने फिल्डबुक उतारबाट देखिन्छ । विवादित जग्गा नाप जाँच भएपछि मिति २०५०।१०।१६ मा नै डम्बरबहादुर गुरूङसमेतले भुलसुधार गरी कित्ताकाट गरी दर्ता गरिपाउँ भनी निवेदन दिएको पाइन्छ । यी वादीले पेस गरेको २०३४ सालको घरायसी हदमुनिको लिखत भएको तर सो लिखतलाई पुष्टि हुने साबिक दर्ता स्रेस्ता, निश्चित तिरोभरोको रसिदहरू पेस गर्न सकेको छैन । यस अवस्थामा सो घरायसी लिखतको प्रमाण अन्य दर्ता स्रेस्ताबाट पुष्टि भएको नहुँदा प्रमाणमा लिन मिल्ने नदेखिने ।

आफ्नो हकभोग पुष्टि हुने प्रमाणसहित वादीले मौकामा नै उजुर गर्नुपर्नेमा निर्णय भएको करिब १४ वर्षपछि मिति २०६६।०३।२२ मा छुट जग्गा दर्ता

गरिपाउँ भनी मालपोत कार्यालय खाँदबारीमा निवेदन दिएको देखिन्छ। साथै निवेदनसाथ वादीबाट विवादित जग्गाको साबिक स्रोतसँग स्पष्टरूपमा मिल्ने, भिड्ने घरायसी लिखतबाहेक आधिकारिक निकायमा रहेको प्रमाण पेस हुन सकेको छैन। वादीले पेस गरेको ७ नं. फाँटवारीको लिखतमा उल्लिखित कित्ताहरू भुवनसिं राईले दिदिङ गाउँ पञ्चायत वडा नं. ९ अन्तर्गतका र मनिराज गुरूङले पाठा पाख्रिबास गाउँ पञ्चायत वडा नं. ४ अन्तर्गतका जग्गा उल्लेख गरेकोमा सुरू जिल्ला अदालतको आदेशानुसार मिति २०६७।१०।१० मा भएको नक्सा मुचुल्का हेर्दा विवादित कि.नं. ६३० र ६४९ का जग्गा दिदिङ गा. वि. स. वडा नं. ६ अन्तर्गत रहेको देखिएकाले विवादित जग्गाको अवस्थिती, स्रेस्ता र क्षेत्रफलमा पनि सामञ्जस्यता नदेखिने।

तसर्थः माथि विवेचित प्रमाण, आधार र कारणबाट वन तथा सार्वजनिक जग्गा (नाप जाँच) ऐन, २०१९ को दफा ११ख बमोजिम गठित समितिले विवादित कि.नं. ६३० र ६४९ को जग्गा वनक्षेत्र पर्ने भनी मिति २०५२।०४।०९ मा गरेको निर्णय बदर गरी दर्ता हक कायम गरिपाउँ भन्ने वादी दाबी नपुग्ने ठहर्‍याई सुरू संखुवासभा जिल्ला अदालतबाट मिति २०६७।११।१७ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई तत्कालीन पुनरावेदन अदालत धनकुटाबाट मिति २०६९।०३।१९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : कृतिबहादुर बस्नेत

कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा (देबिना)

इति संवत् २०७७ साल मङ्सिर २३ गते रोज ३ शुभम्।

२७

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७३-WO-०८७९, उत्प्रेषण, परमादेशसमेत, रक्षाराम हरिजन (चमार) वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालयसमेत*

कुनै निकायले कानूनले तोकेको कार्यविधि अवलम्बन नगरी कानूनको व्याख्या एवम् प्रयोगमा देखादेखी त्रुटि गरी अधिकारको प्रयोग कानूनसँगत ढङ्गले नगरेको वा आफूलाई अधिकार क्षेत्र नभएको विषयमा आफ्नो अधिकारक्षेत्रभन्दा बाहिर गई निर्णय गरेको देखिन आएमा त्यस्तो कार्यलाई बदर गर्न अदालतबाट उत्प्रेषणको आदेश जारी हुन सक्दछ। प्रत्यक्ष रूपमा संविधान वा कानूनी प्रावधान विपरीत त्रुटिपूर्ण कार्य (Apparent error of law) भएको नदेखिएको अवस्थामा त्यस्तो निर्णय वा कामकारबाही बदर गर्न उत्प्रेषणको आदेश जारी गर्नुपर्ने स्थिति हुँदैन। राजदूत नियुक्ति सम्बन्धमा यो-यति संख्यामा समानुपातिक समावेशी रूपमा नियुक्ति हुने भनी कानूनमा स्पष्ट रूपमा तोकिएको पाइँदैन। उक्त मिति २०७३।११।०९ को निर्णयबाट सिफारिस भएका व्यक्तिहरूमा मधेसी, दलित, महिला, आदिवासी जनजाति र खस-आर्य समावेश गरी सिफारिस भएको देखिन्छ। साथै राजदूत नियुक्तिका लागि उपयुक्त उम्मेदवारको छनौट गर्न योग्यता, कार्य अनुभवसमेतलाई व्यवस्थित गर्ने सम्बन्धमा परराष्ट्र मन्त्रालयले सिफारिस एवम् नियुक्तिको लागि मापदण्ड तयार गरी मन्त्रिपरिषद्को स्वीकृतिका लागि पेस गर्ने निर्णय भएको भन्नेसमेत देखिन आएकाले उक्त निर्णय संवैधानिक एवम् कानूनी प्रावधान विपरीत रहेको मान्न मिल्ने अवस्था नहुँदा सो निर्णयलाई उत्प्रेषणको आदेशले बदर गर्नुपर्ने अवस्था देखिएन। साथै निवेदन मागबमोजिम परमादेशसमेतको आदेश जारी गरिरहनुपर्ने कारण र औचित्य रहेको स्थितिसमेत देखिन नआउने।

अत: माथि विवेचित आधार कारणसमेतबाट उक्त निर्णयबाट विभिन्न समुदाय र महिलासमेतको प्रतिनिधित्व हुने गरी राजदूत नियुक्तिका लागि सिफारिस भएको अवस्था देखिनुका साथै सो निर्णयबमोजिम राजदूत नियुक्ति भएका व्यक्तिहरूको समयावधि व्यतीत भई फिर्तासमेत भइसकेको भन्ने देखिन

आएकाले राजदुत नियुक्ति गर्ने मिति २०७३।११।०९ को सिफारिस निर्णय उत्प्रेषणको आदेशले बदर गर्नुपर्ने र निवेदकको मागबमोजिम परमादेश समेतको आदेश जारी गर्नुपर्ने स्थिति विद्यमान रहेको देखिन आएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृतः दिपेन्द्र थापा मगर

कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा(देबिना)

इति संवत् २०७७ साल असार २६ गते रोज ६ शुभम्।

२८

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७१-CI-१६०७, अंश अपुताली, रामकृष्ण चौधरी वि. सरिता कुमारी चौधरी*

फिरादी सरिताकुमारी चौधरीको पिता गयाप्रसाद चौधरीको मृत्यु मिति २०४७।०५।२६ मा भएको मिसिल संलग्न मृत्यु दर्ताको प्रमाणपत्रबाट देखिन्छ। वासु चौधरीको मृत्यु मिति २०४७।११।०३ मा भएको; हरिप्रसाद चौधरीको मृत्यु मिति २०६१।०५।१५ मा भएको र सुधनी देवीको मृत्यु मिति २०६५।०६।०९ मा भएको मिसिल संलग्न निजहरूको मृत्यु दर्ताको प्रमाण पत्रको प्रतिलिपीहरूबाट देखिएको अवस्था छ। फिरादीहरूले मिति २०४६।०४।३० को बन्डापत्रबाट वासु चौधरीका नाममा रहेका सम्पत्ति एवम् सुधनीदेवीको नाममा कायम हुन आएका सम्पत्तिको हकमा ३ भागमध्ये दुई भाग (१।१ भाग) सम्पत्तिमा अंश तथा अपुतालीमा आफ्नो हक रहेको भनी दाबी गरेको पाइन्छ। मिति २०४६।०४।३० को बन्डापत्रअनुसार फिरादी सरिता कुमारी चौधरीको पिता स्व. गयाप्रसाद चौधरीको नाममा कायम हुन आएका जग्गा निज सरिता कुमारी चौधरीले आफ्नो नाममा एवम् सुभद्रा कुमारी चौधरीको पति स्व. हरिप्रसाद चौधरीका नाममा कायम हुन आएका जग्गा सुभद्रा कुमारी चौधरीले आफ्नो नाममा कायम गरिसकेको भनी स्वयं वादीहरूले फिराद पत्रमा उल्लेख गरेको हुँदा फिरादीहरूले अंश पाउँ भनी गरेको दाबी सो हदसम्म मनासिब नदेखिने।

कुनै व्यक्तिको अपुताली खुला भएमा निजको नजिकको हकवालाले त्यस्तो अपुताली पाउने हुन्छ। तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐनले अपुताली पाउने प्राथमिकताक्रम तोकेको पाइन्छ। उक्त ऐनको अपुतालीको महलको २ नं. मा, "यस महलको अन्य नम्बरहरूको अधिनमा रही अपुताली पर्दा मर्नेको लोग्ने, स्वास्नी, छोरा, अविवाहिता छोरी, छोराको छोरा वा निजको अविवाहिता छोरी भएसम्म अरूले अपुताली पाउँदैनन्। मर्नेको छोरा नभई विधवा बुहारी भएमा निजले छोरासरह अपुताली पाउँछे। त्यस्ता कोही नभएमा विवाहिता छोरी, विवाहिता छोरी पनि नभए निजका छोरा वा अविवाहिता छोरी र निजहरू पनि नभए त्यस्तो अपुताली ऐनबमोजिमको हकवालाले पाउँछन्" भन्ने कानूनी व्यवस्था भएको पाइन्छ। लोग्नेस्वास्नीपछि छोराले प्राथमिकता पाउने उक्त कानूनको व्यवस्था रहेको छ। उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाअनुरूप विधवा बुहारीमा छोरासरह अपुताली हक हुने प्रावधान रहेको देखिन्छ। विवाह भइसकेकी महिलाले निजको माइतीको हजुरबुबाको अपुताली प्राप्त गर्ने सम्बन्धमा तत्काल प्रचलित ऐनबमोजिम अपुताली प्राप्त गर्ने प्राथमिकतामा पर्ने हकदार नभएको अवस्थामा विचार हुने हुन्छ। यसरी मर्नेको छोरा वा छोरासरह नै हक भएका विधवा बुहारी भएसम्म छोराको छोरी अर्थात् नातिनीलाई अपुताली हक प्राप्त हुनसक्ने अवस्था उक्त कानूनी व्यवस्थाको प्राथमिकताक्रमको आधारले पनि मिल्ने नदेखिने।

तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन, अपुतालीको महलको ३ नं. ले स्याहार सम्भार गरी पाल्नेले त्यस्तो व्यक्तिको अपुताली पाउने भनी उल्लेख भएको पाइन्छ। प्रस्तुत मुद्दाका सम्बन्धमा, मिति २०४६।४।३० र. नं. ३७७ बाट पारित बन्डापत्रमा स्व. वासु चौधरीको जग्गाका सम्बन्धमा "बाबुले पाएको जिउनीमा बाबुको शेषपछि निजको क्रियाकाज पछि बचेको सम्पत्ति हामी ३ अंशियार दाजुभाइले नामसारी

गराई भोगचलन गर्ने" भनी सर्त तोकेको देखिन्छ । उक्त बन्डा पत्रमा बाबु वासु चौधरी तथा आमा सुधनी देवी कुनै छोराहरूसँग साथै बस्ने भनी उल्लेख भएको देखिँदैन । निज बाबुआमालाई वादी प्रतिवादी दुवै पक्षले आफूले रेखदेख गरेको भनी उल्लेख गरे तापनि निजहरूमध्ये यसले नै पालनपोषण, स्याहार सम्भार गरेको भनी मिसिलसंलग्न कागजातबाट वस्तुगत रूपमा खुल्न सकेको पनि छैन । यस अवस्थामा निज बाबुआमाको रेखदेखमा वादी प्रतिवादी सबैको भूमिका रहेको भनी मान्नुपर्ने हुन्छ । यसै सन्दर्भमा, "कुनै ठोस र निश्चयात्मक प्रमाणबाट बाबु आमालाई वादी प्रतिवादीमध्ये यसले नै पालनपोषण, स्याहार सम्भार र औषधी उपचार गरेको हो भन्ने पुष्टि नभएसम्म त्यस्तो अवस्थामा उनीहरूको पालनपोषण र स्याहार सम्भारको कार्यको अवस्थामा वादी प्रतिवादी सबैको भूमिका रहेको भनी बुझ्नुपर्ने" (नेकाप २०७६, अङ्क ९, नि. नं. १०३६२) भनी यस अदालतबाट सिद्धान्त समेत प्रतिपादन भएको छ । यस स्थितिमा उक्त अपुतालीको महलको ३ नं. प्रस्तुत मुद्दामा आकर्षित हुन सक्ने अवस्था नदेखिने ।

वासु चौधरीको मृत्यु मिति २०४७।११।०३ मा भएकोमा निजको छोरा गया प्रसाद चौधरीको मृत्यु पिता वासु चौधरीको मृत्यु हुनुभन्दा पहिले नै मिति २०४७।०५।२६ मा भएको भन्ने छ । पिताको शेषपछि निजको काजक्रिया गर्नुपर्ने गरी उक्त मिति २०४६।०४।३० को अंशबन्डामा उल्लिखित पिताको इच्छा पूरा गरेर सबै छोराहरूले अपुताली हक पाउने भन्ने हो । तर पिता वासुदेव चौधरी भन्दा अघि छोरा गया प्रसाद चौधरीको परलोक भएको हुँदा अब पिताको सो इच्छा छोरा गया प्रसादले पूरा गर्न सक्ने अवस्थै रहेन । फलस्वरूप बाँकी रहेका छोराहरूमा सो जिम्मेवारी रहने देखिन्छ । साथै गया प्रसादकी छोरी वादी सरिता कुमारी चौधरीको विवाह भइसकेको हुँदा निजले माइती हजुरबुबाको सम्पत्तिमा अपुतालीको दाबी गर्न पाउने कानूनी आधार पनि छैन । यस अवस्थामा उक्त अंश बन्डामा उल्लेख भएको सर्त निज गया प्रसाद चौधरीका हकमा लागु हुन सक्ने देखिँदैन । यसरी वादी सरिता कुमारी चौधरीका पिता गया प्रसादको मृत्यु वासु चौधरीको मृत्यु हुनुभन्दा पहिले भई वासु चौधरीको अपुताली गया प्रसादमा प्राप्त हुन नसकेको अवस्थामा गया प्रसादकी विवाहिता छोरी वादी सरिता कुमारी चौधरीका हकमा बन्डा पत्रमा भएको सर्त प्रतिकुल अपुताली हक प्राप्त हुन सक्ने अवस्था नहुँदा सुधनी देवी चौधरीका नाममा रहेको सम्पत्तिमा वादी सुभद्रा कुमारी चौधरी र प्रतिवादी रामकृष्ण चौधरीको १।१ भाग अपुताली हक हुने देखिन आउने ।

सुधनी देवी चौधरीका नाममा रहेको सम्पत्तिमा वादी सुभद्रा कुमारी चौधरी र प्रतिवादी रामकृष्ण चौधरीको १।१ भाग अपुताली हक हुने देखिँदा, उक्त सम्पत्तिको ३ भागको १।१ भाग सम्पत्तिमा वादी सरिता कुमारी चौधरी र सुभद्रा कुमारी चौधरीको अपुताली हक रहने ठहर गरी सुरू सप्तरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०६७।०२।२६ मा भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत राजविराजबाट मिति २०६९।११।२२ मा भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको नहुँदा केही उल्टी भई सुधनी देवी चौधरीको नामको फिरादपत्रमा उल्लिखित दर्ता स्रेस्ता मिले भिडेको जगाको नरमगरम मिलाई २ भागको १ भाग अपुताली वादीमध्येकी सुभद्रा कुमारी चौधरीको र १ भाग पुनरावेदक प्रतिवादी रामकृष्ण चौधरीको अपुताली हक कायम भई छुट्याई लिन पाउने ।

इजलास अधिकृत: वसन्त प्रसाद मैनाली

कम्प्युटर: राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०७७ साल मार्ग २८ गते रोज १ शुभम् ।

२९

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७२-CR-१६६७, लागु औषध, मुक्ति शाही भन्ने मुक्तिबहादुर शाही वि. नेपाल सरकार*

मौकामा कागज गर्ने व्यक्ति तथा मुद्दाका प्रतिवेदक प्रहरी कर्मचारीहरूसमेत अदालतमा उपस्थित भई सुरू अनुसन्धानमा उल्लेख गरेको बेहोरालाई समर्थन गरी बकपत्र गरेको अवस्थामा निज प्रतिवादीहरूले कसुर गरेको कुरा स्थापित हुन आउँछ । पुनरावेदक प्रतिवादी मुक्तिबहादुर शाही समेतले अभियोग माग दाबीबमोजिम लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४ को (घ)(ङ) (च) र (छ) बमोजिमको कसुर अपराध गरेको देखिन आउँछ। वस्तुतः निज प्रतिवादीहरूलाई अभियोग माग दाबीबमोजिम सोही ऐनको दफा १४(१)(छ)(२) र १४(१)(झ) बमोजिम नै सजाय गर्नुपर्ने देखिने।

प्रतिवादी लक्ष्मण चौधरी, मुक्ती शाही, गणेश चौधरी र पुरनबम मल्लसमेत चार जनाको कार्य लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४ को (घ)(ङ) (च) र (छ) बमोजिमको कसुर अपराध देखिँदा निजहरू चारै जनालाई सोही ऐनको दफा १४(१)(छ)(२) र दफा १४(१)(झ) बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने अभियोग माग दाबी भएकोमा सुरू स्याङ्जा जिल्ला अदालतको मिति २०७०।१०।७ को फैसलाले प्रतिवादीहरू लक्ष्मण चौधरी, मुक्तिबहादुर शाही, पुरनबम मल्ल र गणेशप्रसाद चौधरीले लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४ को खण्ड (ङ)(च) र (छ) बमोजिम कसुर अपराध गरेको ठहऱ्याई प्रतिवादीहरू लक्ष्मण चौधरी एवम् मुक्तिबहादुर शाहीलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१) झ बमोजिम जनही ५ (पाँच) वर्ष कैद र एकलाख रूपैयाँ जरिवाना र प्रतिवादीहरू पुरनबम मल्ल एवम् गणेशप्रसाद चौधरीलाई सोही दफाबमोजिम जनही ३ (तीन) वर्ष कैद र एक लाख रूपैयाँ जरिवाना गरेकोमा पुनरावेदन अदालत पोखराको मिति २०७१ ।१२ ।२९ को फैसलाले लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ दफा १४(१)(झ) बमोजिम मात्र सजाय गरी दफा १४(१)(छ)(२) बमोजिमको सजायतर्फ केही नबोली भएको सुरूको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी गरी प्रतिवादीहरू मुक्तिबहादुर शाही, लक्ष्मण चौधरी, गणेशप्रसाद चौधरी र पुरनबम मल्ललाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(छ)(२) बमोजिमसमेत जनही १० वर्ष कैद र पचहत्तर हजार रूपैयाँ जरिवानासमेत हुने ठहऱ्याई सुरूले गरेको सजायमा उक्त सजायसमेत थप गरेको देखिने।

सुरू स्याङ्जा जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादीहरू लक्ष्मण चौधरी एवम् मुक्तिबहादुर शाहीलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१) झ बमोजिम जनही ५ (पाँच) वर्ष कैद र एक लाख रूपैयाँ जरिवाना र प्रतिवादीहरू पुरनबम मल्ल एवम् गणेशप्रसाद चौधरीलाई सोही दफाबमोजिम जनही ३ (तीन) वर्ष कैद र एक लाख रूपैयाँ जरिवाना गर्ने गरी भएको फैसलाउपर कुनै पनि प्रतिवादीको पुनरावेदन परेको देखिन आउँदैन। सो फैसलाउपर वादी नेपाल सरकारको तर्फबाट मात्र पुनरावेदन परेकोमा लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, ०३३ को दफा १४(१)(छ)(२) अनुसार सबै प्रतिवादीहरूलाई जनही १० (दश) वर्ष कैद र पचहत्तर हजार रूपैयाँ जरिवाना हुने ठहऱ्याई पुनरावेदन अदालत पोखराबाट फैसला भएको देखियो । यसबाट सुरू स्याङ्जा जिल्ला अदालतको फैसलाले ठहर गरेको कैद एवम् जरिवाना र पुनरावेदन अदालत पोखराबाट १० वर्ष कैद र पचहत्तर हजार रूपैयाँ जरिवाना हुने गरी भएको सजायको सम्बन्धमा कसुरको मात्र आदि प्रमाणलाई हेरी SPM-PRX १८ थान क्याप्सुलको बारेमा विचार पनि गर्नुपर्ने भएको छ । पुनरावेदक प्रतिवादी मुक्तिबहादुर शाहीलाई सुरू जिल्ला अदालतले ठहर गरेको ५ (पाँच) वर्ष कैद र एक लाख रूपैयाँ जरिवानालाई निजले चित्त बुझाई बसेको र पुनरावेदन अदालत पोखराबाट अर्कै कसुरमा १० (दश) वर्ष कैद र पचहत्तर हजार रूपैयाँ जरिवाना हुने ठहर भए पनि सो जिल्ला अदालतको फैसलाबाट भएको कैदको सजायमा पुनरावेदन अदालतबाट भएको

सजायसमेत थप गरी लगत कसी असुल गर्नुपर्ने हो कि भन्ने आशंका उत्पन्न हुन जानु स्वाभाविक नै रहेको।

लागु औषध खैरो हिरोइन ३२. २ ग्रामको हकमा दाबीबमोजिम लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, ०३३ को दफा १४(१)(छ)(२)अनुसार प्रतिवादीहरू मुक्तिबहादुर शाहीसमेत चारै जनालाई १० (दश) वर्ष कैद र पचहत्तर हजार रूपैयाँ जरिवाना हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत पोखराको फैसला सो हदसम्म मिलेकै देखिन आयो। एक जना प्रतिवादी लक्ष्मण चौधरीबाट SPM-PRX १८ क्याप्सुल बरामद भएको छ। सो बरामद भएको परिमाण न्यून भए पनि लागु औषध खैरो हिरोइन र यो लागु औषध SPM-PRX साथै समूहमा गएका प्रतिवादीहरूबाट बरामद भएको छ। लागु औषध खैरो हिरोइन बिक्री बितरण गर्नको लागि राखेको भन्ने तथ्य पुष्टि भई सजायसमेत ठहर भइसकेको परिप्रेक्ष्यमा सो साथसाथै बरामद भएको १८ थान SPM-PRX क्याप्सुल पनि सोही उद्देश्यबाट लिई गएको भन्ने प्रस्तुत मुद्दाको तथ्य र घटनाबाट पुष्टि हुन्छ। अतः बरामद भएको लागु औषध SPM-PRX क्याप्सुल १८ थान र लागु औषध खैरो हिरोइन ३२. २ ग्रामसमेतको समग्रता प्रमाणलाई समेत विचार गर्दा पुनरावेदक प्रतिवादी मुक्तिबहादुर शाहीलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१) झ बमोजिम २ (दुई) वर्ष कैद हुने भई कैदको हकमा सम्म सुरू स्याङ्जा जिल्ला अदालतको फैसला परिवर्तन हुने।

पुनरावेदन नगर्ने अन्य प्रतिवादीहरू लक्ष्मण चौधरी, पुरनबम मल्ल र गणेशप्रसाद चौधरीको हकमा विचार गर्दा, तत्कालीन मुलुकी ऐन, अ. बं. २०५ नं. मा "एकै मुद्दामा हार्ने झगडियामध्ये कसैको पुनरावेदन उजुर परेकोबाट जाँचिदा इन्साफ वा सजाय उल्टिने भई सो इन्साफ सजाय उल्टाई फैसला गर्दा पुनरावेदन उजुर नदिने झगडियाका हकमा समेत इन्साफ सजाय उल्टिन जाने भयो भने त्यस्तोमा पुनरावेदन उजुर परेको छैन भनी सदर गरिदिन हुँदैन। पुनरावेदन उजुर नदिनेका हकमा समेत पुनरावेदन उजुर दिनेसरह उल्टाई छिनिदिनुपर्छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखियो। सो कानूनी व्यवस्थाको आधारमा पुनरावेदन नगर्ने निज प्रतिवादीहरू लक्ष्मण चौधरी, पुरनबम मल्ल र गणेशप्रसाद चौधरीको हकमा समेत इन्साफ गर्न मिल्ने नै देखिन आउँदछ। सो कानूनी व्यवस्थाबमोजिम प्रतिवादीहरू लक्ष्मण चौधरी, पुरनबम मल्ल र गणेशप्रसाद चौधरीलाई समेत लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१) झ बमोजिम जनही २ (दुई) वर्ष कैद हुने भई कैदको हकमा सम्म सुरू स्याङ्जा जिल्ला अदालतको फैसला मनासिब नदेखिने।

पुनरावेदक प्रतिवादी मुक्तिबहादुर शाहीसमेत लाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(छ)(२) बमोजिम १० (दश) वर्ष कैद र पचहत्तर हजार रूपैयाँ जरिवाना हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत पोखराको मिति २०७१।१२।२९ को फैसला सो हदसम्म मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। सुरू स्याङ्जा जिल्ला अदालतबाट निज पुनरावेदक प्रतिवादी मुक्तिबहादुर शाही एवम् पुनरावेदन नगर्ने अन्य प्रतिवादीहरूमध्येको लक्ष्मण चौधरीलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१) (झ) बमोजिम जनही ५ (पाँच) वर्ष कैद र एक लाख रूपैयाँ जरिवाना र प्रतिवादीहरू पुरनबम मल्ल एवम् गणेशप्रसाद चौधरीलाई सोही दफाबमोजिम जनही ३ (तीन) वर्ष कैद र एक लाख रूपैयाँ जरिवाना गर्ने गरी फैसला भएतर्फ कसुरको मात्राअनुसार सुरू स्याङ्जा जिल्ला अदालतको मिति २०७०।१०।७ को फैसला मिलेको नदेखिँदा तत्कालीन मुलुकी ऐन, अ. बं. २०५ नं. समेतको आधारमा केही उल्टी गरी पुनरावेदक प्रतिवादी मुक्तिबहादुर शाही र पुनरावेदन नगर्ने अन्य प्रतिवादीहरू लक्ष्मण चौधरी, पुरनबम मल्ल र गणेशप्रसाद चौधरीसमेत चारै जनालाई जनही २ (दुई)

वर्ष कैद हुने ठहर्छ। सो कैदबाहेक अरूमा सुरू स्याङ्जा जिल्ला अदालतको फैसला परिवर्तन गरिरहनु परेन। साथै पुनरावेदक प्रतिवादी मुक्तिबहादुर शाहीसमेत लाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, ०३३ को दफा १४(१)(छ)(२) अनुसार भएको कैद १०(दश) वर्ष र पचहत्तर हजार रूपैयाँ जरिवाना र सोही ऐनको दफा १४(१)(झ) बमोजिम भएको कैद २ (दुई) वर्ष र एक लाख रूपैया जरिवानामध्ये तत्कालीन मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको महलको १० नं. र हाल प्रचलनमा रहेको फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ३६(३) मा भएको कानूनी व्यवस्थाअनुसार जरिवानाको र कैदको सजाय हुनेमा दुवै कलमको ठूलो सजायको मात्र दुवै कुराको सजाय गर्नुपर्ने भएकोले निज पुनरावेदक प्रतिवादी मुक्तिबहादुर शाहीसमेतलाई कैद १०(दश) वर्ष र एक लाख रूपैयाँ जरिवानासमेत हुने ठहर्ने।

इजलास अधिकृत (उप सचिव): नारदप्रसाद भट्टराई र सुशीलकुमार यादव

कम्प्युटरः राधिका घोरासाईने

इति संवत् २०७७ साल असार ८ गते रोज २ शुभम्।

३०

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०७०-CR-१२५९, जालसाज, चिन्कनुवा भन्ने चनकलाल डगौरा थारू वि. ज्ञानुलाल डगौरासमेत*

हदम्यादको विषय मुद्दाका पक्षहरूले आफ्नो इच्छा मुताबिक लम्ब्याउने वा छोट्याउने विषय नभई कानूनबाट व्यवस्था गरिएको हुन्छ। कानूनमा स्पष्ट व्यवस्था भए त्यसलाई सोही रूपमा पालना, कार्यान्वयन गर्नुपर्ने हुन्छ। यसलाई पक्षको हित अनुकूल वा प्रतिकूल हुने गरी प्रयोग, पालना र व्याख्या गर्न नमिल्ने।

प्रतिवादी ज्ञानुलाल, निजका छोरा हरिराम र ठगा, भतिजो नाताका वादीका सहोदर दाजु मनिराम डगौराले अंश लेनादेना गरी मिति २०३३।२।१० मा मालपोत कार्यालय कैलालीबाट लिखत पारित गरेको देखिन्छ। तत्काल प्रचलित कानूनबमोजिम वादीले सो काम कुरा भए गरेको मितिले २ वर्ष अर्थात् मिति २०३५।२।९ भित्र अदालतमा फिराद लिई आउनुपर्ने हो, वादीले मिति ०६६।५।४ गते कागज देखाउँदा थाहा पाएको भन्ने २०५८ सालमा संशोधन भएको हाल बहाल रहेको किर्ते कागजको १८ नं. को आधार लिई अदालत प्रवेश गरेको देखिन्छ। कानूनले निर्दिष्ट गरेको हदम्याद नघाई वादी लिखत पारित भई काम भए, गरेको मितिले ३४ वर्षपछि जालसाजीको प्रस्तुत फिराद लिई अदालतमा प्रवेश गरेको देखियो। हदम्याद नघाई परेको फिरादबाट इन्साफ गर्न मिल्दैन, खारेज हुन्छ, फिराद खारेज हुने ठहरेको अवस्थामा मुद्दाको तथ्यभित्र प्रवेश गरी सबुत प्रमाण हेरी थप विवेचना गरिरहनु पर्दैन। वादीको फिराद पत्र खारेज गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत दिपायलको फैसला अन्यथा नदेखिने।

वादीको दाबीबमोजिम मिति २०३३।२।१० को अंशबन्डाको लिखतलाई जालसाज ठहर गरी प्रतिवादीहरूलाई जरिवानासमेत गर्ने गरेको सुरू कैलाली जिल्ला अदालतको मिति २०६७।१२।२७ को फैसला उल्टी गरी उक्त पारित लिखतउपर कानूनले व्यवस्था गरेको काम भए गरेको मितिले २ वर्षको हदम्याद नघाई मिति २०६६।७।९ मा वादीले फिराद दायर गरेको देखिएको अवस्थामा वादीको फिराद खारेज गर्ने ठहऱ्याएको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत दिपायलको मिति २०७०।७।६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्ने।

इजलास अधिकृतः मदन पराजुली

इति संवत् २०७६ साल फागुन १८ गते रोज १ शुभम्।

३१

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०६७-CI-१४६३, सार्वजनिक*

*जग्गाबाट घर उठाई जग्गा सार्वजनिक राखिपाऊँ, गौरी नारायण सिंहसमेत वि. चन्द्र नारायण सिंह*

कि.नं. १८३ को जग्गा पर्ती जनिई नापी भएको तथ्यमा विवाद छैन। सो जग्गा सार्वजनिक भएको भन्ने देखियो। साथै पोखरीको डिलको भन्ने पनि रहेको छ। यस प्रकार पोखरीको डिलको रूपमा रहेको सार्वजनिक जग्गाको उपयोग सो पोखरीमा आउन जानलगायतका कार्य गर्न आवश्यक पर्ने प्रकृतिको पनि रहेको छ। परापूर्वदेखि सो सार्वजनिक जग्गामा प्रतिवादीले घर बनाई बसोबास गरेको भन्ने पनि प्रमाण दिन सकेको छैनन्। २०६२ सालमा गा. वि. स. ले घर बनाउन रोक्का गर्नु भनी पत्र बुझे पनि घर बनाउन नरोकी बनाइरहेको भन्ने बेहोरा जिल्ला प्रशासन कार्यालयमा जानकारी गराएको छ। अतः विवादित घर परापूर्वदेखि बनाई भोग गरेको नदेखिने।

सार्वजनिक जग्गामा घर नबनाउन आधिकारिक निकायबाट पत्राचार हुँदा पनि घर निर्माण गरेको भन्ने देखियो। यस अवस्थामा पुनरावेदक प्रतिवादीहरूले न. नं. १२, १३, १४, १५, १६, २१, २२, २३, २४ समेत न. नं. ३१, ३२ र ३३ भएको सार्वजनिक जग्गामा बनाएको घर तथा पर्खाल भत्काई सो कि.नं. १८३ को जग्गा सार्वजनिक रूपमा नै रहने गरी सार्वजनिक भोगचलनकै अस्तित्वमा कायम गरिनुपर्ने।

कि.नं. १८३ को जग्गा कसैको नाममा दर्ता नभई पर्ति जनिएको र पोखरीको डिलमा अवस्थित रहेको देखिन्छ। उपभोगको आधारले पनि प्रस्तुत जग्गा सार्वजनिक रूपमा नै रहेको भन्ने तथ्य स्वाभाविक हुन्छ। प्रतिवादीले विवादित जग्गा साबिक परापूर्वकालदेखि आफ्नो हकभोग रहेको भनी कुनै प्रमाण पेस गर्न सकेको पाइँदैन। २०६२ सालमा घर निर्माण प्रारम्भ गरेकोमा सम्बन्धित निकायमा जानकारी गराई घर निर्माण नगर्नु भनी पत्राचार हुँदाहुँदै अटेर गरी पुनरावेदक प्रतिवादीले घर निर्माण सम्पन्न गरेको भन्ने उक्त पत्राचारहरूबाट देखिन्छ। सार्वजनिक जग्गामा कसैको निजी व्यक्तिगत हक स्वामित्व रहँदैन। पुनरावेदक प्रतिवादीको परापूर्वकाल देखि घर बनाई बसोबास भोग गरेको भन्ने प्रमाण पेस छैन। सार्वजनिक प्रकृतिको जग्गामा पुनरावेदक प्रतिवादीले बनाएको घर पर्खाल भत्काइदिने गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत जनकपुरबाट भएको फैसला अन्यथा गरिरहन नपर्ने।

कि.नं. १८३ को नक्सा मुचुल्कामा अङ्कित न. नं. ३१, ३२ र ३३ मा सम्म खिचोला मेटाई चलन चलाइदिने ठहरी महोत्तरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०६४।३।३१ मा भएको फैसला केही उल्टी गरी वादी दाबीबमोजिम कि.नं. १८३ को सार्वजनिक जग्गाअन्तर्गत पर्न गएको भनी मिति २०६३।०९।२९ मा भएको नक्सा मुचुल्कामा जनिएको न. नं. १२ समेतका अन्य विवादित जग्गाहरूमासमेत पुनरावेदक प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेको ठहराई घर पर्खाल भत्काई खाली गराई सार्वजनिक कायम हुने गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत जनकपुरबाट मिति २०६७।०१।२३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्ने।

इजलास अधिकृतः सरोजनिधि वाग्ले

कम्प्युटरः राधिका घोरासाईने

इति संवत् २०७६ साल असोज ८ गते रोज ४ शुभम्।

३२

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा,** *०६९-CR-०४५२, लुटपिट, सुबदार महतो कहार वि. शर्मानन्द प्रसाद यादवसमेत*

मिति २०६५।०९।१७ को वारदातमा वादी सुबदार महतो कहार बसोबास गर्ने खपडाको छाना भएको घर गोठ प्रतिवादीहरूबाट तोडफोड लुटपिट भएको र सो घरको जम्मा बिगो रू. १,००,०००।– तोडफोड नोक्सान गरेको भन्ने वादीको फिरादमा उल्लेख भएको देखिन्छ। फिराद दाबी प्रतिवादीहरूले

पूर्ण रूपमा इन्कार गरे तापनि मिसिल संलग्न रहेको वादीको घरको फोटोहरूबाट निज वादीको घर तोडफोड भएको भन्ने देखिन्छ । तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन, लुटपिटको महलको १ नं. को कानूनी व्यवस्था रहेबाट वादीले फिरादमा उल्लेख गरेबमोजिम लुटपिटको कसुर स्थापित भएको देखिने।

वादीको घर पुनः निर्माण गर्दा लाग्ने खर्च तथा वारदात भएको समयदेखि हालसम्मको अन्तरालसमेतलाई विचार गर्दा वादीलाई भएको नोक्सानबापत रू. ७५, ०००।– प्रतिवादीबाट भराउँदा न्यायोचित नै हुने देखिँदा तत्कालीन पुनरावेदन अदालत, हेटौंडाबाट ठहर भएको क्षति रकम रू. ५०,०००।– केही उल्टी भई वादीको घरगोठ भत्काई नोक्सान गरेको रकम रू. ७५, ००० ।– बिगो कायम हुने।

प्रतिवादीहरूलाई हुने जरिवानाको सम्बन्धमा हेर्दा, मुलुकी ऐन लुटपिटको महलको ६ नं. को व्यवस्था अनुसार प्रतिवादीमध्येका शर्मानन्द प्रसाद यादवको छोरी वादीका छोराले प्रेम विवाह गरेको भन्ने मुख्य रिसइवीकै कारण निजको मुख्य भूमिकामा नै प्रस्तुत लुटपिटको वारदात घटेको हुँदा निजलाई ठहर भएको बिगोको सय कडा पच्चिस जरिवाना र निजलाई लुटपिटको उक्त वारदातमा मद्दत दिने अन्य प्रतिवादीहरूलाई मुख्य प्रतिवादी शर्मानन्दप्रसाद यादवलाई भएको जरिवानाको जनही आधाका दरले जरिवानासमेत हुने।

अतः प्रतिवादीहरूले वादीको घर तोडफोड गरी क्षति पुऱ्याएकोमा सुरू बारा जिल्ला अदालतबाट कायम भएको क्षतिको रकम रू. १,००,०००।– लाई केही उल्टी गरी रू. ५०,०००।– क्षति कायम भएको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत, हेटौंडाको मिति २०६९।०४।२९ को फैसला उक्त क्षति रकमको हकमा केही उल्टी भई रू. ७५,०००।– को क्षति नोक्सानी वादीले प्रतिवादीहरूबाट मुलुकी ऐन, लुटपिटको महलको ६ नं. बमोजिम भराइपाउने।

इजलास अधिकृत : मनिता गुरूङ
कम्प्युटर : राधिका घोरासाइने
इति संवत् २०७८ साल वैशाख १० गते रोज ६ शुभम्।

३३

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७५-CR-०३२६, ०७५-CR-१३९०, कर्तव्य ज्यान, रामबहादुर भण्डारी वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. रामबहादुर भण्डारी*

प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारीको कार्य अभियोग मागदाबी तथा नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरबमोजिम साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. बमोजिम मनसायप्रेरित हत्या हो वा होइन भन्ने सम्बन्धमा विचार गर्दा, उक्त ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. मा "लाठा ढुङ्गा र साधारण सानातिना हातहतियारले कुटी, हानी, रोपी, घोची वा अरू ज्यान मर्ने गैह्र कुरा गरी ज्यान मरेमा एकै जनाले मात्र सो काम गरी ज्यान मारेमा सोही एक जना र धेरै जनाको हुल भई मारेमा यसैले मारेको वा यसको चोटले मरेको भन्ने प्रमाणबाट देखिन ठहर्न आएमा सोही मानिस मुख्य ज्यानमारा ठहर्छ । त्यस्तालाई सर्वस्वसहित जन्म कैद गर्नुपर्छ..." भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । फौजदारी न्यायको सर्वमान्य सिद्धान्तअनुसार कुनै पनि मनसायप्रेरित हत्यामा मुख्यत चार चरणहरूः मार्ने मनसाय, पूर्वयोजना, तयारी र योजनाबमोजिमको कार्य सम्पन्न भई व्यक्तिको हत्या भएको हुन्छ । उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाअनुसार कसैले कसैलाई मार्ने मनसायले लाठा, ढुङ्गा वा अन्य सानातिना हातहतियारको प्रयोग गरी कर्तव्य गरेको भन्ने स्थापित हुनुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारी र मृतक सिताराम भण्डारीबिच भूकम्प पीडितले पाउने राहतको विषयमा सामान्य भनाभन तथा मनमुटाव भएको भन्ने तथ्य खुल्न आएको भए तापनि प्रतिवादीले

मृतकलाई मार्नैपर्नेसम्मको पूर्वरिसइवी रहेको भन्ने देखिँदैन । साथै, प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारीले मृतकलाई मार्नको लागि पूर्वयोजना बनाएको तथा योजना मुताविकको कार्य सम्पन्न गरी ज्यान लिएको भन्नेजस्ता तत्त्वहरूको पनि विद्यमानता नदेखिँदा निजलाई अभियोग दाबीबमोजिम ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. अन्तर्गत मनसायप्रेरित हत्याको कसुरमा सजाय गरिपाऊँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अब रामबहादुर भण्डारीको उक्त कार्य साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १४ नं. अन्तर्गतको आवेशप्रेरित हत्याको कसुर हो वा होइन भन्ने सम्बन्धमा विचार गर्दा, उक्त ज्यानसम्बन्धीको महलको १४ नं. मा, "ज्यान मार्ने मनसाय रहेनछ, ज्यान लिनुपर्नेसम्मको इवी पनि रहेनछ, लुकी चोरीकन हानेको पनि रहेनछ, उसै मौकामा उठेको कुनै कुरामा रिस थाम्न नसकी जोखिमी हतियारले हानेको वा विष खुवाएकोमा बाहेक साधारण लाठा, ढुङ्गा, लात, मुक्का इत्यादि हान्दा सोही चोट पीरले ऐनका म्यादभित्र मरेमा १० वर्ष कैद गर्नुपर्छ" भन्ने व्यवस्था गरेको पाइन्छ। उल्लिखित कानूनी व्यवस्थालाई हेर्दा, आवेशप्रेरित हत्याको वारदात कायम हुनको लागि ज्यान मार्ने मनसाय हुनु हुँदैन। मृतक र प्रतिवादीबिच ज्यानै लिनुपर्नेसम्मको पूर्वरिसइवी रहेको भन्ने पनि देखिनु हुँदैन। त्यसका अतिरिक्त वारदातमा जोखिमी हतियारको प्रयोग भएको वा विष खुवाएको हुनु हुँदैन। प्रतिवादीले ज्यान मार्ने षड्यन्त्र गरेको, सोबमोजिमको योजना बनाएको, योजनाबमोजिम तयारी गरी मार्नेसम्मको कार्य भएको भन्ने कहीँकतैबाट देखिनु हुँदैन। मृतक र प्रतिवादीबिच कुनै विषयमा विवाद हुँदा तत्काल उठेको कुनै कुरामा रिस थाम्न नसकी आत्म नियन्त्रण गुमाई उत्तेजित भई कुनै कार्य गर्दा तत्कालै वा घाइते भएकोमा उपचारको क्रममा मानिस मरेको देखिनुपर्ने।

प्रस्तुत मुद्दामा वारदात मिति २०७२/१२/०१ गते बिहान प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारी र मृतक सिताराम भण्डारी दुवैजना गा. वि. स. को कार्यालयमा भएको बैठकमा उपस्थित भएको, तत्पश्चात् आ-आफ्नो काममा गई दुवैजना घर फर्कने क्रममा विश्वानाडाँडा भन्ने ठाउँमा भेट भई कुराकानी गर्दै कोकिला बस्नेतको होटलमा चिया खान पसेकोमा चिया नभएको कारणबाट मृतक र प्रतिवादी दुवै जनाले रक्सी खाई घर जाने क्रममा मौरीखोला कच्ची सडकमा विवाद भई तानातान भएको र मृतक सिताराम भण्डारीले प्रतिवादीलाई एक झापड गालामा हानेपछि पुनः ढुङ्गा उठाई प्रतिवादीलाई हान्न लाग्दा प्रतिवादी आवेशमा आई सिताराम भण्डारीलाई ढुङ्गाले टाउकोमा हानेको कारणबाट सिताराम भण्डारीको मृत्यु भएको भन्ने देखिन्छ । यी प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारी र मृतक सिताराम भण्डारी नजिकका दाजुभाइ नाताका व्यक्तिहरू भई निजहरूबिच घरजग्गासम्बन्धी सामान्य विवाद रहेपनि प्रतिवादीले मृतक मार्नुपर्नेसम्मको पूर्वरिसइवी, षड्यन्त्र, योजना र तयारी भएको तथ्य मिसिलसंलग्न कागज प्रमाणबाट देखिँदैन। प्रतिवादीले घातक हतियार प्रयोग गरेको र लुकी चोरी हानेको अवस्था नभई मृतक सिताराम भण्डारीलाई प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारीले मादक पदार्थ (रक्सी) सेवन गरी मातिइ घर जाने क्रममा वादविवाद हुँदा मृतक सिताराम भण्डारीले प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारीलाई एक थप्पड गालामा हानी पुनः ढुङ्गा उठाई हान्न लाग्दा प्रतिवादीले तत्काल उठेको रिस थाम्न नसकी वारदात स्थलमा नै रहेको ढुङ्गा उठाई प्रहार गरेको कारणबाट सिताराम भण्डारीको मृत्यु भएको भन्ने कुरा प्रतिवादीको बयान तथा मृतकको शव परीक्षण प्रतिवेदन र शव परीक्षण गर्ने चिकित्सकहरूको बकपत्रसमेतबाट पुष्टि भएको पाइन्छ। यसरी प्रतिवादीले मृतकसँग वारदातस्थलमा नै

सिर्जित भएको झैझगडा तथा कुटपिटको कारण तत्काल उठेको आवेगबाट आत्मसंयम गुमाई वारदातस्थलमा नै फेला परेको ढुङ्गाले मृतकको कन्चटमा हानेको र सोही क्रियाबाट मृतकको टाउकोमा गहिरो चोट पुग्न गई अप्रत्यासित रूपमा मृतकको मृत्यु भएको तथ्य स्थापित हुन आएकोले प्रतिवादीको उक्त कार्य ज्यान सम्बन्धीको महलको १४ नं. अन्तर्गतको आवेशप्रेरित हत्याको कसुर देखिन आयो। यस्तो प्रकृतिको वारदात ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. बमोजिम मनसायप्रेरित हत्या न भई ज्यान सम्बन्धीको महलको १४ नं. बमोजिमको कसुर रहेको देखिँदा निज प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारीलाई सोही ज्यानसम्बन्धीको महलको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय हुने ठहरी सुरू सिन्धुपाल्चोक जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गरी भएको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७४/१२/२० को फैसला कानून र न्यायको रोहमा मुनासिबै देखिन आयो । मिसिल संलग्न सम्पूर्ण प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारीले आवेशमा आई प्रहार गरेको ढुङ्गाको चोटपीडाबाट नै मृतक सिताराम भण्डारीको मृत्यु भएको भन्ने तथ्य स्थापित भएको अवस्थामा सफाइ दिलाइपाउँ भन्ने प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारीले ज्यानसम्बन्धीको महलको १४ नं. को कसुर गरेको देखिन आएकोले यी प्रतिवादी रामबहादुर भण्डारीलाई ऐ. महलको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय हुने गरी सुरू सिन्धुपाल्चोक जिल्ला अदालतबाट मिति २०७४।०३।२१ मा भएको फैसला सदर हुने ठहरी भएको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७४।१२।२० को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । निज प्रतिवादीलाई ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको तथा अभियोग दाबीबाट सफाइपाउँ भन्ने प्रतिवादी दुवै पक्षको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृतः हेमा पाण्डे

कम्प्युटर- देवीमाया खतिवडा (देबिना)

इति संवत् २०७८ साल माघ १७ गते रोज २ शुभम्।

३४

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७७-WH-०३७१, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, श्रवण चौधरीको हकमा विष्णु कुमारी चौधरी वि. उच्च अदालत दिपायल डोटी*

निवेदकलाई अदालतको फैसलाअनुसार कैद सजाय ठहर भई, निज १४ वर्षदेखि माथि १६ वर्षभन्दा मुनि उमेरको नाबालक भएको कारण आधा सजाय अर्थात् १० (दश) वर्ष कैद हुने ठहरी दुई तहका अदालतबाट फैसला भइसकेको देखियो। साथै निवेदकले उक्त कर्तव्य ज्यानसमेत मुद्दामा दायर गरेको पुनरावेदनपत्र यस अदालतमा विचाराधीन रहिरहेको छ । यसरी एकातर्फ अदालतको साधारण अधिकार क्षेत्रअन्तर्गत दायर गरेको पुनरावेदन विचाराधीन रहेको अवस्थामा अर्कोतर्फ यस अदालतको असाधारण अधिकार क्षेत्रअन्तर्गत प्रस्तुत रिट निवेदन पर्न आएको छ। यद्यपि Covid-१९ को जोखिमता र कैदी बन्दीहरूको स्वास्थ्य अवस्था एवम् सुधार गृहको भौतिक अवस्था र रिट निवेदकको स्वास्थ्यपूर्वक बाँच्न पाउने अधिकारसमेतका निवेदकले लिनु भएको जिकिरलाई गम्भीरतासाथ हेरिनुपर्ने नै देखिन्छ । तर दुई तहका अदालतबाट कर्तव्य ज्यान, डाँका चोरी तथा ज्यान मार्ने उद्योग जस्तो संगिन अपराधको कसुरदार ठहर गरिएको मुद्दामा नियमित अदालतको साधारण अधिकार क्षेत्रको रोहमा पर्न आएको पुनरावेदनपत्र विचारणीय नै रहेको अवस्थामा सो कुरालाई अनदेखा गरी तत्कालै बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदनबाट न्यायिक उपचार प्रदान गर्न सकिने अवस्था रहेन । उल्लिखित कर्तव्य ज्यानसमेतको मुद्दामा सुरू तथा उच्च अदालतको फैसलाको न्यायिक परीक्षण

पुनरावेदनकै रोहबाट हुने हुन्छ । निवेदकले उठाएका कानूनी प्रश्नको निराकरण पनि सोही पुनरावेदनको रोहबाट हुने नै देखिन्छ । अतः निजलाई अदालतको फैसलाबमोजिम सो बाल सुधार गृहमा राखिएको कार्य गैरकानूनी नदेखिँदा निवेदक प्रतिवादी श्रवण चौधरीको रिट निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुन सक्दैन । बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

निवेदकसहित कानूनको द्वन्दमा परी बाल सुधार गृहमा बस्नुपरेका सबै बालबालिकाहरूको सर्वोत्तम हितलाई ध्यानमा राखी बाल सुधार गृहमा मानवोचित स्वास्थ्य, सुविधा, उपचारलगायत महामारीबाट बालबालिकाहरूलाई हुनसक्ने सङ्क्रमणको रोकथाम र जोखिम न्यूनीकरण गर्न, तोकिएको मापदण्डअनुसार खोप लगाउने व्यवस्था गर्न, बालबालिकाहरूले खाना खान, सुत्न र बस्नका लागि Covid-१९ को सम्बन्धमा जारी भएको राष्ट्रिय तथा अन्तरराष्ट्रिय मापदण्डबमोजिम हुने गरी उचित स्थानको प्रबन्ध गर्नु, साबुन पानी, मास्क तथा स्यानिटाइजरसमेत अत्यावश्यक देखिएका विषयमा सम्बन्धित निकायहरूसँग पत्राचार, समन्वय गरी बालबालिकाहरूको सुरक्षित बाँच्न पाउने हकलाई संरक्षण गर्नेतर्फ पहल गर्नु भनी प्रत्यर्थी बालसुधार गृह, सराङ्कोट पोखरा, कास्की र नेपाल सरकार, गृह मन्त्रालयका नाउँमा परमादेश जारी गरिदिएको ।

इजलास अधिकृतः कृतिबहादुर बस्नेत

कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा (देबिना)

इति संवत् २०७८ साल आषाढ २७ गते रोज १ शुभम् ।

३५

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी,** *०७५-CR-००५०,* भ्रष्टाचार (रिसवत / घुस), *लेखनाथ पौडेल वि. नेपाल सरकार*

पुनरावेदकले आरोप दाबीअनुसारको कसुर गरे, नगरे सम्बन्धमा अन्य प्रमाणको विवेचना र विश्लेषण गर्दा, गोंगबु चोकमा करूणा तामाङलाई सम्बन्ध विच्छेदको कागज दिन आएको थिएँ, निजसँग मैले रू. ४, ०००।- लिएको हुँ, रकम लिने मेरो मनसाय नभएको तर कार्यालयमा सम्बन्ध विच्छेदको दर्ता गर्ने किताब नभएको कारण उक्त दर्ता गर्ने किताब किन्नको लागि रू. २, ०००।- जति पर्छ भनेकोमा उहाँले कुन मनसायबाट दिनुभयो थाहा भएन भनी प्रतिवादी लेखनाथ पौडेलले अनुसन्धानको क्रममा बयान गरेको देखिन्छ । निज प्रतिवादीको अदालतसमक्षको बयान हेर्दा, उजुरीकर्ता काठमाडौंमा नै बस्ने र म पनि काठमाडौंमा नै बस्ने भएको हुँदा काम सकेर कागजात काठमाडौं ल्याइदिनु भनी मलाई अह्राएकोले मैले असल नियत र सहयोगको भावनाले कागजात ल्याइदिएको मात्र हो, मेरो खल्तीमा उजुरकर्ताले जबरजस्ती रकम राखी हाली दिनुभएको हो भनी बेहोरा उल्लेख गरिदिएको पाइने ।

प्रतिवादीका साक्षी महेश्वर घिमिरे (गा. वि.स. सचिव) ले गरिदिएको बकपत्रमा, गा.वि.स. मा जन्म, मृत्यु, विवाह दर्ता नियमित परिरहने घटना हुन, सम्बन्ध विच्छेद प्रमाणीकरण धेरै कम मात्र गा.वि.स. मा पर्ने हुँदा त्यस सम्बन्धमा अनभिज्ञ होइन्छ, बुझ्न समय लाग्छ भनी बेहोरा लेखाइदिएको पाइन्छ । मिसिल संलग्न रहेको सम्बन्ध विच्छेद दर्ताको प्रमाण पत्रको प्रतिलिपि हेर्दा सो प्रमाण पत्रको दर्ता नं. १ तथा दर्ता मिति २०७२।१२।१२ उल्लेख भएको देखिन्छ । उजुरीकर्ताले मिति २०७२।१२।१२ मा सम्बन्ध विच्छेदको दर्ता प्रमाणीकरणको लागि गा.वि.स. कार्यालयमा निवेदन दर्ता गराउनुभएको थियो, मैले काम गर्दैछु भनेर भनेकोमा निजले मिति २०७२।१२।१८ मा आफैँ फोन गरी मलाई सामाखुसीमा बोलाई कागज ल्याइदिनुभयो भनी मेरो खल्तीमा जबरजस्ती रकम राखी हाली दिनुभएको हो भन्ने प्रतिवादीको अदालतसमक्षको बयान रहेको पाइने ।

मिति २०७२ ।१२ ।१२ मा उजुरकर्ताले

निवेदन दर्ता गरेको दिनमा नै सम्बन्ध विच्छेद दर्ताको प्रमाणीकरण गर्ने कार्य भएको भन्ने देखिन्छ । उजुरकर्ताको निवेदनअनुसारको कार्य प्रतिवादीले समयमा नै सम्पन्न गरिसकेको पाइन्छ । उजुरकर्ता र प्रतिवादी पनि काठमाडौंमा बसोबास गर्ने गरेको हुँदा सो तयार भएको कागज काभ्रेपलाञ्चोकबाट प्रतिवादीसँग मगाउने कार्य गरेको र प्रतिवादीले ल्याइदिएकोसम्म तथ्य पुष्टि हुन्छ । कार्यालयबाट रीतपूर्वक पक्रियानुसार तयार भएको प्रमाणीकरणको कागज लिन उजुरकर्ता स्वयं काभ्रेपलाञ्चोक जानुपर्ने स्थिति रहन जाने हुने अवस्था थियो । कार्यालयबाट प्रमाणीकरण कागज तयार भइसकेको हुँदा जुनसुकै समयमा उजुरकर्ताले प्राप्त गर्न पाउने नै हुन्छ । अतः प्रतिवादीले निवेदन दिएकै दिनमा कानूनबमोजिम निर्वाह गर्नुपर्ने कार्य सम्पन्न गरेको भन्ने नै देखिने ।

घुस खाने मनसाय, घुसको माग र घुस प्राप्ति भ्रष्टाचारको प्रमुख तत्त्व हुन । प्रतिवादीलाई कसुरदार ठहर गर्न उक्त तीनवटै तत्त्वहरू प्रतिवादीको स्वेच्छाले घटित भएको भनी पुष्टि हुनुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा सङ्कलन गरिएका बरामद गरिएको रकमबाहेक प्रतिवादीले घुस रकम माग गरेको, लिएको वा लिन मन्जुर गरेको भनी स्थापित हुने अन्य स्पष्ट प्रमाण देखिएन । प्रतिवादी कसुरदार रहेको भनी यकिन गर्न सकिने प्रकृतिको अन्य स्वतन्त्र प्रमाण वादी पक्षबाट पेस हुन सकेको छैन । तसर्थ, हाल प्रमाणमा लिन नमिल्ने उक्त नियम ३० मा रहेको प्रावधानअनुसार सङ्कलित रकम बरामदको प्रमाणबाहेक अरू प्रमाणबाट पुनरावेदक प्रतिवादीले घुस रिसवत लिएको वा लिन मन्जुर गरेको भनी पुष्टि हुने कुनै पनि भरपर्दो र वस्तुगत प्रमाण वादी पक्षले पेस गर्न सकेको नदेखिँदा प्रतिवादीले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने देखिने ।

अतः प्रतिवादी लेखनाथ पौडेलउपरको आरोप कानूनबमोजिम शंकारहित तवरले पुष्टि हुन सकेको नदेखिँदा, निज प्रतिवादीलाई भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ३(१) तथा दफा ३(१)(क) बमोजिम १५ दिन कैद र रू. ४,०००।- जरिवाना हुने ठहर गरी सुरू विशेष अदालत काठमाडौंबाट मिति २०७४।१२।२२ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई निज प्रतिवादीले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ।

इजलास अधिकृत: वसन्तप्रसाद मैनाली

कम्प्युटर: राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०७८ साल पौष २० गते रोज ३ शुभम् ।

३६

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी,** *०७५-CR-१६९२, ०७५-CR-१७२४, भ्रष्टाचार (रिसवत / घुस), नेपाल सरकार वि. मोहन सुवेदीसमेत, हर्कबहादुर राई वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादी हर्कबहादुर राई र प्रतिवादी युवराज पोखरेल नागरिकता फाँटमा तथा प्रतिवादी मोहन सुवेदी राहदानी फाँटमा कार्यरत रहेको भन्ने तथ्य छ । प्रतिवादी हर्कबहादुर राई बरामदित रकम निजले राहदानीको दस्तुर ठानी उजुरकर्ताबाट रू. २०,०००।– लिएको कुरामा अनुसन्धानको क्रममा गरिदिएको बयान तथा अदालतसमक्ष गरिदिएको बयानमा समेत स्वीकारै छन् । सो बरामद भएको रकम प्रतिवादी हर्कबहादुर राई कार्यरत फाँटभन्दा छुट्टै रहेको राहदानी फाँटको दराजबाट बरामद गरिएको भन्ने तथ्य छ । बरामदित रकम राहदानी फाँटको दराजबाट बरामद भएको र उक्त रकम राहदानीको राजश्वबापत ठानेर लिएको भन्ने निज प्रतिवादीको बयान र बरामद स्थानबिचमा तादम्यता रहेको देखिने ।

सरकारी साक्षी चेतनाथ पोखरेलको अदालत समक्षको बकपत्र हेर्दा, ४ गतेसम्म सार्वजनिक बिदा रहेको, ५ गते कार्यालय प्रमुख कार्यालय प्रमुखको बैठकमा गएको भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ । निज चेतनाथ पोखरेलले अनुसन्धानको क्रममा गरेको कागजमा, कार्यालय प्रमुखसमक्ष पेस गर्न मौखिक

आदेश दिएको थिएँ; नागरिकताको प्रमाणपत्र सच्चाउने काम ७ ।०६ मा भइसकेको भनी उल्लेख गरिदिएको देखिन्छ। कार्यालय प्रमुख उमेश पाण्डेले अनुसन्धानको क्रममा कागज गर्दा, ५ गते कार्यालय प्रमुखको बैठकमा गएको भनी उल्लेख गरिदिएको अवस्था छ । मिति २०७४।०७।०२ देखि मिति २०७४।०७।०४ सम्म तिहारको सार्वजनिक बिदा रहेको तथ्य छ । मिति २०७४।०६।३१ मा उजुरकर्ताले निवेदन दिएकोमा बिचमा तिहारको सार्वजनिक बिदा एवम् कार्यालय प्रमुखको व्यस्तता रहेको र मिति २०७४।०७।०६ मा उजुरकर्ताको काम सम्पन्न भइसकेको भन्ने देखिन्छ । प्रतिवादीले उजुरकर्ताको काम समयमा नै नगरी ढिलासुस्ती गरी झुल्याउने नियत राखेको भन्ने भनाई उक्त तथ्यबाट भरपर्दो मान्न नमिल्ने।

घुस खाने मनसाय, घुसको माग र घुस प्राप्ति भ्रष्टाचारको प्रमुख तत्त्व हुन । प्रतिवादीलाई कसुरदार ठहर गर्न उक्त तीनवटै तत्त्वहरू प्रतिवादीको स्वेच्छाले घटित भएको भनी पुष्टि हुनुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा सङ्कलन गरिएका बरामद गरिएको रकमबाहेक प्रतिवादीहरूले घुस रकम माग गरेको, लिएको वा लिन मन्जुर गरेको भनी स्थापित हुने अन्य स्पष्ट प्रमाण देखिएन । प्रतिवादीहरू कसुरदार रहेको भनी यकिन गर्न सकिने प्रकृतिको अन्य स्वतन्त्र प्रमाण वादी पक्षबाट पेस हुन सकेको छैन । तसर्थ, हाल प्रमाणमा लिन नमिल्ने उक्त नियम ३० मा रहेको प्रावधान अनुसार सङ्कलित रकम बरामदको प्रमाणबाहेक अरू प्रमाणबाट प्रतिवादीहरूले घुस रिसवत लिएको वा लिन मन्जुर गरेको भनी पुष्टि हुने कुनै पनि भरपर्दो र वस्तुगत प्रमाण वादी पक्षले पेस गर्न सकेको नदेखिँदा प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने देखिन आउने।

अतः प्रतिवादीहरू हर्कबहादुर राई, मोहन सुवेदी र युवराज पोखरेलउपरको आरोप कानूनबमोजिम शंकारहित तवरले पुष्टि हुन सकेको नदेखिँदा, निज प्रतिवादीहरूमध्ये हर्कबहादुर राईलाई भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ३(१) तथा दफा ३(१)(क) बमोजिम १ महिना कैद र रू. २०, ०००।- जरिवाना हुने ठहर गरी सुरू विशेष अदालत काठमाडौंबाट मिति २०७५।०७।१५ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई प्रतिवादी हर्कबहादुर राईलाई कसुरदार ठहर गरेको हदसम्म उल्टी भई निज प्रतिवादी हर्कबहादुर राईले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर्छ र प्रतिवादीहरू मोहन सुवेदी र युवराज पोखरेललाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी भएको हदसम्म सुरू विशेष अदालत काठमाडौंबाट मिति २०७५ ।०७ ।१५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: वसन्तप्रसाद मैनाली

कम्प्युटर: राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०७८ साल पौष २० गते रोज ३ शुभम्।

## इजलास नं. ५

३७

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या. श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७७-WH-००१७, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, लालबहादुर बि.सी. को हकमा सुदिप ढकाल वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय, चितवनसमेत

निवेदक लालबहादुर वि. सी. लाई दुर्गा सुवेदी भनिने दुर्गा प्रसाद शर्मा सुवेदी र राम सेढाईले गरेको पोलको आधारमा पक्राउ गरिएको भनिएको छ। तर निज दुर्गाप्रसाद सुवेदी यस अदालतको मिति २०७७/२/१९ को आदेशले तथा राम सेढाई मिति २०७७/५/३ गते यस अदालतबाट जारी भएको बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेशले थुनामुक्त भएको देखियो। सहअभियुक्त भनिएका उल्लिखित दुई जनाको

केही भनाई (कसुर नै गरेको भनी पोल गरेको देखिँदैन) को आधारमा पक्राउ गरिएको भनिएकोमा निज पोल गर्ने भनिएका व्यक्तिहरू नै थुनाबाट मुक्त भइसकेको अवस्थामा अब केवल निजहरूको भनाइलाई आधार मानेर निवेदक लालबहादुरलाई थुनामा राख्नु तर्कसङ्गत देखिँदैन। उल्लिखित पोलबाहेक निवेदक लालबहादुरउपरको आरोप समर्थित हुने अन्य कुनै पनि आधार प्रमाण प्रत्यर्थीहरूले देखाउन, खुलाउन सकेको पाइएन। यसबाट निज कुनै राजनीतिक दल वा विचारबाट प्रभावित रहेको भन्ने आधारमा नै आस्थाको कारणबाट बन्दी बनाएको रहेछ भन्ने तथ्य समर्थित भएको देखिएको।

निवेदक लालबहादुर वि. सी. लाई कानूनप्रतिकूल जारी गरिएको जरूरी पक्राउ पुर्जीका आधारमा पक्राउ गरी थुनामा राखेको, अनुसन्धान सन्तोषजनक रूपमा भएको मान्न सकिने अवस्था नदेखिएको, अनुसन्धानका लागि भनी थुनामा राख्न अनुमति माग गर्दा तथा अनुमति प्रदान गर्दा मनासिब तथा तथ्यसङ्गत आधार र कारण खुलाइएको नदेखिएको, निजउपर पोलगर्ने भनिएका व्यक्तिहरू थुनामुक्त भइसकेको, र निवेदकलाई मूलतः राजनीतिक आस्थाका आधारमा प्रबृत्त धारणा राखी बन्दी बनाएको देखिएको हुँदा यसलाई कानूनअनुकूलको थुना भनी मान्न नमिल्ने । निवेदक लालबहादुर वि. सी. लाई गैरकानूनी रूपमा थुनामा राखेको देखिँदा निजलाई तत्काल चितवन जिल्ला अदालतका न्यायाधीशको रोहबरमा थुनामुक्त गर्नु भनी नेपालको संविधानको धारा १३३ को उपधारा (२) र (३) तथा सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०७४ को नियम ३७ बमोजिम प्रत्यर्थीहरूका नाउँमा यो बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिएको।

इजलास अधिकृत: रूद्रप्रसाद अर्याल

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७७ साल भाद्र १८ गते रोज ५ शुभम्।

३८

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या. श्री प्रकाशमान सिंह राउत,** ०७७-WH-००२८, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, हरिशरण महतको हकमा कुस्मी विष्ट वि. काठमाडौं जिल्ला अदालतसमेत

मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २४९(३)(ग) बमोजिम विवादित प्रकृतिको ठगीको कसुरमा रू. ७०, ०००।- सम्म जरिवाना हुन सक्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ । केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९(२)(ग) मा "कुनै कानूनअर्न्तगत कुनै अदालतबाट भइसकेको सजाय सोही कानूनबमोजिम नै कार्यान्वयन हुनेछ, तर त्यस्तो सजाय मुलुकी अपराध संहितामा सोही कसुरमा लेखिएको सजायभन्दा बढी हुने रहेछ भने मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएको हदसम्म मात्र कार्यान्वयन हुने छ" भनी उल्लेख भएको छ। यसका अतिरिक्त फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण र कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ मा समेत कुनै कसुरका सम्बन्धमा कसुर गर्दाका बखतभन्दा सजाय निर्धारण गर्दाका बखत कानूनबमोजिम घटी सजाय हुने रहेछ भने घटी सजाय हुने गरी निर्धारण गर्नुपर्ने प्रावधान रहेको देखिन्छ । उल्लिखित कानूनी प्रावधानको अवलोकनबाट पहिले जतिसुकै बढी कैद वा जरिवाना सजाय हुने गरी ठहर भएको भए पनि हाल प्रचलित कानूनमा पहिले तोकिएको सजायभन्दा घटी सजाय हुने व्यवस्था गरिएको रहेछ भने सोही घटी सजायको हदसम्म मात्र कैद, जरिवाना असुल गर्नुपर्छ भन्ने देखिन्छ। वर्तमान कानूनी प्रावधानका सन्दर्भमा हेर्दा निवेदक हरिशरण महतउपर ठहर भएको ठगीको कसुरबापत जरिवाना रकम अधिकतम् रू. सत्तरी हजारसम्म मात्र हुन सक्ने अवस्था देखियो । यस अवस्थामा पहिले ठहर भएको रू. ३७,५०,०००।– जरिवाना अङ्क कायम गरी सोबापत दश वर्ष कैद हुने

गरी कैदी पुर्जी दिएको कार्यलाई कानूनअनुकूल मान्न नमिल्ने।

यस प्रकार मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २४९(३)(ग), केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने ऐन, २०७४ को दफा ३९(२)(ग), तथा फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण र कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा ५ बमोजिम निवेदक हरिशरण महतलाई विवादित ठगीको कसुरमा ठहर भएको जरिवाना रकम कूल रू. सत्तरी हजार मात्र असुल गर्न मिल्ने देखियो । निजलाई हुने ठहरेको दुई वर्ष कैद अवधिभन्दा केही बढी अवधि कैद बसेको देखिएको हुँदा यसरी बढी कैद बसेको अवधिबापत प्रतिदिन रू. ३००।– का दरले जरिवानाबापत कट्टा हुनेसमेत देखिन्छ । यस अवस्थामा निजलाई जरिवानाबापत १० वर्ष कैद गर्ने गरी दिइएको काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७७/४/२२ को कैदी पुर्जी कानूनप्रतिकूल देखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिएको छ । अब यसमा निज निवेदक हरिशरण महतलाई हुने जरिवाना रू. ७०,०००।– बापत निज थुनामा रहेको प्रतिदिन बापत रू. ३००।– का दरले हुन आउने रकम कट्टी गरी भुक्तान हुन बाँकी जरिवाना रकम मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १६२ समेतका कानूनबमोजिम असुल गरी अन्य कारण र मुद्दाबाट थुनामा राख्नुपर्ने भएमा बाहेक विवादित ठगी मुद्दामा भएको जरिवानाबापतको थुनाबाट मुक्त गरिदिनु भनी नेपालको संविधानको धारा १३३ को उपधारा (२) र (३) बमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरण मिश्रित परमादेशको आदेश जारी गरिएको।

इजलास अधिकृत: रूद्र प्रसाद अर्याल

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७७ साल भाद्र १८ गते रोज ५ शुभम्।

३९

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल,** *२०६९-WO-१२२२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेशको आदेश जारी गरिपाऊँ, उमेशप्रसाद साहसमेत वि. अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोगसमेत*

निवेदकहरू अस्थायी शिक्षकको रूपमा सम्म नियुक्ति भएको देखिएको निजहरूको अस्थायी अध्यापन अनुमति पत्रको म्याद मिति २०६३।१०।१४ मा समाप्त भएको, सोपछि निजहरूले स्थायी अध्यापन अनुमति पत्र पाप्त गरेको भनी देखाउन नसकेको, २०७० सालमा भएको अस्थायी शिक्षक नियुक्ति खारेज (बदर) भइसकेको देखिँदा निवेदन मागबमोजिम आदेश जारी हुने अवस्था नदेखिने। निवेदन निष्प्रयोजन भइसकेको देखिँदा खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: अम्बिकाप्रसाद दाहाल

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७७ साल असार १६ गते रोज ३ शुभम्।

४०

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान,** *०७२-CR-१८४७, जबरजस्ती करणी, गुरूप्रसाद आचार्य वि. नेपाल सरकार*

प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीको मौकाको बयान र पीडितको मौकाको कागज बेहोराबाट प्रतिवादीले पीडित नाबालिकाको योनिमा आफ्नो लिङ्ग पसाउन प्रयास गरेकोमा पीडितलाई दुखेपछि योनिबाहिर लिङ्ग रगडी वीर्य स्खलन गराएको भन्ने देखिएको छ । माथि उल्लिखित कानूनी व्यवस्था र यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्त एवम् विधिशास्त्रीय दृष्टिकोणसमेतबाट प्रतिवादीहरूले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको मान्नुपर्ने।

उपर्युक्त विवेचित आधार प्रमाणहरूबाट दिलकुमारी किसानको किटानी जाहेरी दरखास्त,

पीडितको अनुसन्धानको क्रममा अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष भएको कागज, प्रतिवादी गुरूप्रसाद आचार्यले मौकामा अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष आरोपित कसुरमा पूर्णरूपमा साबित भई गरेको बयान, निजको उक्त साबिती बयानलाई जाहेरवाला तथा पीडितको बकपत्रसमेतले पुष्टि गरेको अवस्था, वस्तुस्थिति मुचुल्काका व्यक्तिहरूले अदालतमा आई गरिदिएको बकपत्र, प्रतिवादीले पीडित आफ्नो घरमा आएको र निजलाई रू. २/- दिएको स्वीकार गरेको तर अदालतमा आरोपित कसुर गरेकोमा इन्कार रहे तापनि प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २७(१) अनुसार सो जिकिर प्रमाणित हुने कुनै सबुद प्रमाण पेस गर्न सकेकोसमेत नदेखिँदा प्रमाणविना इन्कारी बयानको आधारमा मात्र आरोपित कसुरबाट सफाइ दिन मिल्ने देखिएन। यी पुनरावेदक/प्रतिवादी गुरूप्रसाद आचार्यले जाहेरवालीले लगाएको अभियोगअनुसार वर्ष ५ की पीडित क(६) लाई जबरजस्ती करणी गरी मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ र ३ नम्बरको कसुर गरेको देखिएकोले निज प्रतिवादीलाई १२ वर्ष कैद गर्ने तथा निजबाट पीडितलाई रू. ५०,०००।- (पचास हजार रूपैयाँ) क्षतिपूर्ति भराइदिने ठहऱ्याएको फैसलालाई अन्यथा गरिरहनुपर्ने नदेखिने।

तसर्थ सुरू झापा जिल्ला अदालतबाट अभियोग मागदाबीअनुसार प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको ठहऱ्याई मिति २०७१।३।१८ मा भएको फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत इलामको मिति २०७२।०५।२९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: अम्बिकाप्रसाद दाहाल

कम्प्युटर : मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७७ साल असार १९ गते रोज ६ शुभम्।

४१

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०६९-CR-०२९७, वैदेशिक रोजगार ठगी, नेपाल सरकार वि. राजेश लामासमेत*

जाहेरवालाहरू अदालतमा उपस्थित भई आफ्नो जाहेरी बेहोरा समर्थन गर्न सक्कल लिखतसहित उपस्थित नभएको र कतिपय भरपाई (Receipt) हरूमा कम्पनीको नाउँसमेत उल्लेख नभएको र वैदेशिक रोजगारको लागि रकम दिएको कुरा उल्लेख नभएको अवस्थामा यी प्रतिवादीहरू र जाहेरवालाहरूबिच वैदेशिक रोजगारको प्रयोजनको लागि रकम लिएको भन्ने कुरामा शंकारहित तवरले पुष्टि हुन सकेको देखिएन। फौजदारी कसुर स्थापित हुन अभियुक्त माथिको आरोप शंकारहित तवरले पुष्टि हुनु पर्दछ। जाहेरवालाहरू कोही पनि न्यायाधिकरणमा उपस्थित भई आफ्नो जाहेरीको समर्थनमा बकपत्र नगरेको र अन्य स्वतन्त्र प्रमाणले आरोपको पुष्टि नभइरहेको अवस्थामा प्रतिवादीहरूउपरको अभियोग दाबी खण्डित भएको देखिएको।

यसरी प्रतिवादीहरूले जाहेरवालाहरूबाट वैदेशिक रोजगार व्यवसायको लागि नै रकम लिएको तथ्य स्थापित हुन नसकेकोले भरपाई, करार आदिबाट रकम दिएको देखिएमा सोबमोजिमको रकम नपाएमा सम्बद्ध निकायबाट सम्बद्ध व्यक्तिउपर उजुरी गरी सरोकारवालाले लिन सक्ने नै हुँदा प्रतिवादीहरू राजेश लामा, सरस्वती श्रेष्ठ (खजुवार), सुनिल श्रेष्ठ, अजयकुमार श्रेष्ठ र केशवराज पौडेलले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहऱ्याई वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०६८।४।१७ मा भएको फैसला मनासिब देखिएको।

अत: माथि विवेचित आधार, कारण र प्रमाणहरूबाट वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको फैसला मिति २०६८।४।१७ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः मुकुन्द निरौला

कम्प्युटर: विजय खड्का

इति संवत् २०७७ साल असार २१ गते रोज १ शुभम्।

४२

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७३-CR-११७३, ०७४-RC-०१४०, कर्तव्य ज्यान / चोरी, सञ्जय थापा वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. शुभम दमाई*

प्रतिवादी शुभम दमाईले अनुसन्धान अधिकारी समक्ष तथा अदालतमा समेत नरपता दमाईलाई कर्तव्य गरी मारेको भनी साबिती बयान गरेको पाइन्छ। सो बयान बेहोरा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ९ बमोजिम प्रमाण योग्य मान्न नपर्ने कुनै उचित कारण रहेको पाइएन। लास प्रकृति मुचुल्कामा उल्लेख भएका बेहोराबाट प्रतिवादी शुभम दमाईले गरेका बयानका तथ्यहरू समर्थित हुन आएका देखिन्छन । निजले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष गरेको बयानमा उल्लेख गरेअनुसारको नरपतादेवी दमाईको मुख च्यापेको भन्ने सिरानीसमेत दसीको रूपमा बरामद भएको देखिन्छ। नरपता दमाईले नाक कानमा लगाएको सुनका गहना प्रतिवादीमध्येका मुकेशकुमार ठाकुरको सुनचाँदी पसलमा गई प्रतिवादीहरूले बिक्री गरेको भन्ने कुरा मुकेश कुमार ठाकुर, नन्हे भन्ने महेश बर्मासमेतले गरिदिएको घटना विवरण कागजबाट देखिन्छ । प्रतिवादीहरूले बिक्री गरेको भनेका सुनका गहना न्यू महालक्ष्मी सुनचाँदी पसलबाट प्रहरीले बरामद गरी मिथिला सुनचाँदी पसल महेन्द्रनगर कञ्चनपुरबाट १२ आना सुनको रू. ४१, ४००।– मूल्यसमेत कायम भएको पाइयो। यसरी प्रतिवादी शुभम दमाईले नरपता दमाईलाई कर्तव्य गरी मारेको कुरामा शंकारहित तवरबाट पुष्टि भएको देखिँदा प्रतिवादी शुभम दमाईलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैद तथा मुलुकी ऐन, चोरीको महलको १४(२) नं. बमोजिम १ महिना १५ दिन कैद र बिगो रू. ४१, ४००।– को डेढी रू. ६२, १००।– जरिवाना गर्ने गरेको सुरू अदालत कञ्चनपुरको फैसला सदर गर्ने गरेको उच्च अदालत दिपायलबाट भएको फैसला मनासिब देखिएको।

प्रतिवादी सञ्जय थापाले आफू वारदातमा उपस्थित नभएको र नरपता दमाईलाई मारेको होइन भनी अदालतमा बयान गरे तापनि निजको सो जिकिर तथ्ययुक्त प्रमाणबाट पुष्टि भएको पाइएन। शव परीक्षण प्रतिवेदनमा नरपता दमाईको मृत्युको कारण Asphyxia due to hanging भनी उल्लेख भएको देखिन्छ । शव परीक्षण गर्ने डा. विष्णु खतिवडाले अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गर्दा मृतक स्वयमले घाँटीमा पासो लगाई आत्महत्या गरेको भनी भन्न सकेको देखिँदैन। निजको मृत्यु झुण्डिएको कारण निस्सासिएर भएको भन्ने प्रतिवेदनसमेतबाट प्रतिवादीको मौकाको साबिती बयानमा उल्लेख गरेबमोजिम बेहोस बनाई झुण्ड्याएको कारण मृत्यु भएको पुष्टि हुन आएको छ । सो कार्य प्रतिवादीमध्येका शुभम दमाई एक्लैले गर्न सक्ने नदेखिँदा एक्लैले मारेको भन्ने निजको अदालतको बयान र आफू कसुरदार होइन भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीको अदालतको इन्कारी बयान विश्वासलायक देखिएन । मिसिल संलग्न प्रमाणबाट प्रतिवादी सञ्जय थापासमेतले नरपता दमाईको मुख सिरानीले च्यापी बेहोस बनाई नाक कानमा लगाएको सुनको गहना झिकी निजकै धोतीले घाँटीमा पासो लगाई सिलिङ्ग पङ्खामा झुण्ड्याई कर्तव्य गरी मारेको कुरामा शंकारहित तवरबाट पुष्टि भएको देखियो । तसर्थ प्रतिवादी सञ्जय थापालाई समेत मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैद तथा चोरीको महलको १४(२) नं. बमोजिम १ महिना १५ दिन कैद र बिगो रू. ४१,४००।– को डेढी रू. ६२,१००।– जरिवाना गर्ने गरेको सुरू कञ्चनपुर जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरेको उच्च अदालत दिपायलबाट भएको फैसला मनासिब देखिएको।

अतः प्रतिवादीहरू शुभम दमाई र सञ्जय थापालाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३)

नं. बमोजिम जन्मकैद र मुलुकी ऐन, चोरीको महलको १४(२) नं. बमोजिम १ महिना १५ दिन कैद र बिगो रू. ४१,४००।– को डेढी रू. ६२,१००।– जरिवाना हुने ठहर गरी सुरू कञ्चनपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२/१/६ मा भएको फैसला सदर गर्ने गरेको उच्च अदालत दिपायलको मिति २०७३/८/२६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने। पुनरावेदक प्रतिवादी सञ्जय थापाको पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्दैन । प्रतिवादीमध्येका शुभम दमाईको हकमा साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत: डल्लुराम चौधरी, माधवप्रसाद लोहनी

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७८ साल माघ २७ गते रोज ५ शुभम्।

४३

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७३-CR-०१९३, ठगी, नेपाल सरकार वि. सुरज दाहालसमेत*

जाहेरवाला र प्रतिवादीहरूबिच जग्गा लिनेदिने व्यवहारको सन्दर्भमा भुक्तानी गर्नुपर्ने रू. १,२०,००,०००।– (एक करोड बिस लाख) रकमको चेक काटिएको, चेकअनुसारको रकम भुक्तानीका लागि जाहेरवाला सम्बन्धित बैकमा जाँदा खातामा पर्याप्त रकम नभएको भनी रकम भुक्तानी नभई चेक फिर्ता भएको भन्ने विषयमा प्रस्तुत मुद्दा चलाइएको देखिन्छ। प्रतिवादीहरूले सुरू म्याद नै गुजारी बसेको हुँदा निजहरूको भनाइ के हो भन्ने प्रष्ट छैन । यीनै प्रतिवादीहरूउपर यही चेकअनुसारको रकम भुक्तानी हुन नसकेको विषयमा पुनरावेदन अदालत पाटनमा बैंकिङ कसुर मुद्दा दायर गरिएकोसमेत देखिन्छ। सोही विषयमा प्रस्तुत ठगी मुद्दासमेत चलाइएको पाइयो । विवादको विषय वा प्रकृति हेर्दा आधारभूत रूपमा नै देवानी प्रकृतिको कारोबार, व्यवहार हो भन्ने देखिएको छ । यस अवस्थामा अभियोगपत्र मागदाबीअनुसार ठगीको कसुर ठहर नहुने भनी पुनरावेदन अदालतबाट भएको फैसलालाई त्रुटिपूर्ण मान्न नमिल्ने।

जाहेरवाला पैलाबहादुर शाहीको नामदर्तामा रहेको चितवन जिल्ला, भरतपुर नगरपालिका वार्ड नं. ५ कि.नं. २०८८ र २०९० को जम्मा क्षेत्रफल १-१-१ जग्गा प्रतिवादीहरू सञ्चालक रहेको अब्दुल कवाडी ट्रेडिङ कम्पनीको नाममा पारित गरिदिएपछि सर्तअनुसारको रकम भुक्तानी गर्नु प्रतिवादीको दायित्व थियो । तर प्रतिवादीहरूले सो दायित्व पूरा गरेको देखिएन । यो विवाद देवानी दायित्व प्रकृतिको भन्ने देखिएको छ। यस अवस्थामा प्रस्तुत मुद्दा सरकारवादी भई चल्न सक्ने देखिँदैन। सरकारवादी भई चल्न सक्ने अवस्था नदेखिएको अवस्थामा प्रस्तुत मुद्दामा तत्काल प्रचलित सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिमको प्रक्रिया अपनाउनु आवश्यक थियो । तर सुरू जिल्ला अदालत तथा पुनरावेदन अदालतबाट समेत सो पक्रिया अपनाउने गरी निर्णय भएको देखिएन। यस हदसम्म सुरू तथा पुनरावेदन अदालतको फैसला त्रुटिपूर्ण देखिन आएको।

अतः ठगीतर्फको अभियोगदाबी पुग्न नसक्ने भई प्रतिवादीहरूले आरोपित कसुरको अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर गरेको हदसम्म सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०६९/२/८ को फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७०/५/४ को फैसला मनासिब देखिँदा सो हदसम्म सदर हुने।

इजलास अधिकृत: मुकुन्द निरौला

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७७ साल असार २१ गते रोज १ शुभम्।

४४

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** *०७४-WO-००६३, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, भोलानाथ पौडेलसमेत वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय, बबरमहलसमेत*

निवेदन दाबीबाट नै प्रत्यर्थी कमलकुमार उपाध्यायको अध्यक्षतामा बारा जिल्लाको लागि मिति २०७४/०२/१५ मा कार्य समितिको गठन भएको भन्ने देखिन्छ । सो मितिमा गठन भएको कार्य समितिले पनि नेपाल पत्राकार महासंङ्घको विधान, २०६० को नियम १६(६) बमोजिम तीन वर्षको कार्यकाल पूरा गरिसकेको देखियो । यसै गरी नेपाल पत्रकार महासङ्घको तर्फबाट समेत सोका महासचिवले पेस गरेकोको लिखित जवाफमा बारा शाखाको मिति २०७४/०२/१५ मा नियमसँगत तवरले कार्य समितिको निर्वाचन भएको र सो समितिमा निर्वाचित प्रतिनिधि सभासदको उपस्थितमा नेपाल पत्रकार महासङ्घको मिति २०७४/०५/०४ र ०५ गतेमा काठमाडौंमा महाधिवेशन भई केन्द्रित निर्वाचनसमेत सम्पन्न भएको भनिएको केन्द्रीय समितिले समेत उक्त नियम १६(६) बमोजिम तीन वर्षको कार्यकाल पूरा गरिसकेको देखिने।

नेपाल पत्रकार महासंङ्घ, बारा शाखाको मिति २०७४/०२/१५ को निर्वाचन रोक्न रिट निवेदन दर्ता भएकोमा अन्तरिम आदेश जारी नभई निर्वाचन सम्पन्न भई उक्त निर्वाचनबाट निर्वाचित पदाधिकारीको पदावधि समाप्त भई नयाँ निर्वाचन सम्पन्न भइसकेको अवस्था रहेको हुँदा प्रस्तुत रिटको औचित्य समाप्त भइसकेको हुँदा यसमा थप विवेचना गरिरहनु परेन । रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: माधवप्रसाद लोहनी

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७८ साल भाद्र ३ गते रोज ५ शुभम्।

४५

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी,** ०७१-CI-१३१०, घर भत्काई जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाइपाऊँ, डोलेन्द्रराज शर्मा वि. भुमिराज शर्मा

वादी दर्ताको कि.नं. १३५८ मध्ये विवाद देखिएको न. नं. ३, ६ र ७ को जग्गा प्रतिवादी भुमिराज शर्माको भोगमा रहेको र प्रतिवादी दर्ताको कि.नं. १०५५ को भित्रको न.नं. ४ को जग्गा वादीको भोगमा रहेको भन्ने नक्सा मुचुल्काबाट देखियो । पुनरावेदक/वादी डोलेन्द्रराज शर्माले कि.नं. १३५८ समेतको आँठा साँध मिची चापी २०६८/१०/२५ मा घर टहरा छाप्रो निर्माण गर्न सुरू गरी खिचोलासमेत गरेको भनि फिराद परेको भए तापनि यी वादी प्रतिवादीबिच २०५५ सालदेखि नै साँध सिमाना सम्बन्धमा विवाद रहेको देखिन्छ। न. नं. ३, ६ र ७ मा रहेको छाप्रा टहराको सम्बन्धमा सर्जमिनका अधिकांश मानिसहरूले २०४८ सालमा नै बनाई प्रतिवादीले भोगचलन गर्दै आएको हो भनी लेखाइदिएको तथा सो सम्बन्धमा प्रतिवादीले आफ्नो प्रतिउत्तर जिकिरमा मैले २०५६ सालमा नै निर्माण गरेको घर टहरालाई भत्काई सोही जगमा हाल ७ कोठा भएको ब्लकको गारो टिनको छाना भएको अस्थायी घर छाप्रा हाल निर्माण गरेको हुँ भनेको तथा वादीले सो जग्गा आफूले भोग चलन गरेको भनी खण्डन गरेकोसमेत नदेखिँदा सो घर जग्गामा लामो समयदेखि नै प्रतिवादीको भोग चलन रहेको भन्ने देखियो । प्रस्तुत मुद्दामा मुख्य विवाद नक्सा मुचुल्काको न. नं. ६ को जग्गाको सम्बन्धमा रहेको र न. नं. ६ को विवरणमा "प्रतिवादीले बनाएको इँटाको गारो भएको टिनले छाएको तला पुरेको प्रतिवादीको भोगमा रहेको घर जग्गा हो, यसको क्षेत्रफल ०-०-३-० छ" भनी लेखिएको देखियो भने प्रतिवादी दर्ताको कि.नं. १०५५ को भित्रको न. नं. ४ को जग्गाको सम्बन्धमा नक्सा मुचुल्कामा "वादीले भोग गरेको जग्गा हो, उक्त जग्गाको क्षेत्रफल ०-०-२-१ रहेको छ" भनी लेखिएको र सो सम्बन्धमा वादीको कुनै जिकिर रहेको पनि देखिँदैन। यस सम्बन्धमा प्रतिवादीतर्फका विद्वान् कानून व्यवसायीले यिनै वादी प्रतिवादीबिच साँध सिमाना सम्बन्धमा विवाद हुँदा २०५६ सालमा नै सोही वडाका वडा अध्यक्ष कुलबहादुर राना तथा छरछिमेक, साँध सँधियारसमेतको रोहवरमा भएको सहमतिअनुसार साँध सीमान छुट्याई, तार बार र

पोलसमेत गाडी आ-आफ्नो कायम गरी लामो समय देखि दुवैपक्षले भोगचलन गरिआएको भनी गर्नु भएको बहस जिकिर मनासिवै देखियो । उल्लिखित साँध सीमानामा सोमा चित्त नबुझेको भए सोही समयमा कानूनबमोजिम उजुर गर्न सक्नेमा सो गरेको पनि पाइएन। न. नं. ३, ६ र ७ मा बनेको छाप्रा टहराको सम्बन्धमा मिति २०७०/५/३१ मा भएको सर्जमिन मुचुल्काका अधिकांश साक्षीहरूले २०४८ सालमा नै निर्माण भई प्रतिवादीले भोगचलन गर्दै आएको भनिरहेको अवस्था र २०५६ सालमा नै साँध सिमाना छुट्याई तार बार र पोल गाडिएकोमा सो तार बार र पोल सारे हटाएको भनी वादीले आफ्नो फिराद दाबीमा भन्न सकेको पनि पाइएन। नक्सा नं. ३, ६ र ७ को जग्गामा २०४८ र २०५६ सालदेखि नै प्रतिवादीको भोगचलनमा रहेको घर टहरा भत्काई सोही जगमा अस्थायी घर छाप्रा निर्माण गरेको हुँ भन्ने प्रतिवादीको जिकिर मनासिब देखियो। सोही समयदेखि घर टहरा निर्माण गरी भोगचलन गरेको देखिएको हुँदा प्रतिवादीले मिति २०६८/१०/२५ गतेबाट घर टहरा छाप्राहरू बनाई खिचोला गरेको भन्ने फिराद दाबी मुलुकी ऐन, घर बनाउनेको महलको ११ नं. को हदम्यादभित्रको समेत देखिन नआउने।

प्रतिवादीले खिचोला गरी घर बनाएको भन्ने वादी डोलेन्द्रराज शर्माको फिराद दाबी मनासिब नदेखिँदा वादी दाबी नपुग्ने ठहर गरेको सुरू बागलुङ जिल्ला अदालतको मिति २०७०/११/२६ गते भएको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत बागलुङको मिति २०७१/०७/२५ को फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने । सुरू फिराद दाबीबमोजिम घर भत्काई जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाइपाउँ भन्ने वादी डोलेन्द्रराज शर्माको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत: माधवप्रसाद लोहनी

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७७ साल चैत्र १९ गते रोज ५ शुभम्।

४६

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७२-CR-२०५९, लागु औषध (ब्राउन सुगर), नेपाल सरकार वि. कमल घिमिरेसमेत*

प्रतिवादीका साथबाट जम्मा लागु औषध ब्राउनसुगर १४० मिलिग्राम बरामद भएको देखिन्छ । बिक्री वितरण भएको भनिएको लागु औषधसहित कूल तौल करिब आधा ग्रामजति देखियो। शान्ती नेपालीलाई बिक्री गरेको भनेकोमा निज शान्ती नेपाली प्रतिवादी नरेन्द्र नेपालीको श्रीमती भन्ने देखिएको तथा निजले बयान गर्दा मेरा पतिको खल्तिबाट झिकेर खाने गरेको भनाई देखिँदा सो लागु औषध बिक्री गरेको भन्ने नदेखिने। त्यसै गरी अर्का प्रतिवादी विकास श्रेष्ठबाट बरामद भएको लागुऔषध म प्रतिवादी नरेन्द्र नेपालीकोमा सेवन गर्न मन भई गएकोमा एक पुरिया मात्र छ महङ्गो छ भनेपछि रू. ५००।- दिई लिएको भन्ने भनाइबाट सँगै सेवनका लागि गएकोमा सेवन गर्न नपाउँदै विकास श्रेष्ठसमेत समातिएको अवस्थाबाट समेत प्रतिवादी नरेन्द्र नेपालीले लागुऔषध ओसारपसार गरेको भनी मान्न नमिल्ने। निजले अनुसन्धानको क्रममा र अदालतमा समेत सेवन गर्ने गरेको भन्ने भनाई बरामद लागु औषधको परिमाणसमेतबाट सेवनमा ठहर गरेको फैसला मनासिब नै देखिएको।

अब प्रतिवादीहरू गगन घिमिरे र कमल घिमिरेको हकमा विचारगर्दा, निजहरूलाई लागु औषध नियन्त्रण ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(ङ) बमोजिम जनही ६/६ महिना कैद र रू. १/१ हजार जरिवाना हुने ठहरी पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट भएको फैसलामा चित्त नबुझाई वादीको पुनरावेदन परेको देखियो । यी प्रतिवादीहरूबाट लागु औषध बरामद भएको देखिएन । प्रतिवादी नरेन्द्र नेपालीलाई यी प्रतिवादीहरूले लागु औषध बिक्री गरेको भन्ने दाबी रहेकोमा नरेन्द्र नेपालीले अदालतमा बयानगर्दा यी

प्रतिवादीहरूबाट लागु औषध खरीद गरेको होइन भनी बयान गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीहरूले बयान गर्दा कसुरमा इन्कार रही सेवनसम्म गर्ने गरेको भनी लेखाइदिएको र यी प्रतिवादीहरूले बेचेको भन्ने जिकिर रहेको बरामद लागु औषधको परिमाण न्यून रहेकोमा सो पनि यिनै प्रतिवादीले बेचेको भन्ने प्रमाणित नभएको अवस्थासमेतबाट प्रतिवादीहरू गगन घिमिरे र कमल घिमिरेलाई सेवनमा ठहर गरेको फैसला अन्यथा गर्नुपर्ने नदेखिने।

तसर्थ, माथि उल्लिखित आधार र कारणबाट प्रतिवादीहरूले लागु औषध सञ्चय र बिक्री गर्ने प्रयोजनकै लागि कारोबार गरेको हो भन्ने यथेष्ट प्रमाण प्रस्तुत हुन सकेको नदेखिएको र प्रयोजन सेवनसम्म मात्र देखिएकोले प्रतिवादी नरेन्द्र नेपालीलाई लागु औषध नियन्त्रण ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(ङ) बमोजिम १ वर्ष कैद र रू. १०००।- जरिवाना र दोस्रो पटकेको कसुरमा सोही ऐनको दफा १६ बमोजिम थप १ वर्ष ६ महिना कैद र रू. १५००।- जरिवाना हुने, प्रतिवादी कमल घिमिरे र गगन घिमिरेको हकमा निजहरूलाई सोही ऐनको दफा १४(१)(ङ) बमोजिम जनही ६/६ महिना कैद र रू. १/१ हजार जरिवाना हुने ठहरी पुनरावेदन अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७२।८।२८ मा भएको फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: रूद्रप्रसाद अर्याल
कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट
इति संवत् २०७७ साल जेष्ठ २६ गते रोज २ शुभम्।

## इजलास नं.६

४७

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान,** ०७३-WO-०८८२, उत्प्रेषण, रूकमिणी बर्तौला वि. नेपाल सरकार, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार, काठमाडौं

त्रिभुवन राजपथअन्तर्गत मकवानपुर जिल्ला, हेटौंडा उ. म. न. पा १० मा निवेदकको घर जग्गा रहेको क्षेत्रमा सडक विस्तार गर्ने क्रममा नेपाल सरकार भौतिक पूर्वाधार तथा यातायात मन्त्रालय, सडक विभाग, मध्यमाञ्चल क्षेत्रीय सडक निर्देशनालय डिभिजन सडक कार्यालय हेटौंडा, मकवानपुरबाट मिति २०६९।५।१५ र २०६९।११।११ समेतमा राष्ट्रिय दैनिक पत्रिकामा प्रकाशित सूचनाहरूले सडक सीमाभित्र बनेका घर टहरालगायतका संरचनाहरू हटाउन निर्देशन गरेको देखियो । त्रिभुवन राजपथलगायतका राजमार्गहरूमा राजमार्ग (निर्माण व्यवस्था) ऐन, २०२१ अन्तर्गत नेपाल सरकारबाट मिति २०२१।११।११ मा प्रकाशित सूचनाबमोजिमको “राजमार्ग क्षेत्र” घोषित सडकको केन्द्रबाट दायाँ बायाँ २५/२५ गजसम्मको जग्गाको हकमा सो ऐनको दफा ५ को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशको अवस्था छ भनी प्रमाणित गर्न सकेको हदसम्म घर इमारतको र २५ गज अर्थात् ७५ फिटदेखि बाहिरको अर्थात् सार्वजनिक सडक ऐन, २०३१ को दफा ३ तथा ३ क बमोजिम नेपाल सरकारद्वारा नेपाल राजपत्रमा प्रकाशित २०३४।३।२० को सूचनाद्वारा थप सीमाको हकमा त्यस्तो जग्गा कानूनबमोजिम प्राप्त गरेर मात्र सडक विस्तार गर्न सकिने हुँदा सो प्रक्रिया प्रारम्भ गर्नु र त्यसरी कायम हुन आउने सडकको केन्द्र रेखादेखि दायाँ-बायाँ ७५ फिट बाहिरको जग्गा एवम् घर टहरालगायतका संरचनाको हकमा सोही ऐनको दफा १९ विपरीत निर्माण गरिएका होइनन् भन्ने स्थापित हुने संरचनाहरूको समेत कानूनबमोजिम क्षतिपूर्ति प्रदान गर्नु भनी निवेदक हिराकुमारी घले विरूद्ध प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत (ने.का.प. २०७७, अङ्क-१, नि. नं. १०४२२) को रिट निवेदनमा यस अदालतबाट आदेश भइसकेको र प्रस्तुत रिट निवेदन पनि सोही रिट निवेदनमा बदर गर्न माग गरेको सूचनासँग नै सम्बन्धित रहेको देखिएकाले यी रिट निवेदकको घर जग्गा उक्त आदेशबमोजिम क्षतिपूर्ति प्राप्त गर्ने क्षेत्रभित्र

पर्ने हो वा होइन सो सम्बन्धमा स्पष्ट रूपमा जाँचबुझ गरी क्षतिपूर्ति प्राप्त गर्ने क्षेत्रभित्र अर्थात् सडकको केन्द्र रेखादेखि दायाँ-बायाँ ७५ फिटबाहिरको घर जग्गा पर्ने भएमा २५ गज अर्थात् ७५ फिटबाहिर २५ मिटर नपुगेसम्मको जग्गामा निजलाई कानूनबमोजिमको क्षतिपूर्ति प्रदान गर्नु भनी विपक्षीहरूको नाममा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: विष्णुप्रसाद पौडेल

कम्प्युटर : पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७८ साल श्रावण २४ गते रोज १ शुभम् ।

४८

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७७-CR-००७४, घुस रिसवत, नेपाल सरकार वि. अशोककुमार सिंह*

प्रतिवादीले भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ३(१) बमोजिमको कसुर गरेको भनी दाबी लिएको देखिन्छ ।उक्त दफा ३(१) को कानूनी व्यवस्था हेर्दा ''राष्ट्रसेवक वा राष्ट्रसेवक हुन लागेको व्यक्तिले आफ्नो ओहदा वा सोसम्बन्धी कुनै काम गर्न वा गरिदिएबापत वा नगर्न वा नगरिदिएबापत वा आफ्नो ओहदा वा सोसम्बन्धी कुनै काम गर्दा कुनै व्यक्तिलाई मोलाहिजा वा अनिष्ट गर्न वा गराइदिएबापत वा नगर्न वा नगराइदिएबापत आफ्नो वा अरू कसैको निमित्त रिसवत लिएमा वा लिन मन्जुर गरेमा देहायबमोजिमको रिसवत लिनेलाई वा लिन मन्जुर गर्नेलाई कसुरको मात्राअनुसार देहायबमोजिम कैद र बिगोबमोजिम जरिवाना हुनेछ । रिसवत लिइसकेको भए सो रिसवत जफत हुने छ" भन्ने व्यवस्था भएको पाइन्छ । उक्त व्यवस्थाअनुसार रिसवत लिने दिने र त्यस प्रकारको कसुर गर्न दुरूत्साहन दिने कार्यलाई निषेध गरी त्यस्तो कसुरजन्य कार्य गर्ने व्यक्तिलाई सजायको व्यवस्था गरेको देखिन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा अख्तियारको कार्यालय स्वयम्ले प्रतिवादीलाई रिसवत दिन उजुरीकर्तालाई रकम उपलब्ध गराई सोही रकम प्रतिवादीबाट बरामद गरेको अवस्था देखिन्छ । यसरी आफैँले घुस दिन लगाउनु अनि आफैँले सोही रकम बरामद गरी रंगेहात पक्राउ परेको भन्दै मुद्दा चलाउनु मात्र प्रतिवादीउपरको आरोप पुष्टि गर्ने आधार प्रमाण हुन नसक्ने ।

फौजदारी मुद्दामा कुनै व्यक्तिउपर लगाइएको आरोप पुष्टि गर्ने प्रमाणको भार वादीमा रहने भनी प्रमाण ऐन २०३१ को दफा २५ को कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ ।सो अनुसार फौजदारी कसुर भएको दाबी गर्ने पक्षले नै स्वन्तत्र र वस्तुनिष्ट प्रमाण प्रस्तुत गरी कसुर दाबी पुष्टि गर्नुपर्ने हुन्छ । भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा २०(१) ले भ्रष्टाचारसम्बन्धी कसुरमा प्रमाणको भार अभियुक्तउपर हुने भन्ने कानूनी व्यवस्था गरेको देखिए पनि वादी पक्षले वस्तुनिष्ट र निश्चयात्मक प्रमाण पेस गरी आरोप पुष्टि गरिरहनु नपर्ने भन्ने कानूनको मनसाय होइन । प्रस्तुत मुद्दामा अख्तियार कार्यालय आफैँले दिएको रकम घुस दिन लगाई सोही रकम प्रतिवादीबाट बरामद गरेको अवस्था छ । नियोजित र प्रायोजित ढंगबाट अनुसन्धान गरी कुनै निर्दोष व्यक्तिलाई बनावटी वा कृत्रिम प्रमाण खडा गरेर फसाइयो भने सार्वजनिक सेवा प्रवाहमा त्यसको गम्भीर असर पर्न जान्छ । उजुरीकर्ता भनिएकी सहती कुमारी र निजलाई सहयोग गर्ने दिलिपकुमार यादव अदालतमा अनुपस्थित रही आफ्नो मौकाको कागज बेहोरालाई समर्थन हुने गरी बकपत्र गर्न नसकेको, रकम प्रतिवादीको साथबाट न भई टेबलको घर्राबाट बरामद भएको, सहयोगी भूमिका निर्वाह गर्ने भनिएका दिलिपकुमारको भूमिका नै शंकास्पद देखिएको यस अवस्थामा प्रतिवादीलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी भएको विशेष अदालत काठमाडौंको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

प्रतिवादीउपरको आरोप निश्चयात्मक तथा वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकेको, उजुरकर्ताको साथमा रहेका दिलिप कुमार यादवको उपस्थिति र भूमिका शंकास्पद रहेको, प्रतिवादीले घुस रिसवत लिएको पुष्टि हुने विश्वसनीय एवम् प्रर्याप्त प्रमाणको अभाव रहेको अवस्थामा आरोप दाबीबमोजिम प्रतिवादीले

घुस / रिसवत लिएको भन्न न्यायसङ्गत नहुने भन्दै प्रतिवादी अशोक कुमार सिंहलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी भएको विशेष अदालत काठमाडौंको मिति २०७६।१०।१६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लालबहादुर कार्की

कम्प्युटर : रेखा भट्टराई

इति संवत् २०७८ साल भाद्र १ रोज ३ शुभम्।

४९

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७७-CR-००४६, घुस भ्रष्टाचार, नेपाल सरकार वि. श्यामकिशोर भगत*

प्रतिवादी विद्युत् प्राधिकरणको अनियमितता सुधार तथा चुहावट नियन्त्रणको जिम्मेवारीमा रहेको भन्ने देखिन्छ। नयाँ मिटर जडान गर्ने गराउने जिम्मा निजको नरहेको भन्ने देखियो। अनियमितता तथा चुहावट नियन्त्रण गर्ने क्रममा उजुरी निवेदकका बाबु महेन्द्रप्रसादको घरको बिजुलीको लाइन काटी मिटर खोली यी प्रतिवादीले लगेको भन्ने उजुरी निवेदककै भनाइबाट देखिन्छ। मिटर निकालेको रिसइवीले प्रतिवादीउपर अख्तियारमा उजुरी दिएको र आयोगले दिएको पैसा ल्याई यी प्रतिवादीलाई दिइ सोही पैसा अख्तियारको टोलीले बरामद गरेको अवस्था छ। प्रतिवादीले अदालतमा बयान गर्दा आफू भाइको इलेक्ट्रिकल पसलमा बसिरहेको अवस्थामा बिजुलीको समानको लिष्टसहित उक्त पैसामा निवेदकले मेरो हातमा राखिदिएका हुन। सामानको पैसा होला भन्ने ठानी मैले समातेको हो भनी बयान गरेको देखिएको र उक्त नगद रकमसहित सामानको लिष्ट पनि बरामद भएको भन्ने देखिन्छ। यसरी अख्तियारको कार्यालय स्वयम्ले प्रतिवादीलाई रिसवत दिन उजुरीकर्तालाई रकम उपलब्ध गराई सोही रकम प्रतिवादीबाट बरामद गरेको अवस्था देखिन्छ। यसरी आफैँले घुस दिन लगाउनु अनि आफैँले सोहि रकम बरामद गरी रंगेहात पक्राउ परेको भन्दै मुद्दा चलाउनु मात्र प्रतिवादीउपरको आरोप पुष्टि गर्ने आधार प्रमाण हुन नसक्ने हुँदा वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन सक्ने अवस्था नरहने।

फौजदारी मुद्दामा कुनै व्यक्तिउपर लगाइएको आरोप पुष्टि गर्ने प्रमाणको भार वादीमा रहने भनी प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ को कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ। फौजदारी कसुर भएको दाबी गर्ने पक्षले नै स्वतन्त्र र वस्तुनिष्ट प्रमाण प्रस्तुत गरी कसुर दाबी पुष्टि गर्नुपर्ने हुन्छ। भ्रष्टाचारसम्बन्धी कसुरमा प्रमाणको भार अभियुक्तउपर हुने भन्ने कानूनी व्यवस्था भएको देखिए पनि वादी पक्षले वस्तुनिष्ट र निश्चयात्मक प्रमाण पेस गरी आरोप पुष्टि गरिरहनु नपर्ने भन्ने कानूनको मनसाय होइन। प्रस्तुत मुद्दामा अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोगको कार्यालय आफैँले दिएको रकम घुस दिन लगाई सोही रकम प्रतिवादीबाट बरामद गरेको अवस्था छ। उजुरीकर्ता भनिएका बीरेन्द्रप्रसादले अदालतमा बकपत्र गर्दा आफ्नो मौकाको कागज बेहोरालाई खण्डन गर्दै नयाँ मिटर जडानको लागि श्याम यादवले पैसा मागेका थिए। श्यामकिशोर भगतले घरमा जडान भएको बिजुलीको लाइन काटी मिटर खोली लगेको रिसइवीको कारण प्रतिवादीउपर उजुरी दिएको र निजले रकम लिन मानेका थिएनन् भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ। बिद्युत् प्राधिकरणमा निजले २०७४।०९।१९ मा नयाँ मिटर जडानको लागि निवेदन दिएको देखिँदैन। मिति २०७५।०३।२१ मा मिटर जडानको लागि निवेदन दिएको देखिएको र सो मिति अगावै अर्थात् २०७५।०३।०८ मा नै प्रतिवादीले घुस / रिसवत मागेको भनी अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोगको कार्यालयमा उजुरी निवेदन दिएको अवस्था छ। नयाँ मिटर जडान गर्ने जिम्मेवारी प्रतिवादीको रहे भएको नदेखिएको र प्रतिवादीकोसँग साथबाट रकम बरामद भएको नभई निजको भाइले सञ्चालन गरेको इलेक्ट्रिक पसलमा टेबुलको घर्राबाट बिजुलीको सामानको लिष्टसहित रकम बरामद भएको यस अवस्थामा प्रमाणको अभावमा प्रतिवादीलाई

आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी भएको विशेष अदालत काठमाडौंको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिल्ने नदेखिने।

प्रतिवादीको भाइको पसलभित्र रहेको टेबुलको घर्राबाट रकम बरामद भएको अवस्था, प्रतिवादीले अदालतसमक्ष गरेको बयान, उजुरकर्ताको बकपत्र, मिटर दर्ताको लागि निवेदन दर्ता भएको मितिसमेतका आधारमा प्रतिवादीले उजुरकर्ताबाट घुस/ रिसवत माग गरी लिएको भन्ने निश्चयात्मक प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकेको भन्दै प्रतिवादीलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी विशेष अदालत काठमाडौंबाट मिति २०७६।१०।२३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लालबहादुर कार्की
कम्प्युटर : रेखा भट्टराई
इति संवत् २०७८ साल भाद्र १ रोज ३ शुभम्।

५०

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल,** *०७७-CR-००२५, घुस रिसवत, नेपाल सरकार वि. प्रभु गिरीसमेत*

प्रतिवादी प्रभु गिरी रंगेहात पक्राउ परेको अवस्था छ, निवेदकसँग रकम माग गरेको टेलिफोन संवाद रहेको छ भन्ने पुनरावेदन जिकिरको सम्बन्धमा हेर्दा प्रतिवादी प्रभु गिरीलाई दिनको लागि निवेदकले अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोगको कार्यालयबाट PHENOLPHTHALEN पाउडर लगाएको रू.१०००।- दरका १२ थान नोट बुझी लगेको मिसिल संलग्न भरपाईबाट देखिएको र सोही रकम अख्तियारको टोलीले प्रभु गिरीबाट बरामद गरेको भन्ने बरामदी मुचुल्काबाट देखिन्छ तापनि यो रकम प्रभु गिरीको पदीय हैसियतको कामसम्बन्धी विषयसँग सम्बन्धित नभई अख्तियारको कार्यालयबाट प्रदान गरिएको सरकारी राजश्वको रकम असम्बन्धित व्यक्तिलाई फसाउने प्रयोजनको लागि प्रयोग भएको देखिन आयो। यसरी राज्यकोषको रकम घुस खुवाउने अर्थात् फसाउने (Entrapment) प्रयोजनको लागि उपलब्ध गराउनु आफैँमा कानून प्रतिकूल मान्नुपर्ने हुन्छ । यस सम्बन्धमा यसै अदालतको संवैधानिक इजलासबाट "भ्रष्टाचारको कसुरमा गोप्य अनुसन्धान गर्दा सुराकीको प्रयोग गर्ने, सङ्कित व्यक्तिउपर सुक्ष्म निगरानी गर्ने कुनै सेवाग्राही र राष्ट्रसेवकबिच रिसवत लेनदेन भएको अवस्थामा सो रकम बरामद गरी प्रमाण पेस गर्ने, प्रविधिको माध्यमबाट श्रव्य दृष्य तयार पार्ने, आर्जित सम्पत्तिको श्रोत खोज्ने, प्रमाणको बैज्ञानिक सङ्कलन र परीक्षण गर्नेलगायतका आवश्यक र उपयुक्त तरिका अपनाउनु आवश्यक हुन्छ। गोप्यरूपमा गरिने अनुसन्धानलाई अख्तियार कार्यालयले रकम दिएर पठाउने कुरामा मात्र सीमित राखेर हेरिनु वा बुझिनु उचित देखिँदैन । कसैलाई भ्रष्टाचारी ठहर गर्न उक्त व्यक्तिले घुस खाने मनसाय राखेको थियो, त्यसअनुसार घूस रकम माग गरेको थियो र स्वेच्छाले रकम बुझेको थियो भन्ने पनि पुष्टि हुनुपर्दछ। भ्रष्टाचार निवारण गर्ने कुराको आडमा स्वेच्छाचारिता अपनाउने, जालझेल वा कपटपूर्ण कार्य गर्ने, निर्दोषलाई फसाउने, सताउने जस्ता कार्य गर्न भने मिल्दैन। आयोग आफैँले पैसा दिएर वा दिलाएर अपराध गराउन मिल्छ मिल्दैन भन्ने प्रश्न विचारणीय र संवेदनशील छ। संविधान र कानूनले आयोगलाई साना ठुला सबै तहका भ्रष्टाचार नियन्त्रण गर्ने जिम्मेवारी सुम्पिएको देखिन्छ । यो जिम्मेवारी आयोगले सक्षमतापूर्वक, न्यायिक मूल्य मान्यता र मर्यादाभित्र रहेर नै निर्बाह गर्नुपर्दछ। आयोग स्वयम्ले अधिकारको दुरूपयोग गर्न हुँदैन। स्रोत साधन र अधिकारप्राप्त राज्यको संवैधानिक निकाय आफैँले घुस दिएर माझीले माछा मार्न जाल बिछ्याए जसरी कसैलाई पक्राउ गर्नु सभ्य समाजअनुकूल सुहाउने कुरा होइन। राज्यका निकायले आफ्ना नागरिकलाई फसाउने प्रपञ्चपूर्ण योजना बनाएर कार्यान्वयन गर्नु शोभनीय कुरा हुँदैन" भनी व्याख्यासमेत भएको पाइन्छ। निवेदक र प्रतिवादीहरूबिच भएको भनिएको टेलिफोन संवादमा बैंकबाट कर्जा दिलाउने सम्बन्धमा नै सो कुराकानी

भएको भन्ने देखिँदैन । अख्तियारको कार्यालय स्वयम्ले प्रतिवादीलाई रिसवत दिन उजुरीकर्तालाई रकम उपलब्ध गराई सोही रकम प्रतिवादीबाट बरामद गरेको अवस्थासम्म देखिन्छ । यसरी आफैँले घुस दिन लगाउनु अनि आफैँले सोहि रकम बरामद गरी रंगेहात पक्राउ परेको भन्दै मुद्दा चलाउनु मात्र प्रतिवादीउपरको आरोप पुष्टि गर्ने आधार प्रमाण हुन नसक्ने हुँदा वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन सक्ने अवस्था नरहने ।

फौजदारी मुद्दामा कुनै व्यक्तिउपर लगाइएको आरोप पुष्टि गर्ने प्रमाणको भार वादीमा रहने भनी प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ को कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । फौजदारी कसुर भएको दाबी गर्ने पक्षले नै स्वतन्त्र र वस्तुनिष्ठ प्रमाण प्रस्तुत गरी कसुर दाबी पुष्टि गर्नुपर्ने हुन्छ । भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा २०(१) मा भ्रष्टाचारसम्बन्धी कसुरमा प्रमाणको भार अभियुक्तउपर रहने भन्ने व्यवस्था भएको देखिए पनि वादी पक्षले वस्तुनिष्ठ र निश्चयात्मक प्रमाण पेस गरी आरोप पुष्टि गरिरहनु नपर्ने भन्ने कानूनको मनसाय होइन । प्रस्तुत मुद्दामा अख्तियार कार्यालय आफैँले दिएको रकम घुस दिन लगाई सोही रकम प्रतिवादीबाट बरामद गरेको अवस्था छ। नियोजित र प्रायोजित ढंगबाट असम्बन्धित व्यक्ति र असम्बन्धित प्रयोजनको लागि रकम प्रदान गरी कृत्रिम प्रमाण खडा गरेर फसाइयो भने त्यो अनर्थ हुन्छ । उजुरीकर्ता बीरेन्द्र प्रसाद चौरसिया र निजको दाजु योगेन्द्रप्रसाद अदालतमा उपस्थित भई आफ्नो मौकाको कागज बेहोरालाई पुष्टि हुने गरी बकपत्र गर्न नसकेको अवस्थामा प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी भएको विशेष अदालत काठमाडौंको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिल्ने नदेखिने ।

प्रस्तुत मुद्दामा भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ३(१) नै आकर्षित हुने अवस्था नदेखिएको र असम्बन्धित व्यक्तिलाई असम्बन्धित प्रयोजनको लागि अख्तियार दुरूपयोग अनुसन्धान आयोगबाट राज्य कोषको रकम उपयोग गरी मुद्दा चलाएको देखिई स्पष्टतः फसाउने प्रयोजनको लागि रकम उपयोग गरिएको देखिएको र संवैधानिक इजलासबाट भएको माथि उल्लिखित फैसला बेहोराबाट त्यसो गरिनु कानून बिरूद्ध हुने हुँदा प्रतिवादी प्रभु गिरीबाट निवेदकले दिएको रकम बरामद भएको र रंगेहात परीक्षणबाट निजले उक्त रकम लिएको देखिएकै आधारमा मात्र घुस रिसवत लिएको भनी कसुरदार कायम गर्न मिल्ने देखिएन । यस अवस्थामा प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिने गरी भएको विशेष अदालत काठमाडौंको मिति २०६७।८।२६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: लालबहादुर कार्की
कम्प्युटर : रेखा भट्टराई
इति संवत् २०७८ साल भाद्र १ रोज ३ शुभम् ।

## इजलास नं.८

५१

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या. श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ,** *०७८-WH-०२४९, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, कविता लुइटेल वि. गोरखा जिल्ला अदालतसमेत*

निवेदक परिवर्तित नाम "०७८/०७९ छ कुमार" उमेरले १० वर्षभन्दा माथिको र १४ वर्षभन्दा कम उमेर समूहभित्र परेको तथ्यमा विवाद नरहेको, उक्त उमेर समूहका नाबालकलाई कैद सजाय हुने अवस्थामा बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(२) बमोजिम बढीमा ६ महिनासम्म मात्र कैद सजाय हुन सक्ने देखिएको, बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा २४(२) को (ख) बमोजिम तीन वर्ष वा सोभन्दा बढी कैद सजाय गर्नुपर्ने कसुरजन्य कार्यको अभियोग लागेका बालबालिकालाई मात्र मुद्दाको पुर्पक्षको लागि बाल सुधार गृहमा राख्न सकिने व्यवस्था रहेको देखिएको तथा यसरी बाल सुधार

गृहमा राख्नुपर्दा पनि सो को पर्याप्त कारण खुलाई आदेश गर्नुपर्नेमा सोबमोजिमको कारण खुलाई आदेश गरेको पनि नदेखिएको सन्दर्भमा गोरखा जिल्ला अदालत, बाल इजलासबाट निज नाबालक परिवर्तित नाम "०७८/०७९ छ कुमार" लाई मुद्दाको पुर्पक्षको लागि बाल सुधार गृह सराङकोट, पोखरामा राख्न पठाउने गरी मिति २०७८/१०/०७ मा भएको आदेश कानूनसङ्गत भन्न मिल्ने नदेखिई गैरकानूनी मान्नुपर्ने देखिँदा निवेदन मागदाबीबमोजिम विपक्षीहरूका नाममा सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०७४ को नियम ३७ (क) (ख) बमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने ।

निवेदकलाई अदालतले खोजेको बखत उपस्थित गराउने गरी कागज गराई बाल सुधार गृहबाट मुक्त गरी अविलम्ब निजको अभिभावकको जिम्मा लगाउनु भनी गोरखा जिल्ला अदालतका नाममा लेखी पठाइदिने ।

इजलास अधिकृत:- चेतराज पन्त / श्रेया पौडेल

इति संवत् २०७९ साल असार ८ गते रोज ४ शुभम् ।

५२

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ,** *०७५-CI-०७७७, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, लक्ष्मण पौडेल वि. जिल्ला बागलुङ, नगरपालिकाको कार्यालय, बागलुङसमेत*

सुरू निवेदनमा मिति २०७४।०३।१२ गते राति विपक्षीहरूले इन्टेक तथा पाइप तोडफोड गरिदिएको विषयमा माग गरिएको क्षतिपूर्ति सम्बन्धमा न्यायिक समितिको निर्णयमा नबोलिएको भनी रिट निवेदनमा सो सन्दर्भ उठान गरिएकोमा सो प्रसङ्गको क्षतिपूर्तिको विषयमा खानेपानीको न्यायोचित व्यवस्थापन गर्ने गरी खानेपानी उपभोक्ताहरूको बिचमा सहमति भएकोले केही बोलिरहन परेन भन्ने देखिन्छ । मिति २०७४।०९।१६ मा भएको सहमति अनुसार प्राविधिक डिजाइन अनुसारको खानेपानी इन्टेक बागलुङ नगरपालिकाले निर्माण गरिदिने भनिएकोमा सो निर्माणका लागि पाइपलगायतका सामाग्री सम्बन्धित स्थानमा पठाइएको भन्ने बागलुङ नगरपालिकाको लिखित जवाफमा उल्लेख भएको पाइन्छ । यसरी तोडफोड भएको संरचना नै नयाँ डिजाइन अनुसार निर्माण हुने स्थितिमा सो संरचनाका सम्बन्धमा क्षतिपूर्ति माग हुनु सान्दर्भिक हुने नदेखिँदा सोसम्बन्धमा केही बोलिरहनु नपर्ने भनी उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासबाट भएको आदेश मनासिब नै देखिने ।

निजी जग्गामा रहेको भुते छहरामा अन्य व्यक्तिसमेतले उपभोग गर्न पाउने गरी सार्वजनिक उपयोगका लागि प्राप्त गर्दा जग्गा प्राप्ति ऐनको प्रक्रिया पूरा गर्नुपर्ने पुनरावेदकको जिकिर छ त्यसतर्फ हेर्दा पुनरावेदकले प्रारम्भमा निवेदन गर्दा निजी जग्गा सम्बन्धमा क्षतिपूर्ति माग गरेको देखिँदैन । यद्यपि, उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासले आफैँ अग्रसरता देखाई निजी जग्गा भएकोले पुनरावेदक लक्ष्मण पौडेललाई क्षतिपूर्ति दिनुपर्ने विषय उठान गरी परमादेशको आदेश जारी गरेको देखिएको र सो परमादेशको कार्यान्वयनको लागि उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासबाट च. नं. १५३२ मिति २०७५।०२।०८ मा बागलुङ नगरपालिकामा पत्राचारसमेत भइसकेको देखिँदा त्यस विषयमा थप बोलिरहनुपर्ने नदेखिने ।

बागलुङ नगरपालिकाको नगर प्रमुखको रोहबरमा मिति २०७४।०९।१६ मा भएको सहमतिको सर्तहरू आफ्नो हस्ताक्षर नरहेकोले आफ्नो हकमा लागु हुन नसक्ने भनी पुनरावेदक लक्ष्मण पौडेलले जिकिर लिएको सन्दर्भमा सो सहमति पत्र अवलोकन गर्दा, पुनरावेदक लक्ष्मण पौडेलबाहेक अन्य पुनरावेदक ध्रुवलाल पौडेलसमेतको हस्ताक्षर रहे भएको र सो सहमति पत्रमा भएको सर्तमध्ये उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासमा चलेको मुद्दा फिर्ता लिने सर्त भए पनि सो सर्त कार्यान्वयन नै नभई यस चरणसम्म आएको देखिन्छ । अन्य सर्तहरू पनि कुँडुले फेदीका

बासिन्दा निवेदकहरूको लागि नगरपालिकाले नयाँ डिजाइन अनुसार इन्टेक निर्माण गरिदिने एवम् एक घर एक धाराको व्यवस्था गरिदिने तथा छाप र तल्ली बान्द्रेका बासिन्दाको लागि पाइपमार्फत खानेपानीको प्रबन्ध गर्नेलगायत सार्वजनिक हक हितको विषयहरू नै समावेश रहे भएको पाइन्छ। सो सहमतिमा रहे भएका यो यस्तो बुँदाहरूले मलाई प्रतिकूल असर पार्ने भनी पुनरावेदकले उल्लेख गरेको पनि देखिँदैन। यसरी, नगर प्रमुखको उपस्थितिमा कुँडुले फेदी, छाप र तल्ली बान्द्रेका पुनरावेदक र विपक्षीहरूसमेतका बिच भएको सहमतिले पुनरावेदकहरूलाई कुनै प्रतिकूल असर पार्नेसमेत नदेखिएको र उक्त मिति २०७४।०९।१६ को सहमति कार्यान्वयन गर्ने व्यवस्था मिलाउनु भनी बागलुङ नगरपालिकाको नाममा परमादेशको आदेश जारी गर्ने उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासबाट भएको आदेश माथि उल्लेख भएबमोजिम कार्यान्वयनको लागि पत्राचारसमेत भइसकेको देखिँदा सो आदेशलाई अन्यथा गर्नुपर्ने देखिन नआउने।

वैकल्पिक उपचार उपलब्ध हुँदाहुँदै निवेदकहरूले बिना औचित्य सो बाटो परित्याग गरी रिटको असाधारण अधिकारक्षेत्र अवलम्बन गरेकोले प्रस्तुत पुनरावेदन पत्र खारेज गर्नुपर्ने हो कि भन्नेतर्फ हेर्दा, उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासबाट मिति २०७४।०९।१६ को सहमति कार्यान्वयन गर्ने भनी परमादेशको आदेश जारी भएको देखिन्छ। सो मिति २०७४।०९।१६ को सहमति कार्यान्वयन गर्नु गराउनु भनी भएको आदेश मागदाबीभन्दा बाहिरको भन्ने आधारमा मात्र खारेज गरिदिँदा पनि सो सहमति न्यायिक समितिबाट मिति २०७४।०६।०९ मा निर्णय भएपछि मिति २०७४।०९।१६ मा भएको र प्रस्तुत रिट निवेदनभन्दा बाहिरको विषयवस्तु हुँदा कार्यान्वयन नहुने भन्ने अवस्था देखिँदैन। साथै, प्रस्तुत रिट निवेदनको सन्दर्भ सो सहमति बदर गरिपाउँ भन्ने पनि होइन। मिति २०७५।०१।०५ मा आदेश भएपश्चात् सो आदेश कार्यान्वयनको लागि बागलुङ नगरपालिकामा उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासबाट पत्राचारसमेत भइसकेको अवस्था देखिन्छ। उल्लिखित अवस्थाबाहेक न्यायिक समितिको निर्णय बदर गर्न उत्प्रेषणको आदेश जारी भएको देखिँदैन। साथै, इन्टेक तथा पाइपको क्षतिपूर्ति सम्बन्धमा समेत केही बोलिएको देखिन आउँदैन। यस स्थितिमा पुनरावेदन खारेज गर्दा वा सदर गर्दासमेत परिणाम एउटै आउने देखिँदा प्रस्तुत पुनरावेदन खारेज गरिरहनु नपर्ने।

अतः बागलुङ नगरपालिका, न्यायिक समितिको मिति २०७४।०६।०९ को निर्णय स्थानीय सरकार सञ्चालन ऐन, २०७४ अनुरूप नै भए गरेको देखिएकोले उत्प्रेषणको आदेश जारी नगरेको एवम् नयाँ डिजाइनअनुसार इन्टेक निर्माण भएकोले त्यसतर्फको क्षतिपूर्ति सम्बन्धमा नबोलिएको तथा इन्टेक निर्माणमा प्रयोग हुने जग्गाबापतको क्षतिपूर्ति दिनु भनी उच्च अदालत पोखरा, बागलुङ इजलासबाट भएको मिति २०७५।०१।०५ को आदेश मनासिब नै रहेको र सो आदेशले पुनरावेदकहरूलाई प्रतिकूल असर पारेकोसमेत नदेखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः किरणकुमार सिंह

कम्प्युटर - सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०७९ साल जेष्ठ ३१ गते रोज ३ शुभम्।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसारको फैसला भएको छ।

- ०७५-CR-२४१०, भ्रष्टाचार, (घुस/रिसवत), ईश्वरवन्ध गौतम वि. नेपाल सरकार
- ०७६-CR-००६८, भ्रष्टाचार, (घुस/रिसवत), प्रकाश घिमिरे वि. नेपाल सरकार
- ०७५-CR-२००७, भ्रष्टाचार, (घुस/रिसवत), प्रविणकुमार झा वि. नेपाल सरकार
- ०७४-CR-११३१, भ्रष्टाचार, (घुस/रिसवत), विरेन्द्र कुसियैत वि नेपाल सरकार
- ०७४-CR-०३७९, भ्रष्टाचार, (घुस/रिसवत), मेघनाथ चौलागाई वि. नेपाल

सरकार

- ०७३-CR-१२३६, भ्रष्टाचार, (घुस/रिसवत), दीपा श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार
- ०७२-CR-०३३१, भ्रष्टाचार, (घुस/रिसवत), पुष्पराज जोशी वि. नेपाल सरकार
- ०७५-CR-१७४३, भ्रष्टाचार, (घुस/रिसवत), जयराज न्यौपाने वि. नेपाल सरकार

## इजलास नं.१०

५३

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के. सी. र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,** *०७५-WO-०७१९, उत्प्रेषणसमेत, मोहन चन्द्र सिंहसमेत वि. नेपाल सरकार, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत*

विवादित मिति २०७५।६।३० को नेपाल राजपत्र खण्ड ६८, संख्या ३५ को नेपाल सरकार सञ्चार तथा सूचना प्रविधि मन्त्रालयको सूचनाको (क) मा श्रमजीवी पत्रकार, कामदार/कर्मचारी : १. ऐन पूर्ण कार्यान्वयन हुने राष्ट्रिय मिडियाका श्रमजीवी पत्रकार:- २४,३७५।- २. ऐन पूर्ण कार्यान्वयन हुने राष्ट्रिय मिडियाका श्रमजीवी कामदार/कर्मचारी :- १८,०००।- ३. अन्य सञ्चार प्रतिष्ठानका श्रमजीवी पत्रकार :- १७,६२५।– र ४. आम सञ्चार प्रतिष्ठानका श्रमजीवी कामदार कर्मचारी :- १५, ६२५।- भन्ने उल्लेख भएको व्यवस्थाहरूमध्ये क्र. सं. २ को श्रमजीवी कामदार कर्मचारी भन्ने र क्र. सं. ४ को श्रमजीवी कामदार/कर्मचारी भन्ने व्यवस्थाहरू श्रमजीवी पत्रकारसँग सम्बन्धित विषय नभई कामदार/कर्मचारीहरूसँग सम्बन्धित रहेको देखिनाले श्रमजीवी कामदार/कर्मचारीहरूको पारिश्रमिक श्रमजीवी पत्रकारसम्बन्धी ऐन, २०५१ बमोजिम गठित समितिले निर्धारण गर्न मिल्ने तथा श्रमजीवी पत्रकारको पारिश्रमिक निर्धारणसम्बन्धी कार्य नेपाल सरकार सञ्चार तथा सूचना प्रविधि मन्त्रालयको अधिकार क्षेत्रभित्र पर्ने विषय हो भनी मान्न मिल्ने नदेखिनाले उक्त नेपाल सरकार सञ्चार तथा सूचना प्रविधि मन्त्रालयले सबै सञ्चार प्रतिष्ठानहरूमा २०७५।७।१ देखि लागु हुने गरी सञ्चार प्रतिष्ठानहरूमा कार्यरत श्रमजीवी पत्रकारबाहेकका कामदार र कर्मचारीहरूको न्यूनतम पारिश्रमिकमा २५% वृद्धि गरी प्रकाशित गरेको सूचना कानूनसम्मत नदेखिने।

तसर्थ, नेपाल सरकार, सञ्चार तथा सूचना प्रविधि मन्त्रालयले मिति २०७५।६।३० को नेपाल राजपत्र खण्ड ६८, संख्या ३५ मा सबै सञ्चार प्रतिष्ठानहरूमा २०७५।७।१ देखि लागु हुने गरी सञ्चार प्रतिष्ठानहरूमा कार्यरत श्रमजीवी पत्रकारबाहेकका कामदार र कर्मचारीहरूको न्यूनतम पारिश्रमिकमा २५% वृद्धि गरी प्रकाशित गरेको सूचना, सोसँग सम्बन्धित सम्पूर्ण काम कारबाहीहरू उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिदिएको छ । सञ्चार प्रतिष्ठानमा कार्यरत श्रमजीवी पत्रकारबाहेक अन्य कामदार कर्मचारीहरूसमेतको पारिश्रमिक तोक्ने वृद्धि गर्नेसम्बन्धी मिति २०७५।६।३० को सूचना तथा सोसम्बन्धी काम कारबाहीहरू कार्यान्वयन नगर्नु नगराउनु भनी विपक्षीहरूका नाममा प्रतिषेधसमेत जारी हुने।

इजलास अधिकृत (उपसचिव) : सुरेश के. सी.

कम्प्युटर : प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७८ साल फाल्गुण २९ गते रोज १ शुभम्।

५४

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,** *०७६-CR-०७३१, वन्यजन्तु चितुवाको (छाला) र कस्तुरीको बिना (ओखेटोपहार) ओसारपसार, नेपाल सरकार वि. देवे बोहरा*

प्रतिवादी देव बोहराको साथबाट चितुवाको छाला मात्र बरामद भएको देखिन्छ भने सो छाला दफा २६(१) बमोजिम हिउँ चितुवा वा ध्वाँसे चितुवाको नभई सामान्य चितुवाको भएको भन्ने परीक्षण प्रतिवेदनबाट देखियो । चितुवाको छाला भैँडा ग्वालाहरूले सितैमा

दिएकोले विछ्याउने काम लाग्छ भनी राखेको अवस्थामा घरबाट प्रहरीले बरामद गरेको हो मैले चितुवा मारी छाला राखेको होइन भन्ने प्रतिवादी देव बोहराको बयान बेहोराबाट देखिन्छ । निज आफैँले चितुवा मारी छाला राखेको भन्ने मिसिलबाट खुल्न सकेको देखिँदैन । प्रतिवादी देव बोहराले आफूले चितुवा जनावरलाई मारेर छाला राखेको नदेखिई ग्वालाहरूले सित्तैमा प्रतिवादी देव बोहरालाई दिएकोमा निजले ओच्छ्याउन काम लाग्छ भनी राखेको देखिँदा सोही आधारमा निजको हकमा उच्च अदालत तुलसीपुरबाट भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न सकिने अवस्था नदेखिने।

त्यस्तै अर्का प्रतिवादी हर्कबहादुर बुढाको साथबाट कस्तुरीको बिना बरामद भएको देखियो साथै निज आफैँले कस्तुरी मृग मारी कस्तुरीको बिना राखेको भन्ने मिसिलबाट नदेखिए तापनि निजबाट बिना बरामद भएको र सो बिना कस्तुरी मृगको भएको भन्ने राष्ट्रिय विधि विज्ञान प्रयोगशालाको परीक्षण प्रतिवेदनबाट देखिन्छ। कस्तुरीको बिना निज प्रतिवादीबाट बरामद भएको अवस्थालाई प्रतिवादीले पनि अन्यथा भन्न सकेका छैनन् । कानूनले निषेध गरेको वस्तु आफ्नो साथबाट बरामद भएको अवस्थाबाट निजले फौजदारी कसुरबमोजिमको सजाय दायित्व बेहोर्नु नै पर्ने हुँदा निजको हकमा उच्च अदालत तुलसीपुरले गरेको फैसला मिलेकै देखिन आयो। प्रतिवादीहरूलाई सुरू अभियोग माग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः प्रतिवादी देव बोहराको साथबाट चितुवाको छाला मात्र र प्रतिवादी हर्कबहादुर बुढाको साथबाट कस्तुरीको बिना मात्र बरामद भएको अवस्थामा प्रतिवादीहरूलाई राष्ट्रिय निकुञ्ज तथा वन्यजन्तु संरक्षण ऐन, २०२९ को दफा १९(१) को कसुरमा ऐ. ऐनको दफा २९(१) र २६(६) बमोजिम जनही ६ वर्ष कैद र रू. ६०, ०००।- (साठी हजार) जरिवाना हुने ठहऱ्याई सुरू दाङ देउखुरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।२।२९ मा भएको फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादी देवबहादुर बोहरालाई राष्ट्रिय निकुञ्ज तथा वन्यजन्तु संरक्षण ऐन, २०२९ को दफा २६(६) बमोजिम ६ महिना कैद र रू. २००००।- (बिस हजार) जरिवाना हुने र अर्का प्रतिवादी हर्कबहादुर बुढालाई ऐ. ऐनको दफा २६(१) बमोजिम ५ वर्ष कैद सजाय हुने ठहऱ्याएको उच्च अदालत तुलसीपुरको मिति २०७६।३।२३ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । प्रतिवादीहरूलाई सुरू अभियोग माग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत (उप सचिव) : हेमराज तिमिल्सैना

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन / प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७८ साल चैत्र १ गते रोज ३ मा शुभम्

५५

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७०-CR-१५१५, कुटपिट, अङ्गभङ्ग, रिजवान रजानूरीसमेत वि. नेपाल सरकार*

पीडित अब्बास मुसलमानलाई प्रतिवादी रिजवान रजानुरी मुसलमानले सार्वजनिक बाटो गल्लीको विषयलाई लिई लाठी, डन्डा, इँटासमेतले कुटपिट गरी सख्त घाइते तुल्याई टाउकोमा चोट र बायाँ हात दुई ठाउँमा भाँचिएको घटनाको सम्बन्धमा पीडित अब्बास मुसलमानलाई जाहेरीमा उल्लिखित प्रतिवादीहरूले नै कुटपिट गरी घाइते बनाएका हुन भन्नेसमेत बेहोराको वस्तुस्थिति मुचुल्काका अनवर मुस्तफा, नान्हु धोवी, दरवारिया यादवले सुरू अदालतमा गरेको बकपत्रबाट देखिन्छ । प्रतिवादी रिजवान रजानुरीले हानेको बाँसको चोटले पीडित अब्बास मुसलमानको टाउकोमा चोट र बायाँ हात दुई ठाउँमा भाँचिएको भनी अर्का पीडित यार मोहम्मद मुसलमानले सुरू अदालतमा बकपत्र गरेको अवस्थामा सो कुरा मिसिल संलग्न पीडितको एक्सरे र घा जाँच प्रतिवेदन वस्तुस्थिति मुचुल्का र अन्य प्रमाण

कागजसमेतबाट पुष्टि हुने देखिन्छ । लुम्बिनी अञ्चल अस्पतालको मिति २०६५/०३/२० को प्रतिवेदनमा पीडित अब्बास मुसलमानको बायाँ हातको नयाँ एक्सरे लिई ती एक्सरे जाँच गरी हेर्दा "Lt. Radius को Distal end को एक ठाउँमा र Lt. Ulna को दुई ठाउँमा Fracture (Segmental Fracture) मध्ये Lt. Ulna को Distal (Fracture) Site र Lt. Radius को Distal end (Fracture) जोडिइसकेको भए तापनि Lt. Ulna को Proximal (Fracture) site भने नजोडिएको (Gap Non Union) हुनाले निजले पूर्णरूपमा काम गर्न सक्ने अवस्थामा नरहेको" भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ । अत: वस्तुस्थिति मुचुल्काका व्यक्तिहरूको बकपत्र, पीडित यार मोहम्मद मुसलमानले गरिदिएको बकपत्र, मिसिल संलग्न अन्य प्रमाणहरू तथा पीडितको घा जाँच प्रतिवेदनसमेतबाट प्रतिवादीहरूसमेतले पीडित अब्बास मुसलमानलाई कुटपिट गरी अङ्गभङ्ग बनाएको पुष्टि हुने देखिने।

पीडित यार मोहम्मद मुसलमान र पीडित अब्बास मुसलमानको हात कुटपिटको चोटबाट मौकामा नै फ्याक्चर भएकोमा कुनै विवाद देखिँदैन । पीडित यार मोहम्मद मुसलमानको दाहिने हात प्रतिवादी फलज रसुल मुसलमानले र अब्बास मुसलमानको बायाँ हातको दुई ठाउँमा प्रतिवादी रिजवान रजानुरीले हान्दा निजहरूको हात फ्रेक्चर भएर भाँच्चिएको छ । उक्त तथ्यलाई मौकामा वारदात स्थलमा देख्ने, घटनाबाट पीडित भएका अन्य व्यक्तिहरू, जाहेरवाला बैतुल्लाह मुसलमान, सिराज अहमद खां, पीडित यार मोहम्मद मुसलमान र अब्बास मुसलमानको बकपत्रबाट पुष्टि भएको देखिन्छ । जाहेरवालाको जाहेरी बेहोरा र पीडितहरूको बकपत्र भनाइलाई मौकाको घाँ जाँच केश फाराम र लुम्बिनी अञ्चल अस्पतालले पीडित यार मोहम्मद मुसलमान र अब्बास मुसलमानलाई लुम्बिनी अञ्चल अस्पतालबाट जाँच गरी प्राप्त भएको प्रतिवेदनबाट नै पुष्टि भएको देखिन्छ । पीडित यार मोहम्मद र अब्बास मुसलमानको हात प्रतिवादीहरूको कुटपिटको चोटबाट मौकामा नै फ्रेक्चर भएको र भाँच्चिएको छ, उपचार पछि पनि मिति २०६४।११।०३ मा लुम्बिनी अञ्चल अस्पतालले पुनः परीक्षण गरिदिएको प्रतिवेदनमा पीडित यार मोहम्मदको दाहिने हातको कुहिना भाच्चिएको र नजोडिएको र उक्त हातले पूर्ण रूपमा काम गर्न नसक्ने भन्ने र पीडित अब्बास मुसलमानको बायाँ हातको Fracture भएको Lt. Ulna को Distal (Fracture) जोडिइसकेको भए तापनि Lt. Ulna को Proximal (Fracture) Site भने नजोडिएको हुनाले निजले पूर्ण रूपमा काम गर्न सक्ने अवस्था नरहेको भन्ने उल्लेख भएको स्थितिलाई समग्रमा मूल्याङ्कन गर्दा उपचारबाट पनि पीडितद्वय यार मोहम्मद र अब्बास मुसलमानको हात पूर्वअवस्थामा नै काम लाग्न र कार्य गर्न सक्ने अवस्थाको देखिँदैन। कुटपिटको २ नं. ले हात खुट्टा वा यिनैको जोर्नी भाँची फोरी फुकाली, बेकम्मा पारिदिएमा अङ्गभङ्ग हुने भनेको छ । प्रतिवादीतर्फका विद्वान् अधिवक्ताले पीडितहरूको हात उपचारबाट निको भएको छ, काम लाग्ने अवस्थामा छ, हातको जोर्नी भाँच्चिएको र फुकालिएको अवस्था नहुँदा अङ्गभङ्गको कसुर भित्र पर्दैन भन्ने जिकिर रहेको छ । त्यस सन्दर्भमा हेर्दा, कुटपिटको २ नं. मा "हात खुट्टा वा यिनैको जोर्नीमा भाँची, फोरी, फुकाली बेकम्मा पारिदिएमा" भनी रहेको वाक्यांशले हात खुट्टालाई भाँची फोरी फुकाली बेकम्मा पारिएकोमा पनि अङ्गभङ्ग हुने देखिन्छ । प्रस्तुत वारदातमा पीडित यार मोहम्मदको दाहिनेको कुहिना र अब्बास मुसलमानको बायाँ हात Lt Ulna र Lt. Radius फ्रेक्चर भएको छ । उपचारबाट निको भए पनि पहिलेकै अवस्थामा पूर्ण रूपमा काम लाग्न सक्ने भनी चिकित्सकको प्रतिवेदनमा भन्न सकिएको छैन । कुटपिटमा मौकामा फ्रेक्चर भएपछि उपचारबाट निको भए पनि त्यस अङ्गले पूर्ववत रूपमा काम गर्न नसक्ने अवस्थाको भएमा त्यस्तो अवस्थाको कुटपिट र त्यसको परिणामबाट भएको अवस्थालाई सामान्य

रूपमा लिन मिल्ने देखिँदैन । मौकाको वारदातमा भाँच्चिएको (Fracture) र उपचारबाट निको भएपछि पनि परीक्षण गरी हेर्दा पूर्ण रूपमा काम लाग्न नसक्ने अवस्थाको कुटपिटको कार्यलाई अङ्गभङ्ग नै भएको मान्नुपर्छ। पीडित घाइते यार मोहम्मदको दाहिने हात र अब्बास मुसलमानको बायाँ हातले पूर्ववत् रूपमा काम गर्न नसक्ने अवस्थाको रहेको भन्ने चिकित्सकको परीक्षण प्रतिवेदनले किटानी गरी राय प्रस्तुत गरेको हुँदा प्रतिवादीहरूको उक्त कार्य कुटपिटको अङ्गभङ्गको कसुरको दायराभित्र नै पर्न आउने देखिने।

अतः यार मोहम्मद मुसलमान र अब्बास मुसलमानलाई कुटपिट गरी अङ्गभङ्ग गरेकोमा प्रतिवादी रिजवान रजानुरी र खम्बन भन्ने फजले रसुल मुसलमानलाई कुटपिटको महलको २ नं. विपरीत कसुरमा ऐ. को ६ नं. बमोजिम जनही ४ वर्ष कैद र रू.२,५००/- जरिवाना हुने तथा अन्य प्रतिवादीसमेतको हुल बल भई कुटपिटसमेत गरेको ठहर भई प्रतिवादीमध्येका अस्फाक अहमद मुसलमान नाबालक हुँदा निजका हकमा रू.२, ००/- जरिवाना हुने र अन्य प्रतिवादीहरूलाई रू.४,००/- का दरले जरिवाना हुने तथा प्रतिवादी रिजवान रजानुरीबाट अब्बास मुसलमानले रू.१६,२२४/७० र प्रतिवादी फजले रसुलबाट पिडित यार मोहम्मदले रू. १०, १६०/- घा खर्चबापत पाउने ठहर गरी कपिलवस्तु जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला केही उल्टी गरी पीडितलाई घा खर्च भराउने गरेको रकमको सम्बन्धमा मिलेको नदेखिँदा सो हदसम्मको फैसला उल्टी गरी कुटपिटको महलको ६ नं. बमोजिम प्रतिवादीलाई जरिवाना हुने ठहर भएको रकम रू.२५००/- सम्म घा खर्च भराइदिने ठहर्छ, सोबाहेक अन्य कुरामा सुरू इन्साफ मनासिब हुँदा सदर हुने ठहर्छ भन्ने पुनरावेदन अदालत बुटवलबाट भएको मिति २०६९।५।१९।३ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। अभियोग दाबीबाट सफाइ दिलाइपाउँ भन्ने पुनरावेदक/प्रतिवादी रिजवान रजानुरीसमेतको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत (उप-सचिव) : ललित सापकोटा

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७९ साल वैशाख ५ गते रोज २ शुभम्

५६

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७१-CR-०६६८, ठगी, नेपाल सरकार वि. नन्दकिशोर कलवार*

प्रतिवादीको खातामा पर्याप्त मात्रामा रकम नहुँदा नहुँदै चेक काटी दिई जाहेरवालालाई झुक्याई नभएको रकम छ भनी चेक दिएको भन्ने हो । बैंक अफ एसिया लिमिटेडको मिति २०६८/०६/२८ गतेको Cheque Return Advice भनी दुईवटा चेकहरू फिर्ता गरेको बेहोरा मिसिल संलग्न प्रमाण कागजबाट देखिएकोले चेकको अनादर भएको भन्नेमा विवाद देखिएन । यस कुरालाई ने.का.प. २०७०, पुनरावेदक/वादी महेश्वरलाल श्रेष्ठ विरूद्ध डि. एम. ब्रिक एन्ड ट्रायल फ्याक्ट्री प्रा. लि. को सञ्चालक बिष्णु महर्जनसमेत भएको चेक अनादर मुद्दा (नि. नं. ८९५० पृष्ठ, १३७) मा व्याख्या भई स्थापित "आफ्नो खातामा रकम नै मौज्दात नरहेको थाहा जानकारी हुँदाहुँदै चेक काटेर दिएको र चेक साट्न नसकेको कार्यले बैङ्किंग प्रणालीमा अविश्वसनीयता उत्पन्न हुन जाने हुँदा कम्पनी सञ्चालकहरूले गरेको कार्यलाई विद्यमान कानूनअनुरूपको कार्य मान्न नमिल्ने" भन्ने नजिर प्रस्तुत मुद्दाको सन्दर्भमा समेत सान्दर्भिक देखिन्छ । करारनामाको मर्मलाई गलत उपचारको माध्यमले निस्तेज बनाउन मनासिब नहुने एकातिर छ भने विनिमय अधिकारपत्र ऐन, २०३४ को दफा १०७क. मा "बैंकमा आफ्नो निक्षेप छैन वा निक्षेप भए पनि पर्याप्त छैन भन्ने जानाजानी कुनै व्यक्तिले चेक काटी कसैलाई हस्तान्तरण गरेमा र त्यसरी हस्तान्तरण गरिएको चेक भुक्तानीको लागि सम्बन्धित बैंकसमक्ष प्रस्तुत गर्दा पर्याप्त निक्षेप नभएको कारणबाट बैंकबाट चेक अनादर भएमा चेक काट्ने व्यक्तिबाट

चेकमा उल्लिखित रकम र ब्याजसमेत धारकलाई भराई चेक काट्ने व्यक्तिलाई तीन महिनासम्म कैद वा तीन हजार रूपैयाँसम्म जरिवाना वा दुवै सजाय हुने छ" भन्ने व्यवस्था भएकोले बैंकमा आफ्नो निक्षेप छैन भन्ने जानीजानी चेक काटी कसैलाई हस्तान्तरण गरेमा त्यसलाई कसुर मानी चेकमा उल्लेख भएको रकमसमेत भराई सजायसमेतको व्यवस्था गरेको देखिने।

करारनामाको लिखतमा दुई पक्ष भई रूपैयाँ लेनदेन गर्ने, इँट्टा उद्योग बिक्री गर्ने सर्त उल्लेख भएको देखिँदा लिखतमा उल्लेख भएको सर्त पालना नभएमा या रूपैयाँ पाउनुपर्नेमा नदिएमा त्यसको उपचारको माध्यम नै करारबमोजिमको सर्तनामा भएकोले प्रतिवादीले जाहेरवालालाई दिनुपर्ने भनेबमोजिमको रकम दिएन, दिलाइपाउँ भन्ने विषयलाई ठगीको व्यवस्थाले समेट्ने देखिँदैन । दुई पक्षबिचमा भएको भाखाको तमसुकको लिखतलाई अन्य कानूनी मान्यता प्राप्त तमसुकसरह स्वतन्त्र रूपमा अदालतले मान्यता दिने र यस्तो लिखतलाई कानूनी रूपमा मान्यता दिई चलन चलाउन सकिने प्रकृतिको हुनुपर्ने हुन्छ । यसरी प्रस्तुत विवाद ठगीको नभई दुई पक्षबिचको करारनामाबमोजिम स्थापित लेनदेनको विबादको रूपमा विचार गरी न्याय निरूपण गर्नुपर्ने अवस्थाको देखिँदा पुनरावेदन अदालत हेटौंडाले गरेको फैसलामा अन्यथा गर्नुपर्ने नदेखिँदा यस अदालतबाट मिति २०७४/७/१६ मा प्रत्यर्थी झिकाउने आदेश गर्दा लिएका आधारहरू एवम् वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, दुई पक्षबिच भएको करारको लिखतको आधारमा हस्तान्तरण गरिएको चेक खातामा पर्याप्त रकम नभएको कारणले फिर्ता भएको विषय ठगीको प्राबधानअन्तर्गत नसमेटिने भनी प्रतिवादीलाई ठगी गरेको ठहर गरी सजायसमेत गरेको सुरू पर्सा जिल्ला अदालतको मिति २०६९/१०/२८ मा भएको फैसला नमिलेको भनी उल्टी गरी प्रतिवादी नन्दकिशोर कलवारले आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने र प्रस्तुत विषय जाहेरवाला र प्रतिवादीबिचको करारीय लेनदेनको कुरा भई विनिमय आधिकारपत्र ऐन, २०३४ को दफा १०७क. को प्रावधानअन्तर्गतको देखिएको र उक्त विषय सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को अनुसूची १ वा २ अन्तर्गतको नदेखिएकोले सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम सम्बन्धित सरोकारवालालाई म्याद सूचना दिई झिकाई उपस्थित भई निजले सकार गरे वादी पक्ष कायम गरी यसै मिसिलबाट कारबाही र किनारा गर्नु भनी पुनरावेदन अदालत हेटौंडाले मिति २०७१/३/२५ मा गरेको फैसला कानूनसम्मत मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत : भीमप्रसाद सुवेदी

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७८ साल चैत्र २ गते रोज ४ शुभम्।

५७

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७१-CR-०८०५, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, नेपाल सरकार वि. लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठसमेत*

प्रतिवादीहरू कुमार भन्ने लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठ र संगिता भन्ने कृष्णकुमारी राई (सेन्दाङ) लाई अभियोग माग दाबीबमोजिम सजाय गरी पीडिताहरूलाई क्षतिपूर्तिसमेत भराउने गरी भएको सुरू ताप्लेजुङ जिल्ला अदालतको फैसला बदर गरी पुनरावेदन अदालत इलामले प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीभन्दा घटी सजाय गरी पीडिताहरूलाई क्षतिपूर्तिसमेत नभराउने गरी भएको फैसला त्रुटिपूर्ण भएकोले सो हदसम्म उक्त फैसला बदर गरी प्रतिवादीहरूलाई अभियोग माग दाबीअनुसार सजाय गरी पीडिताहरूलाई क्षतिपूर्तिसमेत भराइपाउँ भन्ने बेहोराको वादी नेपाल सरकारको जिकिरका सम्बन्धमा विचार गर्दा, परिवर्तित नाम पीडिता "ए" (ग) लाई निजको घरबाट प्रतिवादी कृष्णकुमारी राईले अन्यत्र

लैजाने प्रयास गरे पनि अन्यत्र लैजान सफल नभएको अवस्थामा पीडिता "ए"(ग) को हकमा कृष्णकुमारी राईउपर अभियोजन पक्षले छुट्टै अभियोग पत्र पेस नगरी पृथक्-पृथक् वारदात र कसुरका विषयमा एउटै अभियोग दाबीमा समावेश गरी सो अभियोग दाबीलाई नै स्वीकार गरी सुरू अदालतबाट परिवर्तित नाम पीडिता "ए"(ग) को वारदात विषयमा समेत प्रतिवादी कृष्णकुमारी राईलाई कसुरदार कायम गरी सजाय गरेको सुरू फैसला कानूनसम्मत मान्न सकिएन भनी तथा पीडिताहरूको संयुक्त किटानी जाहेरी र निजहरूको बयान एवम् सोहीअनुरूपको बकपत्र, वस्तुस्थिति मुचुल्काका व्यक्तिहरूको बकपत्रलगायतका मिसिल संलग्न अन्य कागज, प्रमाणसमेत र प्रतिवादीहरूको अधिकार प्राप्त अधिकारीसमक्षको कसुरमा साबित भई गरेको बयानबाट प्रतिवादी कुमार भन्ने लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठले प्रतिवादी संगिता भन्ने कृष्णकुमारी श्रेष्ठको सहयोगबाट पीडिताहरू "ए"(क) र "ए"(ख) लाई निजहरूको घरबाट विवाह गर्ने बहानामा ललाइ फकाइ अन्यत्र स्थानमा लैजाने, राख्ने लगायतका मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४(२)(ख) अन्तर्गतको कसुर गरेको स्थापीत भएकोले प्रतिवादी कुमार भन्ने लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठलाई ऐ. ऐनको दफा १५(१)(छ) बमोजिम र प्रतिवादी संगीता भन्ने कृष्णकुमारी राईले उल्लिखित आपराधिक कार्यमा सहयोगात्मक भूमिका निर्वाह गरी मतियारको कसुर गरेकोमा निजलाई ऐ. ऐनको दफा १५(१)(ज) बमोजिम सजाय गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत इलामको फैसला ऐ. ऐनको दफा १५ (१) को देहाय (ङ) को खण्ड (१) र (२) को अवस्था नदेखिएको भनी ऐजनको दफा १५ (१) को देहाय (छ) बमोजिमको कैद भई जरिवाना नहुने भएकोले ऐ. ऐनको दफा १७ बमोजिम पीडिताहरूलाई क्षतिपूर्ति भराउनु नपर्ने हुँदा कानूनसम्मत मिलेकै देखिन्छ । यस दृष्टिकोणबाट निजहरूको हकमा अभियोग माग दाबीबमोजिम नै सजाय गरिपाउँ भन्ने नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन । यसैगरी प्रतिवादी कुमार भन्ने लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठले अर्की प्रतिवादी संगीता भन्ने कृष्णकुमारी राई (सेन्दाङ) को सहयोगमा पीडिताहरूलाई विवाह गर्ने र भारत घुम्न जाने लोभ र बहानामा निजहरूको अभिभावकहरूको मन्जुरीबिना निजहरूको घरबाट नेपालभित्रकै एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा लगी राखेको देखिएको अवस्थामा निजले कसुरबाट सफाइपाउँ भनी लिएको पुनरावेदन जिकिर खम्बिर हुन नसक्दा निजले लिएको पुनरावेदन जिकिरसँग समेत सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, पीडिताहरू परिवर्तित नाम "ए"(क), "ए"(ख) र "ए"(ग) लाई नेपालकै एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा ओसारपसार गरेकोमा प्रतिवादी कुमार भन्ने लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठलाई मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १५ को उपदफा (१) को देहाय (ङ)(२) बमोजिम १० (दस) वर्ष कैद र रू. १, ००, ०००।- (एक लाख) जरिवाना र पीडिता "ए"(क) लाई पहिलो पटक र पीडिता "ए"(ख) लाई दोस्रो पटक लगी कसुर गरेकाले सोही ऐनको दफा १५(५) बमोजिम थप २ वर्ष ६ महिना कैद र रू. २५, ०००।- जरिवानासमेत भई जम्मा १२ वर्ष ६ महिना कैद र रू. १, २५, ०००।- (एक लाख पच्चिस हजार) जरिवाना हुने गरी र अर्की प्रतिवादी संगिता भन्ने कृष्णकुमारी राई (सेन्दाङ) लाई परिवर्तित नाम पीडिता "ए"(क) र "ए"(ख) लाई लैजान प्रतिवादी लोकेन्द्रको मतियार देखिएकोले ऐ. ऐ. को दफा १५(१)(ज) अनुसार आधा सजाय ५ वर्ष कैद र रू. ५०, ०००।- (पचास हजार) जरिवाना हुने र पीडिता "ए"(ग) नाबालिगसमेत भएकाले ऐ. ऐनको दफा १५(१)(ङ)(२) बमोजिम ११ (एघार) वर्ष कैद र रू. १, ००, ०००।- (एक लाख) जरिवाना गरी जम्मा १६ (सोह्र) वर्ष कैद र रू. १, ५०, ०००।- (एक लाख पचास हजार) जरिवाना हुन्छ । क्षतिपूर्ति सम्बन्धमा ऐ. को दफा १७ बमोजिम दुवै प्रतिवादीबाट जनही रू. ५०, ०००।- गरी तीनै जना पीडिताहरूले क्षतिपूर्ति पाउने र ऐ. दफा २२ बमोजिम

निज प्रतिवादीहरूलाई नैतिक पतन देखिने फौजदारी कसुरसमेत कायम हुने ठहर गरी ताप्लेजुङ जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।३।१२ मा भएको फैसला केही उल्टी गरी प्रतिवादी कुमार भन्ने लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठले मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४(२)(ख) को कसुर गरेकोले निज प्रतिवादी कुमार भन्ने लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठलाई ऐ. ऐनको दफा १५(१)(छ) बमोजिम ८ (आठ) वर्ष कैद र प्रतिवादी संगिता भन्ने कृष्णकुमारी राई (सेन्दाङ) लाई उल्लिखित कसुरको मतियारसम्म रहे भएको देखिएकोले निज प्रतिवादी लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठलाई भएको सजायको आधा ऐ. ऐनको दफा १५(१)(ज) बमोजिम ४ (चार) वर्ष कैद हुने ठहर्छ भन्नेसमेत बेहोराको पुनरावेदन अदालत इलामको मिति २०७१।३।३० को फैसला कानूनसम्मत मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ। अभियोग दाबीबाट सफाइ दिलाइपाउँ भन्ने पुनरावेदक/प्रतिवादी कुमार भन्ने लोकेन्द्रकुमार श्रेष्ठको पुनरावेदन जिकिर तथा अभियोग दाबीबमोजिम नै सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर समेत पुग्न नसक्ने।

इजलास अधिकृत (उप-सचिव) : ललित सापकोटा
कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन
इति संवत् २०७९ साल वैशाख ५ गते रोज २ शुभम्।

५८

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के. सी. र मा.न्या. श्री प्रकाशकुमार ढुंगाना,** *०७८-WH-०१७१, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, कल्पना माझी चौधरीको हकमा मनोजकुमार चौधरी वि. शान्ता निरौलासमेत*

रिट निवेदक कल्पना माझी चौधरी विरूद्ध जाहेरवाला शान्ता निरौलाको मिति २०७८।११।९ मा महानगरीय प्रहरी वृत्त नयाँबानेश्वरमा कानूनबमोजिम किटानी रूपमा जाहेरी परी अदालतबाट पक्रियागत रूपमा दुई पटक म्याद थप भई अनुसन्धानबाट प्राप्त रायबमोजिम मिति २०७८।१२।०८ मा अभियोजन निर्णय भई विशेष सरकारी वकील कार्यालय, काठमाडौंबाट उच्च अदालत पाटनसमक्ष अभियोगपत्र दायर भएको देखिन्छ। कानूनी प्रक्रियाबाट जाहेरी दर्खास्त दर्ता भएपछि अनुसन्धानको सन्दर्भमा कानूनद्वारा व्यवस्था गरिएको प्रक्रियाबमोजिम साधिकार निकायबाट म्याद थप भई निवेदकलाई थुनामा राखी मुद्दाको अनुसन्धान गर्न आदेश भएको देखिन्छ। निवेदकउपर उच्च अदालत पाटनसमक्ष अभियोगपत्र दायर भई बैंकिङ कसुरको मुद्दा विचाराधीन अवस्थामा रहेको पाइन्छ। यस अवस्थामा रिट अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत प्रस्तुत निवेदनका सन्दर्भमा मातहत अदालतमा विचाराधीन मुद्दाको अन्तरवस्तुमा प्रवेश गरी प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी विचाराधीन मुद्दा निरूपण गर्न असर पर्ने गरी आदेश जारी गर्नु उचित देखिँदैन। यसरी हेरियो भने नियमित अदालतको सुनुवाइ प्रक्रियामा अनुचित हस्तक्षेप गरेको हुन जान्छ। बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट निवेदनका सन्दर्भमा थुनाको कानूनी वैधतासम्म परीक्षण गरिने हो। मातहत अदालतमा विचाराधीन रहेका मुद्दाको तथ्य र प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी इन्साफ गरेको परिणाम आउने गरी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नु हामीले अख्तियार गरी आएको मान्यता, प्रणाली वा अवधारणा प्रतिकूल हुन जाने।

मातहत अदालतमा विचाराधीन मुद्दामा सक्षम अदालतले न्यायिक प्रक्रियाअनुसार मुद्दाको सुनुवाइ हुँदाको अवस्थामा आरोपित कसुरको सम्बन्धमा प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी न्याय निरूपण गर्ने नै हुँदा कानूनबमोजिम अनुसन्धानको लागि साधिकार निकायबाट म्याद थप भई थुनामा राखेको कुरामा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नु न्यायोचित हुँदैन। प्रस्तुत विवादको सन्दर्भमा निवेदकको थुना गैरकानूनी, बदनियतपूर्ण वा अनधिकृत हो भन्ने नदेखिएको र उक्त थुनालाई गम्भीर अन्यायपूर्ण परिणाम पैदा हुने प्रकृतिको कानून प्रतिकूलको थुना मान्न सकिने अवस्थासमेत नभएको हुँदा निवेदकको मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्न

मिल्ने नदेखिने।

तसर्थ, निवेदकलाई गैरकानूनी तवरबाट थुनामा राखेको नभई मुद्दाको रोहमा अनुसन्धानको सिलसिलामा अदालतबाट भएको म्याद थपको आदेशबमोजिम थुनामा राखेको देखिएको हुँदा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्न मिलेन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृतः देवी चौधरी

कम्प्युटरः अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७८ साल चैत्र १० गते रोज ५ शुभम्

५९

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के. सी. र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७८-WO-०२५९, उत्प्रेषणयुक्त परमादेशसमेत, टंकलाल कायस्थ वि. महानगरीय प्रहरी वृत्त, अपराध अनुसन्धान तथा कारबाही शाखा महाराजगञ्ज, काठमाडौं*

प्रतिवादीउपरको बैंकिङ कसुर मुद्दामा उच्च अदालत, पाटनबाट मिति २०७६।११।१३ गते फैसला हुँदा जाहेरवालाले प्रतिवादी यी निवेदकबाट बिगो रू. २७ लाख पचास हजार भराई लिन पाउने, बिगो बरावर जरिवाना हुनेसमेत फैसला भएकोमा यी निवेदकले जाहेरवालालाई रकम भुक्तानी गरिसकेको पुष्टि हुने कुनै भुक्तानी प्रमाण कागजात पेस गर्न सकेको देखिँदैन । बैंक तथा वित्तीय संस्थासम्बन्धी ऐन, २०७३ को दफा ११० मा कुनै कसुर अनुसन्धानको सिलसिलामा अधिकार प्राप्त अधिकारीले राष्ट्र बैंकसमक्ष अनुरोध गरेमा कुनै बैंक वा वित्तीय संस्थामा रहेको खाताबाट कुनै व्यक्ति, फर्म, कम्पनी वा संस्थाको नाममा कुनै पनि किसिमले भुक्तानी दिन वा रकमान्तर गर्न नपाउने गरी खाता रोक्का राख्न यस बैंकले सम्बन्धित बैंक वा वित्तीय संस्थालाई कुनै पनि बखत निर्देशन दिन सक्ने छ भन्ने प्रष्ट कानूनी व्यवस्था रहेको छ । निवेदकले आफूलाई बैंकिङ कसुरमा लागेको आरोप र दाबीबमोजिम रकम पनि नतिर्ने र रकम नतिरी आफ्नो बैंक खाता पनि फुकुवा गरिपाउँ भन्ने जिकिर लिन नमिल्ने हुँदा बैंकिङ कसुरमा रकम तिर्ने व्यक्ति रहेको परिप्रेक्ष्यमा बैंकिङ कसुर मुद्दाको अनुसन्धानको सिलसिलामा अधिकार प्राप्त अधिकारीद्वारा निवेदकको बैंक खाता रोक्का राखिएको कार्य कानूनसम्मत देखिने।

बैंकिङ कसुर मुद्दाको अनुसन्धानको सिलसिलामा बैंक खाता रोक्का राखेउपर फुकुवाको लागि यी रिट निवेदकले त्यसतर्फ कारबाही अगाडि बढाएको पनि देखिँदैन। बैंक खाता रोक्का राखेकोमा चित्त नबुझेमा तोकिएको अदालतसमक्ष निवेदन दिन सकिने वैकल्पिक उपचारको बाटो हुँदाहुँदै त्यसको अवलम्बन नगरी असाधारण अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत उपचार प्रदान गर्नुपर्ने स्थिति देखिन आउँदैन । अनुसन्धान सम्पन्न भई भएको निर्णयमा चित्त नबुझेमा निवेदकले कानूनी उपचारको बाटो अवलम्बन गर्न सक्ने नै देखिँदा रोक्का रहेको बैंक खाता फुकुवा गरिपाउँ भन्ने प्रस्तुत रिट निवेदनको जिकिर कानूनसम्मत नदेखिएकोले मुद्दाको काम कारबाहीलाई असर पर्ने गरी रिट क्षेत्रबाट बोल्न मिल्ने नहुँदासमेत निवेदन जिकिरबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत (उपसचिव) : सुरेश के. सी.

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७८ साल फागुन १६ गते रोज २ शुभम्।

६०

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के. सी. र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल,** *०७८-WO-०३१५, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, उदितकुमार ठाकुरसमेत वि. लोकसेवा आयोग केन्द्रीय कार्यालय, अनामनगर, काठमाडौंसमेत*

नेपालको संविधानको धारा ३०२ बमोजिम सङ्घीय निजामती सेवा तथा सरकारी सेवामा कार्यरत राष्ट्रसेवकलाई नेपाल सरकारले कुनै तहमा समायोजन गर्न कर्मचारी समायोजन ऐन, २०७५ जारी भएको, उक्त कर्मचारी समायोजन ऐन, २०७५ को दफा ३ बमोजिम कर्मचारी समायोजन गर्ने प्रयोजनका लागि सङ्घ,

प्रदेश र स्थानीय तहमा सेवा प्रवाहका लागि आवश्यक पर्ने सङ्गठन संरचना तथा दरबन्दी नेपाल सरकारले स्वीकृत गर्नुपर्ने व्यवस्थाबमोजिम सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय तहको सङ्गठन संरचना नेपाल सरकारबाट स्वीकृतसमेत भई सो स्वीकृत सङ्गठन संरचना र दरबन्दीभित्र सरकारी सेवाका कर्मचारीलाई सङ्घमा समायोजन गर्नुपर्दा ऐनको दफा ८(१) बमोजिम क्रमशः कार्यरत पदको जेष्ठता, कार्यरत पदभन्दा तल्लो श्रेणी वा तहको पदको जेष्ठता, उमेरको जेष्ठता जस्ता प्राथमिकताका आधारमा समायोजन गर्नुपर्ने र सोही दफाको उपदफा (२) बमोजिम प्रदेश वा स्थानीय तहका पदमा समायोजन गर्नुपर्दा क्रमशः कार्यरत पदको जेष्ठता, कार्यरत पदभन्दा तल्लो श्रेणी वा तहको पदको जेष्ठता, कर्मचारी हाल कार्यरत रहेको प्रदेश वा स्थानीय तह, हालको स्थायी बसोबासको ठेगाना, नागरिकताको प्रमाणपत्रमा उल्लिखित ठेगाना, उमेरको जेष्ठताका आधारमा समायोजन गर्नुपर्नेका साथै सो दफाको उपदफा (३) बमोजिम प्रदेश वा स्थानीय तहको सेवामा कर्मचारी समायोजन गर्दा सम्भव भएसम्म पति पत्नीलाई एकै जिल्लामा पर्ने गरी समायोजन गर्नुपर्ने व्यवस्थाका आधार र प्रक्रियाबमोजिम निवेदकहरूको प्रदेश तथा स्थानीय तहको कार्यालयमा समायोजन भएको देखिन्छ । सङ्घमा दरबन्दी रिक्त भएसम्म प्रदेश वा स्थानीय तहमा समायोजन हुन नसक्ने हो भने प्रदेश र स्थानीय तहमा सेवा सञ्चालनमा बाधा व्यवधान उत्पन्न हुन सक्ने कुरालाई नकार्न सकिँदैन । निवेदकहरूको प्रदेश वा स्थानीय तहमा समायोजन भएपनि सेवा सर्त प्रतिकूल देखिँदैन । संविधान बमोजिमको संङ्घीयता कार्यान्वयनका लागि गरिएको कर्मचारी समायोजन प्रक्रिया नै अवरूद्ध हुने गरी दायर गरिएको रिट निवेदनको मूल दाबी कानूनसम्मत मान्न नमिल्ने।

यस्तै प्रकृतिको यस अदालतमा चलेको निवेदक अनमोल भट्टराईसमेत वि. नेपाल सरकार, लोक सेवा आयोग, केन्द्रीय कार्यालयसमेत भएको ०७८-DP-०१६३ समेतका उत्प्रेषण रिट निवेदनहरूमा यसै अदालत पूर्ण इजलासबाट मिति २०७८।१०।१२ मा निर्णय हुँदा “नयाँ संविधानले राजनीतिक, आर्थिक, प्रशासनिकलगायतको राज्य शक्तिलाई प्रदेश र स्थानीय तहसम्म निक्षेपिकरण गरेको र सोको समुचित प्रयोगको निमित्त स्थापित प्रादेशिक र स्थानीय सरकार सञ्चालन गर्न संविधानबमोजिम सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय सेवा गठन नभइसकेको अवस्थामा प्रशासकीय संक्रमणकालीन व्यवस्थापनका रूपमा संविधानको धारा ३०२ बमोजिम तत्काल बहाल रहेका सरकारी कर्मचारीहरूलाई सङ्घ, प्रदेश र स्थानीयमध्ये कुनै एक सेवामा समायोजन गरिनुपर्ने संवैधानिक अपरिहार्यता देखिन्छ । यस क्रममा कर्मचारी समायोजन ऐन, २०७५ जारी भएको र प्रत्यर्थी सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयले सोही ऐनले नि:सृत गरेको अख्तियारी एवम् निर्धारण गरेको प्रक्रिया र कार्यविधि अवलम्बन गरी निवेदकहरूसमेतका राष्ट्रसेवक कर्मचारीहरूलाई सङ्घ, प्रदेश र स्थानीय सेवामा समायोजन गर्ने निर्णय गरेको देखिन आयो । यसरी गरिएको निर्णय नेपालको संविधान, अन्य प्रचलित कानून तथा यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको प्रतिकूल देखिन नआएको, समायोजन पक्रियामा निवेदकहरूउपर स्वेच्छाचारी तवरले अनुचित भेदभाव गरेको स्थिति नदेखिएको र निवेदन मागबमोजिम समायोजनको निर्णय बदर गर्दा सङ्घीयता कार्यान्वयनसम्बन्धी संवैधानिक सुसञ्चालनमा उत्पन्न हुने अव्यवस्था समेतका विहङ्गम पक्षलाई दृष्टिगोचर गर्दा निवेदन मागबमोजिम निवेदकहरूलाई प्रदेश र स्थानीय तहमा गरेको समायोजनको निर्णय बदर गरी सङ्घको पदमा समायोजन गर्नु भनी उत्प्रेषण परमादेशको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता देखिएन ।” भनी निर्णयसमेत भएको पाइने।

तसर्थ, हामीभन्दा पछि नियुक्त भएका कर्मचारीलाई सङ्घमा राख्न, दरबन्दी लुकाई

हामीलाई स्थानीय तहमा समायोजन गरिएकोले सङ्घीय मामिला तथा सामान्य प्रशासन मन्त्रालयको मिति २०७६।०३।१६ को समायोजन गर्नेसम्बन्धी निर्णयसहित लोकसेवा आयोगबाट मिति २०७६।८।२५ र मिति २०७७।८।२४ को विज्ञापनमा जम्मा ७९३ सिटमा पदपूर्ति गर्न निकालिएको विज्ञापनको सूचनासमेतका सम्पूर्ण निर्णयहरू उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरी हामीलाई सङ्घमा समायोजन गराई बाँकी रहेको दरबन्दीमा मात्र पदपूर्ति गराइपाउँ भन्ने निवेदन मागबमोजिमको उत्प्रेषण एवम् परमादेशको आदेश जारी हुन सक्ने देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत (उपसचिव) : सुरेश के. सी.

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७८ साल फाल्गुण १६ गते रोज २ शुभम् ।

## इजलास नं. ११

### ६१

**मा.न्या.श्री पुरूषोत्तम भण्डारी र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ,** *०६९-WO-१०२४, उत्प्रेषण, पवनकुमार श्रेष्ठ वि. सशस्त्र प्रहरी बल प्रधान कार्यालय, स्वयम्भु हलचोक, काठमाडौंसमेत*

निवेदकले सेवाभित्र कार्यरत रहेको अवस्थामा यसअघि पनि पटक-पटक कानून विपरीतका कार्य गरेको भनी दुई वर्षसम्म बढुवा रोक्का राख्नेसमेतको निर्णय भइसकेको भन्ने मिसिलबाट देखिन आएको साथै प्रस्तुत विवादमा पनि प्रहरी कर्मचारी भएर पनि चोरी जस्तो कार्यमा संलग्न भएको भन्ने मिसिल संलग्न प्रमाण कागजातबाट स्पष्ट देखिएकोले सोको आधारमा निजउपर विभागीय कारबाही प्रारम्भ भई निजबाट स्पष्टीकरणसमेत माग भएकोमा निजले चित्त बुझ्दो जवाफ दिन नसकेको अवस्थामा यस्तो किसिमको आचरण र अनुशासनहीन काम गरेको भनी निजलाई सशस्त्र प्रहरी नियमावली, २०६० को नियम ८८ को अनुसूचीले दिएको अधिकार प्रयोग गरी ऐ. नियमावलीको नियम ८४(ख)(१) बमोजिम भविष्यमा सरकारी नोकरीको निमित्त सामान्यत: अयोग्य नठहरिने गरी नोकरीबाट हटाउने गरी सशस्त्र प्रहरी उपरीक्षकबाट भएको सुरू निर्णयउपर सशस्त्र प्रहरी नायब महानिरीक्षकसमक्ष पुनरावेदन दिन सकिने र निजबाट भएको निर्णय नै अन्तिम हुने कानूनी व्यवस्था रहे भएको देखिएकोले यी निवेदकलाई नोकरीबाट हटाउने गरी भएको उक्त निर्णय कानूनसम्मत नै देखिएकोले उक्त निर्णय उत्प्रेषणको आधारमा बदर गर्न मिल्ने नदेखिने ।

अतः निवेदकलाई कानूनबमोजिम प्रक्रिया पुऱ्याई नोकरीबाट हटाइएको देखिँदा निजको कुनै संवैधानिक एवम् कानूनी हक हनन भएको भनी मान्न मिल्ने नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिमको उत्प्रेषणको जारी गरिरहनु परेन । निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत:- मुना अधिकारी ढकाल, मानबहादुर विष्ट

कम्प्युटर - मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७६ साल फागुन १८ गते रोज २ शुभम् ।

### ६२

**मा.न्या.श्री पुरूषोत्तम भण्डारी र मा.न्या. श्री सुष्मालता माथेमा,** *०७६-WH-०२७३, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, अम्बिका थापा वि. महानगरीय प्रहरी वृत्त, कालिमाटी, काठमाडौंसमेत*

निवेदक मदन चपाईलाई के कुन आधारबाट पक्राउ गरको हो प्रस्ट कारण नखुलेको, के कस्तो अभद्र व्यवहार गरेको नखुलेको, म्याद थप माग गर्दा थुनामै राखी अनुसन्धान गर्नुपर्ने कारण नखुलेको, कानूनबमोजिम प्रक्रिया पुऱ्याई म्याद थप गरी थुनामा राखेको नदेखिएको, म्याद थप गर्दा आधार र कारण खुलाउनु पर्नेमा कुनै मनासिब आधार र कारण खुलाएको नदेखिएको, निवेदकलाई कथित अभद्र

व्यवहारको कसुर देखाई प्रबृत्त धारणा राखी बन्दी बनाएको देखिएको हुँदा सो थुना गैरकानूनी देखिएकाले निवेदक मदन चपाईलाई तत्काल थुना-मुक्त गर्नु भनी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने ठहर्ने।

इजलास अधिकृत:- बिना गौतम

कम्प्युटर अपरेटर:- मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७६ साल फाल्गुण १४ गते रोज ४ शुभम्।

६३

**मा.न्या.श्री पुरूषोत्तम भण्डारी र मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा,** ०७२-CI-१३३९, अंश चलन, हरिकुमार राई वि. सरस्वती राई

मिसिल संलग्न कागज प्रमाणहरूबाट एकातर्फ, विपक्षी सरस्वती राई तथा निजका छोराछोरीको नाउँमा कुनै चल अचल सम्पत्ति भएको तथा निजहरूको अन्य आयस्रोत भएको भन्ने देखिँदैन। यसबाट उक्त परिवारको भरणपोषणलगायतका जीविकोपार्जन उक्त परिवारको मूल व्यक्ति निवेदक हरिकुमार राईमा नै निर्भर रहेको भन्ने देखिन्छ । अर्कोतर्फ, मूल अंशियारको रूपमा रहेका निवेदकले आफ्ना श्रीमती तथा छोराछोरी विरूद्ध नै अंशचलन मुद्दा दर्ता गराई पारिवारिक तथा कानूनी दायित्त्वबाट विमुख हुन खोजेको भन्ने देखिन आयो । यस्तो परिस्थितिमा तत्कालीन मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको महलको १ नं. को कानूनी व्यवस्थाको आधारमा आफ्नो भाग अंश छुट्याइपाउँ भन्ने निवेदन दाबी तथा पुनरावेदन जिकिरलाई सोही महलको १० नं. को कानूनी व्यवस्थासमेतको सापेक्षतामा व्याख्या गर्नु आवश्यक देखिने।

तसर्थ, मूल अंशियारसँग अंश माग्ने बहानामा आर्थिक हैसियत तथा इज्जत आमद अनुसार आफ्नी श्रीमती तथा छोराछोरीको भरण पोषण गर्नुपर्ने पारिवारिक तथा कानूनी दायित्व भएका परिवारको मूल व्यक्ति पति तथा पिताकोले छुट्टिन नचाहने श्रीमती तथा छोराछोरीसमेतबाट अंश छुट्याई लिनपाउँ भनी आफ्ना आश्रित परिवारलाई समेत प्रतिवादी बनाई पारिवारिक तथा कानूनी दायित्वबाट विमुख हुन खोज्नु पारिवारिक न्यायको दृष्टिकोणबाट समेत न्यायोचित हुने नदेखिँदा वादी हरि कुमार राई र प्रतिवादीहरू एकासगोलमै यथावत् कायम रहने ठहर्छ भनी पुनरावेदन अदालतबाट भएको फैसला अन्यथा नदेखिने।

अतः माथिका प्रकरणहरूमा विवेचित मुद्दाको तथ्य, कानूनी व्यवस्था र प्रमाणहरूसमेतको आधार कारणबाट विवाह खर्च पर सारी जम्मा सम्पत्तिलाई ७ भागको १ भाग लगाई सोको हुने १ भागबाट पुन: अविवाहितहरूको विवाह खर्च पर सारी ४ भाग लगाई १ भाग अंश वादीले छुट्याइ लिन पाउने ठहऱ्याई सुरू सुनसरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।०६।०९ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा सो हदसम्म केही उल्टी भई वादी हरि कुमार राई र पुनरावेदक प्रतिवादीहरू एकासगोलमै यथावत् कायम रहने ठहरी पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट मिति २०७२।०२।१३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः- हेमा पाण्डे

कम्प्युटर: राधिका घोरासाईने

इति संवत् २०७६ साल फाल्गुण २८ गते रोज ४ शुभम्।

## इजलास नं. १२

६४

**मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान र मा.न्या.श्री कुमार चुडाल,** *०७४-CI-०२२०, निर्णय दर्ता बदर दर्ता, सुभाषसिं तामाङ वि. रूपादेवी श्रेष्ठ*

वादीको कि.नं. २४९ र २५० निजले कृष्णबहादुर लामाबाट खरिद गरी लिएको मिसिल संलग्न राजीनामाको प्रतिलिपिबाट देखिन्छ। वादीले कि.नं. २४९ को जग्गा प्लट मिलान गर्ने गरी लिएको भनेको ०-१-० जग्गासमेत नयाँ नापीमा कि.नं. ६ मा कायम भई नाप नक्सा भएको भनी दाबी गरेको देखिन्छ । निजले आफ्नो हकभोग चलनमा रहेको

भनेको उल्लिखित जग्गाहरूको हालसाबिक गर्न बाँकी रहेको वादीकै फिराद लेखबाट देखिन्छ । सो कारण वादीको जग्गाको परिमाण उजागर भएको अवस्था छैन । प्रतिवादीको साबिक कि.नं. ३४३ को ०-७-० क्षेत्रफल जग्गाको नयाँ नापीअनुसार कि.नं. २९६ मा १४४. ४३ व. मि. र कि.नं. ३०८ मा ६२. २५ व. मि. गरी जम्मा २०६. ६८ अर्थात् ०-६-२ कायम हुने गरी अर्थात् प्रतिवादीको साबिक क्षेत्रफलभन्दा घटी कायम हुने गरी मिति २०७०।११।११ मा हालसाबिकको निर्णय भएको मालपोत कार्यालयको निर्णय मिसिलबाट देखिन्छ । मालपोतको हालसाबिक निर्णयबमोजिम साबिक कि.नं. २९६ बाट हाल कि.नं. ३०८ को जग्गाको प्रतिवादीको नाममा स्रेस्तासमेत कायम भई बसेको देखिँदा सो कि.नं. ३०८ को ६२. २५ व. मि. जग्गामा वादीको दाबीअनुसारको हकभोगको हो भनी मान्न नमिल्ने।

प्रत्यर्थी प्रतिवादीको साबिक कि.नं. ३४३ को सर्भे कि.नं. २९६ को क्षे. फ. ०-७-० भन्दा बढी हुने गरी कायम कि.नं. ३०८ को प्रत्यर्थी प्रतिवादीको क्षेत्रफल कायम गरेको नभई सोभन्दा घटी ०-६-२ मात्र कायम गर्ने गरी मालपोत कार्यालय चावहिलबाट मिति २०७०।११।११ मा निर्णय भई सो निर्णयको आधारमा दर्तासमेत भएको देखिन्छ । जहाँसम्म पुनरावेदक वादीलाई नबुझी प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्त विपरीत मालपोत कार्यालयले निर्णय गरेको भन्ने जिकिर रहेको देखिन्छ त्यसतर्फ हेर्दा, फिरादीको सर्भे नापीपूर्वका जग्गाहरूको फिरादीले हालसाबिक नगराएको र वादीले फिरादमा आफ्नो जग्गाको क्षेत्रफल नै खुलाएको देखिँदैन भने कृष्णबहादुर लामाबाट प्लट मिलान गर्न ज. वि. ०-१-० जग्गा प्राप्त गरेको भन्ने पुनरावेदक/ वादीको भनाइ कानूनतः पुष्टि हुन नसकेको र प्रत्यर्थी प्रतिवादीको साबिक कि.नं. ३४३ हाल सर्भे कि.नं. २९६ मा ०-७-० जग्गा भएको तथ्यमा विवाद नभएको र प्रत्यर्थी प्रतिवादीको हाल कायम कि.नं. ३०८ मा साबिक स्रेस्ताभन्दा कम (०-६-२ मात्र) क्षेत्रफल कायम हुने गरी निर्णय भएको देखिएको स्थितिमा निवेदन जिकिरअनुसार मालपोत कार्यालयको मिति २०७०।११।११ को निर्णय बदर गरी पुनः दर्ताको कारबाही अगाडि बढाउँदा आउन सक्ने सम्भावित परिणाम र त्यस्तो कारबाहीबाट मुद्दाको अर्को पक्षले बेहोर्नुपर्ने हैरानीसमेतलाई दृष्टिगत गर्दा त्यस्तो गर्नु न्यायको रोहमा उक्तिसङ्गत हुने देखिन नआएकाले पुनरावेदक वादीको उक्त पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुने अवस्था रहेन । अत:एव मालपोत कार्यालय, चावहिलको मिति २०७०।११।११ को हाल साबिक निर्णय र सो निर्णयबमोजिम भएको दर्तासमेत बदर गरिपाउँ भन्ने वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहऱ्याएको सुरू फैसला सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७३।०१।०९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सो फैसला बदर गरी फिराद दाबीअनुसार गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

फिराद दाबी पुग्न नसक्ने ठहऱ्याएको सुरू काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७१।११।१९ को फैसला सदर हुने ठहऱ्याएको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७३ ।०१ ।०९ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत (उप-सचिव) : देवी चौधरी

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७९ साल असार २२ गते रोज ४ शुभम्

- यसै लगाउको ०७४-CI-०२२१, दृष्टिबन्धकी लिखत बदर दर्ता, सुभाषसिं तामाङ वि. रूपादेवी श्रेष्ठ भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ।

## एकल इजलास

६५

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई,** ०७६-WH-०४०२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, डम्बरबहादुर पाल वि.

दार्चुला जिल्ला अदालतसमेत

मुलुकी फौजदारी संहिता, २०७४ को दफा १३४(२) मा "... उपदफा (१) बमोजिम पुनरावेदन गर्न चाहने व्यक्तिले फैसला गर्ने अदालतको पुनरावेदन सुन्ने अदालतमा पुनरावेदन दर्ता गराउनुपर्ने छ" भन्ने व्यवस्था रहेको छ । सोही संहिताको दफा दफा १३५ मा "... पुनरावेदन गर्न चाहने व्यक्तिले फैसला गर्ने अदालतमार्फत वा त्यस्तो फैसलाबाट कसुरदार ठहरिएको व्यक्ति कैदमा रहेको भए कैदमा रहेको कारागारमार्फत पनि पुनरावेदन गर्न सक्ने छ" भन्ने व्यवस्था रहेको पाइन्छ। मिति २०७६।६।६ मा यी निवेदक प्रतिवादी डम्बरबहादुर पालले रीतपूर्वक पुनरावेदनको म्याद बुझेपछि निजले सो कारागारमार्फत पनि उच्च अदालत दिपायल महेन्द्रनगर इजलासमा पुनरावेदन गर्न सक्ने स्थिति रहेकोमा निजले कानूनद्वारा प्रदत्त सो साधारण क्षेत्राधिकारको मार्गको अवलम्बन नगरी पुनरावेदन गर्ने म्यादसमेत गुजारी, म्याद तामेल भएको करिब ९ महिनापछि मिति २०७७।०३।१७ मा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदनमार्फत यस अदालतमा प्रवेश गरेको देखिने।

प्रस्तुत रिट निवेदनमा पनि यी निवेदक प्रतिवादी डम्बरबहादुर पालले सुरू दार्चुला जिल्ला अदालतबाट जबरजस्ती करणी मुद्दामा आफूलाई भएको कैद तथा जरिवानामा चित्त नबुझेमा कानूनका म्यादभित्र उच्च अदालत दिपायल महेन्द्रनगर इजलासमा पुनरावेदन गर्नुपर्नेमा साधारण क्षेत्राधिकार अन्तर्गत आफूलाई प्राप्त अधिकारको अवलम्बन नगरी, रीतपूर्वक तामेल भएको पुनरावेदनको म्यादसमेत गुजारी, म्याद तामेल भएको करिव ९ महिनापश्चात् यस अदालतमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको माध्यमबाट प्रवेश गरेको देखियो । यसरी दार्चुला जिल्ला अदालतबाट मिसिलमा उपलब्ध प्रमाणहरूको विवेचना भई फैसला भएको र सो फैसला अन्तिम भई बसेको साथै उक्त फैसलाबमोजिम नै थुनामा रहेका यी निवेदकको थुनालाई गैरकानूनी थुना भनी मान्न मिल्ने नदेखिँदा निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था देखिएन । प्रारम्भिक अवस्थामा नै विपक्षीहरूबाट यी निवेदकउपर कुनै गैरकानूनी कार्य भए गरेको नदेखिँदा विपक्षीहरूबाट लिखित जवाफसमेत मगाइरहनु परेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: विष्णुप्रसाद पौडेल

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७७ साल असोज ४ गते रोज १ शुभम्।

६६

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा,** *०७४-WO-०९३२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, विजयशंकरप्रसाद साहसमेत वि. उच्च अदालत पाटनसमेत*

प्रत्यर्थी / वादी आशिका साहले डा. विजय शंकर प्रसाद साहसमेतउपर दायर गरेको घरेलु हिंसा मुद्दामा काठमाडौं शंखमुलको डेरामा आई रिट निवेदकहरूले घरेलु हिंसा गरेको भनी उल्लेख गरेकोसमेत देखिन्छ। घरेलु हिंसाको जरियाबाट अंश चलन, सम्बन्ध विच्छेद र माना चामल मुद्दाहरूको उठान गरिरहेको र काठमाडौं जिल्ला अदालतको क्षेत्राधिकारभित्र रहेको उक्त घरेलु हिंसा मुद्दामा वारदात भएको भनिएको स्थानमा सत्यतथ्य एवम् प्रमाण बुझ्नुपर्ने अवस्था रहेको देखिन्छ। यसरी सम्बन्ध विच्छेदसमेत माग गर्दा घरेलु हिंसालाई आधार बनाएको अवस्थामा न्यायमा पहुँचसमेतको दृष्टिकोणबाट मुद्दाहरू काठमाडौं जिल्ला अदालतको मुद्दा हेर्ने क्षेत्राधिकारभित्रको होइन भन्न सकिने कानूनी आधार नहुँदा मुलुकी ऐन, अ. बं. २९(२) बमोजिम काठमाडौं जिल्ला अदालतबाटै उक्त मुद्दा हेरिनुपर्ने देखियो। सो घरेलु हिंसा मुद्दाबाहेक अन्य मुद्दाहरू पनि लगाउको मुद्दा देखिँदा छुट्याइ हेर्नु उचित नदेखिने।

उक्त मुद्दाहरू काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट हेरी न्याय निरूपण गर्दा रिट निवेदकहरूको कानूनी अधिकारमा प्रतिकूल प्रभाव पर्ने अवस्थासमेत नदेखिँदा उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७५/०२/१७

मा भएको आदेश बेरीतको नदेखिएकोले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर अपरेटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७५ आषाढ ३ गते रोज १ शुभम्

६७

**मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा**, *०७४-WH-०१०७, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, Cuojiezhuoma को हकमा सविना तुलाधार वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत*

निवेदिकाले जिकिर लिएको भन्सार ऐन, २०६४ को दफा ४१मा नगद धरौटीमा छाड्न वा हिरासतमा राख्न सकिने भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ । यसैगरी उक्त दफा ४१ को उपदफा (१) मा "दफा ४० को उपदफा (३) बमोजिम पेस भएको व्यक्ति तत्काल प्राप्त प्रमाणबाट कसुरदार देखिएमा भन्सार अधिकृतले निजलाई यस ऐनबमोजिम हुनसक्ने कैद र जरिवानाबापतको रकम र बिगोसमेत असुल गर्नुपर्नेमा कायम हुन सक्ने बिगो बराबरको रकमसमेतको नगद धरौटी लिई तोकिदिएको समय र स्थानमा हाजिर हुने गरी छाड्न सक्ने छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखियो । उपर्युक्त कानूनी व्यवस्थाअनुसार तत्काल प्राप्त प्रमाणबाट कसुर देखिएमा भन्सार अधिकृतले निज कसुरदारलाई यस ऐनबमोजिम हुन सक्ने कैद र जरिवानाबापतको रकम र बिगोसमेत असुल गर्नुपर्नेमा कायम हुन सक्ने बिगो बराबरको रकमसमेतको नगद धरौटी लिई तोकी दिएको समय र स्थानमा हाजिर हुने गरी छाड्न सक्ने अधिकार भन्सार ऐन, २०६४ को दफा ४१ ले भन्सार अधिकृतलाई दिएको देखिन्छ । उक्त व्यवस्थाहरूमा नगद धरौटीमा छाड्न सक्ने छ भन्ने शब्दबाट यो बाध्यात्मक व्यवस्था नभई तत्काल प्राप्त प्रमाणको विश्वसनीय तथ्य अवस्था परिस्थिति एवम् औचित्यसमेत विचार गरी सम्बन्धित अधिकारीले छाड्न सक्ने अवस्था देखिने ।

मुलुकी ऐन, अ. बं. ११८ को देहाय (३) मा "नेपालमा स्थायी बसोबास नभएको कुनै अभियुक्त तत्काल प्राप्त प्रमाणबाट ६ महिना वा सोभन्दा बढी कैदको सजाय हुन सक्ने अपराधको कसुरदार हो भन्ने विश्वास गर्ने कुनै मनासिब आधार भएमा अड्डाले निजलाई थुनामा राखी मुद्दाको पुर्पक्ष गर्नुपर्छ" भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा मिति २०७४/०८/१८ गते एयर चाइना को उडान नं. CA ४३७ बाट काठमाडौं आएका चाइनिज राहदानी नं. E००१००९८६ बाहक चाइनिज नागरिक Cuojiezhuoma लाई त्रिभुवन अन्तर्राष्ट्रिय विमान स्थल भन्सार कार्यालयको आगमन कक्षमा चेक जाँच गर्ने क्रममा निजको ह्याण्ड ब्यागबाट २९९४ ग्रामको तौल भएको २ थान बिस्कुट आकारको सुन र ४ थान साधारण सुनको बाला बरामद भएको बरामदी मुचुल्का रहेकोमा विवाद देखिएन । सोही बेहोराको प्रमुख भन्सार अधिकृतको प्रतिवेदन पेस भई प्रतिवादी चिनियाँ नागरिक Cuojiezhuoma ले गरेको उक्त कार्य भन्सार ऐन, २०६४ को दफा ३८ बमोजिमको कसुर हुँदा बिगो रू. १, ४१, ९४, ५५४।– (एक करोड एकचालिस लाख चौरानब्बे हजार पाँच सय चवन्न) कायम गरी निज प्रतिवादी Cuojiezhuoma लाई सोही ऐनको दफा ५७ को उपदफा (१) को देहाय (घ) बमोजिम सजाय हुन र बरामद भएको सुन सोही ऐनको दफा ५७ बमोजिम जफत गरिपाउँ भनी वादी नेपाल सरकारको अभियोगपत्र काठमाडौं जिल्ला अदालतमा दर्ता भई यी प्रतिवादी विदेशी नागरिक भएकोले मुलुकी ऐन, अ. बं. ११८ को देहाय (३) नं. बमोजिम मुद्दा पुर्पक्षको लागि सम्बन्धित कारागार कार्यालयमा थुनामा राख्न पठाउने गरी आदेश भएकोमा सो आदेशउपर मुलुकी ऐन, अ. बं. १७ नं. बमोजिम बेरितको आदेश बदर गरिपाउँ भनी प्रतिवादीको उच्च अदालत पाटनमा निवेदन परी पेस हुँदा कैफियत माग भई काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७४/०९/०५ मा भएको आदेश बेरितको नदेखिँदा परिवर्तन गरिरहनु परेन भनी सदर भएको देखियो । यसर्थ यी निवेदकले सुरू अदालतले गरेको थुनछेक आदेशउपर माथिल्लो

तहको अदालतले रीत बेरित जाँची सुरू आदेश सदर भइसकेको र हाल मुद्दा सुरू अदालतमा विचाराधीन रही फैसला हुने अवस्थामा रहेकोमा यस अदालतको असाधारण अधिकारक्षेत्रमार्फत हस्तक्षेप गर्नुपर्ने अपरिहार्य अवस्था नदेखिने ।

अतः प्रस्तुत विषयमा काठमाडौं जिल्ला अदालतमा प्रतिवादीउपर सुन चोरी पैठारी मुद्दा दर्ता भई विचाराधीन अवस्थामा रहेको र निवेदनमा उठाएका आरोप, पेस भएका प्रमाण तथा भन्सार ऐन, २०६४ को दफा ४१ बमोजिमको अधिकार जिल्ला अदालतले प्रयोग गर्न पाउने वा नपाउने के हो भन्ने विषयमा सोही जिल्ला अदालतबाट निर्णय हुने नै हुँदा निवेदकको मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहनु परेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल
कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल
इति संवत् २०७५ आषाढ ३ गते रोज १ शुभम् ।

## ६८

**मा.न्या.श्री डम्बरबहादुर शाही ,** *०७५-WO-११७९, परमादेश, उमेश बानिया वि. न्याय परिषद्समेत*

न्याय परिषद् ऐन, २०७३ को उद्देश्यहरूमध्येको एक प्रमुख उद्देश्य उच्च अदालत र जिल्ला अदालतमा कार्यरत न्यायाधीशहरूले आफ्नो पदीय अनुशासन कायम राखेका छन् वा छैनन्, पदीय आचरणमा बसेका छन वा छैनन् भन्ने सम्बन्धमा परेका उजुरीको छानबिन गर्ने र छानबिनबाट दोषी देखिए कारबाही गर्ने तथा परिषद स्वयं आफैँले पनि यस्ता विषयमा छानबिन र कारबाही गर्न सक्ने अख्तियारी न्याय परिषद्लाई सो ऐनले नै दिएको छ । न्यायाधीश जस्तो गरिमामय पदधारक व्यक्तिउपर कारबाही अगाडि बढाउन ठोस र प्रमाणयुक्त आधार हुनु पर्दछ, केवल उजुरी र हल्लाको भरमा कारबाही हुने अवस्था नै रहँदैन । त्यसैले न्याय परिषद्ले परेका उजुरी उपर कारबाही अगाडि बढाउन सूक्ष्म तरिकाले छानबिन गर्दछ र छानबिनको प्रतिवेदनले ठोस र तथ्यपरक आधार देखाए कारबाही अगाडि बढाउने र सो आधार नदेखिए उजुरी तामेली राख्न सक्ने अधिकार न्याय परिषद् ऐन, २०७३ ले न्याय परिषद्लाई दिएको छ । निवेदकले आफ्नो निवेदनबमोजिम कारबाही नै भएन भनी जिकिर गरे पनि न्याय परिषद्ले निवेदकले दिएको उजुरी निवेदनमा छानबिन गरी छानबिन प्रतिवेदन न्याय परिषद्को पूर्ण बैठकमा पेस भई छानबिनबाट देखिएका आधार र कारणसमेतलाई हेरी न्याय परिषद्ले निर्णय गरेको देखिँदा निवेदन जिकिर र विद्वान् अधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ रिट निवेदकले न्याय परिषद्मा दिएको द.नं. १३० मिति २०७३।७।२९ को उजुरी निवेदनउपर छानबिन भइ छानबिन प्रतिवेदन न्याय परिषद्मा पेस भई न्याय परिषदबाट नेपालको संविधानको धारा १५३ को उपधारा (४), (५) र (६) तथा न्याय परिषद् ऐन, २०७३ को दफा १७, १८ तथा १९ बमोजिम कार्यबाही भएको देखिँदा प्रथम दृष्टिमा नै निवेदकको निवेदन मागको औचित्य समाप्त भइसकेको देखिएकोले विवादको विषयमा प्रवेश गरी विपक्षीहरूबाट लिखित जवाफ माग गरिरहनुपर्ने देखिएन । रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: ऋतबहादुर पुलामी मगर
कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल
इति संवत् २०७६ आषाढ २५ गते रोज ४ शुभम् ।

## ६९

**मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान,** *०७६-WO-०८५७, उत्प्रेषण, परमादेशलगायत उपयुक्त आदेश आज्ञा पुर्जी जारी गरिपाऊँ, रामसेवक महतो सुडी वि. उच्च अदालत जनकपुरसमेत*

निवेदकले यस रिट निवेदनमार्फत, धनुषा जिल्ला अदालतमा २०५१ सालको दे. नं. १२५५ को अंश मुद्दा दायर गर्ने फिरादी टीकाकुमारी चौधरी र मालपोत कार्यालय, धनुषामा मिति २०७१।१०।२८ मा दा. खा गरिपाउँ भन्ने टीकाकुमारी चौधरी एकै व्यक्ति नभई नवलपरासी जिल्ला, तमसरिया गा. वि.

स वडा नं. ४ को व्यक्तिले दिएको निवेदनको आधारमा कारबाही नगर्नु नगराउनु भन्ने निवेदकको मागतर्फ हेर्दा, जन्मदर्तासमेतका कार्य किर्ते जालसाजी गरेको भनी उर्मिलाकुमारी महतोले दायर गरको उजुरीमा मुद्दा नचलाउने गरी महान्यायाधिवक्ताले मिति २०६२।११।१६ मा गरेको निर्णय बदर गरीपाउँ भनी यसै अदालतमा निवेदन दायर गरेकोमा सोही मुद्दा अर्थात् वादी उर्मिलाकुमारी महतो विरूद्ध महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय, रामशाहपथ काठमाडौंसमेत भएको मुद्दा दर्ता नं. २०६५-WO-०९१७ को रिट निवेदन खारेज हुने ठहरी यस अदालतबाट फैसला भएको देखियो। साथै निवेदकले रिट निवेदनमा उठाएको विषयमा अथवा मुख्य विवादको निरूपण निवेदकले धनुषा जिल्ला अदालतमा दायर गरेको दा. खा. बदर दर्ता बदर दर्ता मुद्दामा प्रमाणबुझी प्रमाणको मूल्याङ्कन भई न्याय निरूपण हुने विषय रहेको र यस अदालतसमेतबाट भएको अंश मुद्दाको अन्तिम फैसलाको कार्यान्वयनलाई अवरोध पुऱ्याउनु फैसलाको अन्तिमताको सिद्धान्त (Principle of finality of judgement) र कानूनी शासन (Rule of Law) को सिद्धान्तसमेतको विपरीत हुन जाने हुन्छ। फैसला अन्तिमताको सिद्धान्तअनुसार *"कुनै सक्षम अदालत वा निकायबाट प्रमाणहरूको मूल्याङ्कन गरी फैसला अन्तिम भई बसेको फैसलालाई बदर नगरेसम्म सो फैसला कायम रहेको मान्नुपर्ने हुन्छ"*। यसै सन्दर्भमा "निर्णय अन्तिमताको सिद्धान्तअनुसार पनि अदालतबाट निरूपण भइसकेको विषयमा पटकपटक प्रश्न उठाउनु उचित मानिदैन। एउटै विषयलाई नयाँनयाँ रूप र आवरणमा अदालतमा प्रवेश गर्न दिइयो भने न्यायिक प्रक्रियाको दुरूपयोग हुने खतरा रहन्छ।यसलाई कानूनको शासनका दृष्टिले पनि उचित र वाञ्छित कुरा मान्न नसकिने ( ने.का.प. २०७५, अङ्क-२, नि. नं. ९९५९, ) भनी यस अदालतबाट सिद्धान्तसमेत प्रतिपादन भएको देखिन्छ। २० वर्षभन्दा बढी अवधि उक्त अंश मुद्दामा व्यतीत भइसकेको अवस्थामा अरू व्यवधान पैदा गर्दा अपेक्षित न्यायबाट मुद्दाका पक्षले वञ्चित हुनुपर्ने भएकाले निवेदन मागअनुसार फैसला कार्यान्वयनको कारबाही रोक्नु कदाचित उचित नठहर्ने हुँदा निवेदन दाबी कानूनसम्मत मान्न मिल्ने नदेखिने।

अतः यस अदालतको उक्त फैसलासमेतको आधारमा सुरू जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।०६।०५ मा भएको आदेश र सोलाई सदर गर्ने गरी उच्च अदालत जनकपुरबाट मिति २०७६।१।१२ मा भएको देखिन आएबाट त्यस्तो कानूनसम्मत आदेशबाट निवेदकको संवैधानिक एवम् कानूनी हक हनन् भएको भनी मान्न मिल्ने नदेखिएकोले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्छ। यसमा विपक्षीहरूबाट लिखित जवाफ मगाइरहन नपर्ने।

इजलास अधिकृत: सदिक्षा नेपाल

कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७६ साल फागुन २२ गते रोज ५ शुभम्।